प्रकाशक

श्रीलाल न० जोशी
मानद मंत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
रेल्वे क्वार्टिंग, कोटगेट
बीकानेर (राजस्थान)

भाग १ : अंक २
अपरैल : १९७३

बरस रो मोल १२·००
अेक अंक रो मोल ३·००

मुद्रक :
मॉडर्न प्रिन्टर्स, आगरा

सूचनिका

प्रकाशक

श्रीलाल न० जोशी
मानद मन्त्री
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
रेल्वे क्रासिंग, कोटगेट
बीकानेर (राजस्थान)

भाग १ : अंक २
अपरैल : १९७३

वरस रो मोल १२·००
अेक अंक रो मोल ३·००

मुद्रक :
मॉडर्न प्रिन्टर्स, आगरा



पृथ्वीराज नै प्रणाम !

—मनोहर शर्मा—

किणी दिन
बीकानेर में
सोनै रो सूरज ऊग्यो,
राजमहल में
सोनै रो थाळ बाज्यो,
पृथ्वी पर
पृथ्वीराज रो अवतरण हुयो ।

भारतमाता रो
ओ लाडलो सपूत
राजवंश सूं गौरवान्वित नीं हुयो,
जिण भांत
और घणा ही राजपूत
महिमावान हुया ।

इण महावीर
आप रै भुज-बळ सूं,
इण महापंडित
आप री ग्यान-साधना सूं,
इण परमभगत
आप री सेवा-पूजा सूं



पृथ्वीराज नै प्रणाम !

—मनोहर शर्मा—

किणी दिन
बीकानेर मे
सोनै रो सूरज ऊग्यो,
राजमहल मे
सोनै रो थाळ बाज्यो,
पृथ्वी पर
पृथ्वीराज रो अवतरण हुयो ।

भारतमाता रो
ओ लाडलो सपूत
राजवंश सूं गौरवान्वित भी हुयो,
जिण भांत
और घणा ही राजपूत
महिमावान हुया ।

इण महावीर
आप रै भुज-बळ सूं,
इण महापंडित
आप री ग्यान-साधना सूं,
इण परमभक्त
आप री सेवा-पूजा सूं



पृथ्वीराज नै प्रणाम !

—मनोहर शर्मा—

किणी दिन
बीकानेर में
सोनै रो सूरज ऊग्यो,
राजमहल मे
सोनै रो थाळ बाज्यो,
पृथ्वी पर
पृथ्वीराज रो अवतरण हुयो ।

भारतमाता रो
ओ लाडलो सपूत
राजवंश सूं गौरवान्वित नीं हुयो,
जिण भांत
और घणा ही राजपूत
महिमावान हुया ।

इण महावीर
आप रै भुज-बळ सूं,
इण महापंडित
आप री ग्यान-साधना सूं,
इण परमभक्त
आप री सेवा-पूजा सूं

गौरव ग्रहण करयो,
लोक-हिरदै में प्रतिष्ठा पायी,
गुण-गरिमा रो कीर्ति-मान थापित करयो ।
इण महामनीषी
श्रीकृष्ण-चरित्र रै पावन प्रकाश में
भारत री जनता नै
गीता रो अमर संदेश
फेरूं दियो ।

इण दिव्य पुरुष
आप रै मंत्र-बळ सूं
आरज-भोम में आपमतै
स्वाधीनता-सूरज नै
झळमळाट करतो राख्यो ।

राष्ट्रपति पृथ्वीराज री वाणी
हिमाचळ रो गौरव-गान है,
गंगा रो पावन गीत है,
रत्नाकर रो गंभीर घोष है,
भारती री वीणा रो दिव्य सुर है ।

भारती-भक्त पृथ्वीराज नै
प्रणाम !
बारंबार प्रणाम !

राजस्थानी रा समर्थ सेवक

श्री शिवचंद्रजी भरतिया

—सत्यनारायण स्वामी—

(१)

आधुनिक राजस्थानी साहित्य रै इतिहास मे श्री शिवचद्रजी भरतिया रो नांव सोनै रै आखरां में लिखीजसी । राजस्थानी रै आज रै साहित्य नै उणा अेक जबरदस्त मोड़ दियो । हिंदी-साहित्य रै समुत्थान और उण री श्रीवृद्धि मे जिको काम भारतेंदु हरिश्चद्र करयो ठीक बो ही काम राजस्थानी साहित्य मे भरतियाजी करयो । भरतियाजी आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा प्रथम महत्वपूर्ण साहित्यकार है ।

श्री शिवचद्रजी भरतिया रो जन्म विक्रमी सवत १९१० री चैत सुदि सातम रै दिन हुयो । 'फाटका-जजाळ' नाटक मे उणा आप रो परिचय इण भात दियो है—

'म्हारो जन्म वरिष्ठ वैश्यकुल मे हू अग्रवशी तथा ।
गोत्री सिंगल, बैंक छे भरतिया, 'विद्यानिवास' प्रथा ॥
('विद्यानिवास' जिण की पदवी छे)
दादा गगारामजी, जिण को पुण्य अपार ।
जाया सुत बळदेवजी, कीनो कुळ-विस्तार ॥१३॥
उण को सुत शिवचद्र है, कुळ मे शास्त्र-प्रवीन ।
कुळ की रीत सुधारवा, कीनो ग्रथ नवीन ॥१४॥

भरतियाजी च्यार भाई हा । च्यार भाया मे वै सगळा सू बडा हा । पिताजी री मृत्यु रै बाद उणा री सगळी सपत्ति छोटिया तीनू भाया आपस मे बाट ली और उणा रै हाथ की नही आयो । इण कारण उणा व्यापार करणो छोडनै वकालत करणी सरू करी । पण वकालत मे उणां रो जी नही लाग्यो और उणा इदौर मे सरकारी नौकरी कर ली ।

भरतियाजी आप रै जीवण मे घणा ही ताता-ऊना उतार-चढाव देख्या । वै मनमौजी जीव हा । पराधीन रैयनै किण रै ही साथै काम कोनी कर सकता । इण कारण वै ना तो अेक जाग्यां पूरी तरै टिकनै काम कर सकया और ना ही उणा कोई अेक ही तरै रो धधो करयो । जीवण मे उणा रै मोटो सग्राम रैयो ।

बजाय ऊपर पुरोणी पुंथियां मांहे पण अंग्रेजी दूध रै अठै दोरा मानी रहे, इण को अभिप्राय आप सदास ने नहीं कहै ?"

और भरतियाजी राजस्थानी समाज नै अंग्रेजी दूध सूं बारै काढण सारू बदर करी और आप भी कलम री आपणी ओर सूं उण रो मार्ग दरसण करण रो प्रयास करयो, परन्तु प्रयास करयो।

(२)

भरतियाजी री लिखोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी में ६, हिंदी में १७, मराठी में १३ और संस्कृत में ३ है। सं० १९६३ में प्रकाशित 'बुढापा की सगाई' नाटक रै छेहलै पृष्ठ रै विज्ञापन में उणां री रचित कृतियां रो विवरण इण प्रकार है—

'सिद्धेश्वरचरित्र (संस्कृत, मराठी), सीतापंचरत्नमालिका (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)— दूसरी बार छप रही है, कनकसुंदर (मारवाड़ी), प्रयाग-कुसुमावली गुच्छ १० (हिंदी), बुढापा की सगाई नाटक (मारवाड़ी), मांगरा की नंटी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राजारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) योगसाधन (हिंदी)।

लिखकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक (मराठी), अनुताप तीर्थ शतक (मराठी), आर्या लहरी (मराठी), विरहन पागुपन (हिंदी)।

तैयार हो रह्या छे—अब क्या करना चाहिए ? हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी; बोधदर्पण (मारवाड़ी)।

भरतियाजी री आखरी छप्योड़ी पोथी 'सूर्यपक्षविवेक' मिलै है जिकी उणां द्वारा आयोजित 'विचार-दर्शन' नाम रै अेक विसाल ग्रंथ रो अेक अंश है। उण रो विषय योग-विद्या और वेदांत सूं संबंधित है।

पुस्तक-लेखन कार्य रै अतिरिक्त उणां हिंदी पत्र 'वैश्योपकारक' रै संपादन में भी घणो सहयोग दियो। सामयिक समस्यावां पर उणां रा जिका विचार हा वै मोरळी कहाण्यां और निबंधां रै रूप में उण में नियमित रूप सूं प्रकाशित हुया हा।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनावां में 'कनक-सुंदर' नाम री कृति राजस्थानी भाषा रो पैलो उपन्यास है और भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकै है। उण रो पैलो भाग ही छप सक्यो, दूसरो भाग प्रकाश में नहीं आयो। ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी में चंद्रकांता-संतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी और जासूसी उपन्यासा रो बोलबालो हो। कनक-सुंदर सामाजिक उपन्यास है। इण में उण टैम रै मारवाड़ी समाज री कथा नै जिण सरस ढंग सूं प्रस्तुत करी है उण नै देखनै लोग घणा प्रभावित हुया। कनक और सुंदर इण उपन्यास रा नायक-नायिका है जिका रो प्रारंभिक जीवण ही पैलै भाग में आ पायो है। उपन्यास रो प्रारंभ इण भांत हुवै—"दोपहर को वसत। चारयां कानी लू चाल रही छे। हवा का जोर सूं वाळू अठी-की-उठीने उड-उडकर वी-का नवा-नवा टीबा हो रया छै, और भीजण भी रहृया छे। मुंह ऊंचो कर सामने चालणो मुस्कल छे। लू कपड़ा माहे बड़कर सारा सरीर ने सिकताय कर रही छे। धूप इसी जोर की पड रही छे के जमी ऊपर पग देणो

मुस्कल छे। रस्ता मांहे दूर-दूर कठेही झाड को नाव नहीं। बाळू उडकर जगा-जगा नग्ना टीबा होणे सू रास्ते को ठिकाणो नहीं। आदमी तो दूर, रास्ता माहे कोई जीव-जिनावर को भी दरसण नहीं। इसे वखत अेक जवान आदमी जिण की उमर सोळा-सत्रा वरस की थी, माथो कपड़ा सू बंध्यो हुवो, हुण-हुण करतो-करतो अजमेर कानी चल्यो आ रह्यो छे। रेती गरम होणे सूं पगा के धरका लागकर फोडा आ रह्या छे, तो भी जोर सू चाल रह्यो छे।"

उपन्यास में आपणे देश में व्याप्त फूट री जिकी कमजोरी ही उण तरफ भी भरतियाजी सकेत करण में कोनी चूक्या—"अपणा देश माहे थेंको नहीं जरा तो आपणी राज्यसत्ता पराया लोगा के हाथ गयी ········ देखकर सारा हाट बोल्या के आ तो 'फूट' छे। साहेब हसकर बोल्या के ओ इसो अनोखो फळ थारा देश माहे छे जरा तो म्हां लोगा को राज हुवो ; नहीं तो म्हांकी कांई मगदूर थी सू हजारा कोस पर आकर थांके ऊपर हुकूमत करता? इण माहे कांई छूट छे। इण फूट तो सारा देस को सत्यानाश कर दीनो।"

'केसर-विलास' (प्रकाशनकाळ संवत् १९५७) भरतियाजी री पैली राजस्थानी रचना और राजस्थानी रो पैलो नाटक है। इण आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी नाटक री स्वाभाविकता और यथार्थवादिता हिंदी रै पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी नै भी घणा प्रभावित करया। उणा 'सरस्वती' में लिख्यो—"रचना इसकी बहुत ही स्वाभाविक है। कहीं-कहीं पढ़ते समय, स्वाभाविकता का इतना आविर्भाव हो उठता है कि हम बात की विस्मृति हो जाती है कि यह कल्पित कथा पढ़ रहे हैं। [सरस्वती, अक्टूबर, १९०४, पृ० ३६८] इण नाटक में अणमेल व्याव री समस्या उठायी है। अणमेळ व्याव री बुराई बतायनै समाज नैं उण सू विमुख करणो ही इण रो उद्देश्य है।

और लगभग आ ही समस्या 'बुढापा की सगाई' नाटक (प्रकाशनकाळ संवत् १९६३) में उठायी है। भरतियाजी इण री भूमिका में लिख्यो है—"इण माहे स्त्रिया की स्वतन्त्रता की हद, बी का परिणाम, बुढापा माहे व्याव की इच्छा, बी को अविचार, सगाई, बी को बधन और बी बधन को परिणाम, इत्यादि सरळ मारवाडी बोली माहे दरसाया छे। जगा-जगा नीति, उपदेश, बोध, शिक्षा, धर्म और विचार को बण्यो जठे ताईं उल्लेख कीनो छे। मारवाडी समाज की स्थिति, घर की और बाहर की बाता, विचार की भिन्नता, पचायत और स्त्री-पुरुष का वरताव पर खूब विचार करके यथाभाग इयो जमायो छे के जाणे आ इसी-की-इसी कठे हुयोडी साची बात छे।"

'फाटका-जजाळ' (रचना संवत् १९६४) भरतियाजी रो तीसरो नाटक है। उणा इण में मारवाडी समाज में फाटका (सट्टा) और इण सरीसा दूसरा दुर्गुणा सू हुवणवाळी हाणा रो चित्र अंकित करयो है—"प्रेम अनुभव बिना जाण्यो जावे नहीं। मधुपान करया बिना बी की माधुरी मालम होवे नहीं। जिण सू अनिर्वचनीय आनंद होवे, जठीने हृदय खिचीजे, जिण के वास्ते प्रबळ इच्छा उत्पन्न होवे, और जिण का साथ सू हृदय स्नेहपूर्ण होवे बो ही प्रेम। ओ भाव परस्पर को हृदय अेक वे कानी अेक

गौरव ग्रहण करयो,
लोक-हिरदै मे प्रतिष्ठा पायी,
गुण-गरिमा रो कोर्ति-मान थापित करयो।
इण महामनीषी
श्रीकृष्ण-चरित्र रै पावन प्रकाश में
भारत री जनता नै
गीता रो अमर सदेश
फेरू दियो।

इण दिव्य पुरुष
आप रै मत्र-बळ सू
आरज-भोम मे आथमतै
स्वाधीनता-सूरज नै
भळभळाट करतो राख्यो।

राष्ट्रकवि पृथ्वीराज री वाणी
हिमाचळ रो गौरव-गान है,
गगा रो पावन गीत है,
रतनाकर रो गभीर घोष है,
भारती री वीणा रो दिव्य सुर है।

भारती-भक्त पृथ्वीराज नै
प्रणाम !
वारवार प्रणाम !

राजस्थानी रा समर्थ सेवक

श्री शिवचंद्रजी भरतिया

—सत्यनारायण स्वामी—

(१)

आधुनिक राजस्थानी साहित्य रै इतिहास मे श्री शिवचंद्रजी भरतिया रो नांव सोनै रै आखरा मे लिखीजसी। राजस्थानी रै आज रै साहित्य नै उणा अेक जबरदस्त मोड़ दियो। हिंदी-साहित्य रै समुत्थान और उण री श्रीवृद्धि मे जिको काम भारतेंदु हरिश्चंद्र करचो ठीक वो ही काम राजस्थानी साहित्य मे भरतियाजी करचो। भरतियाजी आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा प्रथम महत्त्वपूर्ण साहित्यकार है।

श्री शिवचंद्रजी भरतिया रो जन्म विक्रमी सवत १९१० री चैत सुदि सातम रै दिन हुयो। 'फाटका-जजाळ' नाटक मे उणा आप रो परिचय इण भात दियो है—

'म्हारो जन्म वरिष्ठ वैश्यकुल मे हू अग्रवशी तथा।
गोत्री सिंगल, बैंक छे भरतिया, 'विद्याविलास' प्रथा॥
('विद्याविलास' जिण की पदवी छे)

दादा गगारामजी, जिण को पुण्य अपार।
जाया सुत बल्देवजी, कीनो कुळ-विस्तार॥१३॥
उण को सुत शिवचद है, कुळ मे शास्त्र-प्रवीन।
कुळ की रीत सुधारबा, कीनो ग्रथ नवीन॥१४॥

भरतियाजी च्यार भाई हा। च्यार भाया मे वै सगळा सू बडा हा। पिताजी री मृत्यु रै बाद उणा री सगळी सपत्ति छोटिया तीनू भाया आपस मे बाट ली और उणा रै हाथ की नही आयो। इण कारण उणा व्यापार करणो छोडनै वकालत करणी सरू करी। पण वकालत मे उणा रो जी नही लाग्यो और उणा इदौर में सरकारी नौकरी कर ली।

भरतियाजी आप रै जीवण मे घणा ही ताता-ऊना उतार-चढाव देख्या। वै मनमोजी जीव हा। पराधीन रैयनै किण रै ही साथै काम कोनी कर सक्या। इण कारण वै ना तो अेक जाग्या पूरी तरै टिकनै काम कर सक्या और ना ही उणा कोई अेक ही तरै रो धधो करचो। जीवण मे उणा रै मोकळो प्रवास रैयो।

पण अेक बात, जिकी रै कारण आपा उणा नै आछे दरजै रा साहित्यकार कैवां, उणा रै जीवण में विसेस रूप सूं देखण जोग परताप-जोग ही और बा ही उणा री विद्या-विलासिता। वंश बावण सो उणा नै मोकळो मोन हो। वै हिंदी, मराठी, संस्कृत और राजस्थानी—च्यारू' ही भासावां रा आछा जाणकार हा और इण च्यारू' ही भासावां में उणा साहित्य-रचना करी। वै अंग्रेजी रा जाणकार भी हा। 'फाटका-जंजाळ' नाटक रै अंत रै उपसंहार में उणा लिख्यो है—

> भाषा मोटी, निज मारवाड़ी, हिंदी तथा गुर्जर में मराठी।
> रच्या घणा छंद, निबंध घणा, विद्यार्थ बुद्धि, घन पूब लगाँ॥
> देख्या घणा दुःख उठो प्रवास, कीनो घणा पुस्तक-अभिराग।
> सेव्या घणा पंडित साधु लोग, भोग्या किता राज-विलास-भोग॥

इण विद्याविलासिता रो फळ ही समझो कै वै आप रै जीवण रै अंत तक अेक कर्मठ साहित्यकार रै रूप में साहित्य-जगत् में प्रतिष्ठित हुयग्या। उणा रै सामनै ही उणा री ख्याति री बेल चारोमेर पुष्पित-पल्लवित हुयगी ही। अमोलक रै शब्दां 'माहेश्वरी' रै अनुसार संस्कृत रा अगाध विद्वान, मराठी रा कवि, हिंदी साहित्य रा सेवक, मातृभाषा मारवाड़ी रा कवि-सम्राट्, उपन्यास-लेखक, नाटक-प्रणेता, विद्या-विलासी शिवचंद्र भरतिया आप रै समै रा महान विद्वान और लेखक हा।

इण बहुगुणी प्रतिभा रै धणी री लोकप्रियता राजस्थान रै प्रतिभाशाली सपूत और हिंदी रै सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी अजमेरी रै इण पद्य सूं आछी तरियां जाणी जा सकै है—

> धन्य धन्य शिवचंद्र कवि, धन्य भरतिया कुलभूषण।
> मरुमडल के आप चंद्र हो नि:संदेह रहित दूषण॥
> अति अज्ञान तिमिर आवेष्टित अपना जान समाज अशेष।
> चंद्र ! आपने काव्य-किरण से फैला दिया प्रकाश विशेष॥
> भावपूर्ण माधुर्य सरस औ अति नैसर्गिक हृतकारी।
> भरी देशहित की बातें हैं जिसमें अनुपम उपकारी॥
> हे सामाजिक चरित चित्रकर ! रविवर्मा के गुरु-भाई !
> हे कविवर समाज-संशोधक ! करे कौन तव समताई ?

भरतियाजी री जीवण-लीला उणा री ६१ बरस री ऊमर में सवत् १९७१ में इंदौर में समाप्त हुयी।

(२)

भरतियाजी रै जीवण री सब सूं बडी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा। उणां साहित्य नै समाज सू रती भर ही जुदो कोनी राख्यो। राजस्थानी जन-जीवण रै स्तर नै उणां आख्यां खोलनै देख्यो, और देख्यो कै राजस्थान री जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळा नै लोग हीण दृष्टि सू देखे है। राजस्थानी जन री आंख्यां खोलण सारू उणां कलम उठायी और लोगा

नै दरसायो कै आपां रो समाज रसातळ नै जाय रैयो है, 'मारवाडी' मांय री महत्ता घट रैयी है और आपणी भाषा री तो लुटिया ही डूब रैयी है !

गैराई सूं सोचणं पर उणां नै राजस्थानी समाज री अपमानजनक अवस्था रो मूळ कारण अंत-पत ओ लाग्यो कै समाज मे अजं ताईं अशिक्षा रो घोर प्रसार है। इण नै मिटाया विना समाज सुधरण री कोनी, मारवाड़ी 'मारवाडी' ही रैसी। शिक्षा रै प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता री बोली नै ही माध्यम वणावणो ठीक समझ्यो। मातृभाषा सूं आछी दूजी भाषा किण तरैं हुय सकै है ? उणां री मींट मे आ वात आमी कै 'मारवाड़ी' रो उद्धार मारवाडी भाषा ही कर सकै है—

"मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे। मारवाडी भाषा आपणी बोधदायी छे और मारवाड़ी भाषा आपणी स्त्रियां की सुधारकर्त्री छे। म्हारो तो सिद्धांत छे के आपां लोगां को लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाडी कानी नही रहणे सू आपणो समाज हाल ताईं इशो हीन दशा मांहे पड्यो हुयो छे। मारवाडी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाटशाळा तांईं भी पूग जाती तो घणाखरा मारवाड़ी सरदार विद्वान वण जाता। आपणी मातृभाषा ने होण समझणे सू आपणो उद्धार किण तरे हो सके ?" ('कनक-सुदर' री भूमिका)

'केसर-विलास' नाटक री भूमिका मे उणा री मातृभाषा रै प्रति आ हूंस इण रूप मे प्रगट हुयी है—

"म्हारा दिल माहे हमेशा विचार आवता के भाषा वाण्या के कुळ माहे जनम लीनो, रुजगार-धधो मोकळो कीनो, दो-चार भाषा को अभ्यास करने सेंकडों पुस्तका वाची और सस्कृत, मरेटी, हिंदी माहे रचना भी करी, कविता मोकळी कीनो, पण आपणी जनम-भाषा मारवाड़ी तिका कानी तो नजर भी कीनी नही। छोटी-मोटी कोई पुस्तक वणाय ने सरदारां के सामने राखणी तो खरी। देखा भला, आदर होवे के अनादर होवे।"

मातृभाषा मे रचना करण री उणां री इच्छा इण कारण भी ही कै अशिक्षित मारवाडी और उणां री लुगायां तो इण रै अलावा भारत री दूजी भाषावां नै जाणकं-ई को जाणं ही नी, पेर उण भाषावां मे लिखण सू मारवाडी समाज नै काईं फायदो ? अेक और भी सबळ कारण राजस्थानी मे लिखण रो उणां ओ बतायो कै उण समैं इण भाषा रो साहित्य दूजी भाषावां रैं साहित्य सूं जावक ही थोड़ो लिख्यो जा रैयो हो। राजस्थानी रैं गौरव नै भी दुनिया रैं सामनैं लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका मे उणां लिख्यो है—

"आपणो नोवोटी मारवाड़ और मारवाडी बोली कटी के अंधेरा माहे पड़ी छे, सू आप जाणो नहो काईं ? अग्रेजी तो रैवा द्यो पण वंगाली, गुजराती, मरेटी, हिंदी कानीं तो जरा नजर करो, किसा-किसा ग्रंथ इण भाषा माहे तैयार हुवा छे और हो रया छे जिणां री गिणती नहीं। आपणी मारवाडी बोली आज इणा सुधार का

फळास ऊपर पूग्योड़ी दुनिया मांहे पण अंधेरी गुफा के अंदर सोता गाजी रह्ये, इण को अभिमान आप सरदारां ने नहीं कांई ?"

और भरतियाजी राजस्थानी समाज नैं अंधेरी गुफा मूं बारैं लावण सारू कमर कसी और आप री कलम री जागती जोत मूं उण रो मारग प्रशस्त करण रो प्रयास करयो, धरछूट प्रयास करयो ।

(३)

भरतियाजी री लिख्योड़ी पुस्तकां री सख्या राजस्थानी में ६, हिंदी में १७, मराठी में १३ और संस्कृत में ३ है । सं० १९६३ में प्रकाशित 'बुढापा की सगाई' नाटक रैं छेहलैं पृष्ठ रैं विज्ञापन में उणां री रचित कृतिया रो विवरण इण प्रकार है—

"सिद्धेदुचंद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पद्यावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)— दूसरी बार छप रही छे, कनकसुंदर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ १० (हिंदी), बुढापा की सगाई नाटक (मारवाडी), मोत्या की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), रामशरोद्गण-प्रशस्ति (संस्कृत) मोरुकानन (हिंदी) ।

लिखकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाडी), मतिविलास नाटक (मराठी), *अनुताप तीर्थ शतक (मराठी), आर्या लहरी (मराठी), विज्ञान पाशुपत (हिंदी)* ।

तैयार हो रही छे—अब क्या करना चाहिए ? हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी; बोधदर्पण (मारवाड़ी) ।

भरतियाजी री आखरी छप्योड़ी पोथी 'सूर्यचक्रवेध' मिलैं है जिकी उणां द्वारा आयोजित 'विचार-दर्शन' नाव रैं अेक विशाल ग्रंथ रो अेक अश है । उण रो विषय योग-विद्या और वेदांत सूं संबंधित है ।

पुस्तक-लेखन कार्य रैं अतिरिक्त उणां हिंदी पत्र 'वैश्योपकारक' रैं संपादन में भी घणो सहयोग दियो । सामयिक समस्यावां पर उणां रा जिका विचार हा वैं मोकळी कहाण्यां और निबंधां रैं रूप में उण में नियमित रूप सूं प्रकाशित हुया हा ।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनावां में 'कनक-सुंदर' नाव री कृति राजस्थानी भाषा रो पैलो उपन्यास है और भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकैं है । उण रो पैलो भाग ही छप सक्यो, दूसरो भाग प्रकाश में नहीं आयो । ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी में चंद्रकांता-सतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी और जासूसी उपन्यासां रो बोलबालो हो । कनक-सुदर सामाजिक उपन्यास है । इण में उण टैम रैं मारवाडी समाज री कथा नैं जिण सरस ढंग सूं प्रस्तुत करी है उण नैं देखनैं लोग घणा प्रभावित हुया । कनक और सुंदर इण उपन्यास रा नायक-नायिका है जिका रो प्रारंभिक जीवण ही पैलैं भाग में आ पायो है । उपन्यास रो प्रारंभ इण भांत हुवैं—"दोपहर को वखत । चारयां कानी लू चाल रही छे । हवा का जोर सूं वाळू अठी-की-उठीने उड-उडकर वी-का नवा-नवा टीवा हो रया छे, और मीजण भी रहया छे । मुंह ऊंचो कर सामने चालणो मुस्कल छे । लू कपड़ा मांहे बडकर सारा सरीर ने भिकताव कर रही छे । धूप इसी जोर की पड़ रही छे के जमी ऊपर पग देणो

मुस्कल छे। रस्ता माहे दूर-दूर कठेही झाड को नाव नहीं। वाळू उड़कर जगा-जगां नवा टीबा होणे सू रास्ते को ठिकाणो नहीं। आदमी तो दूर, रास्ता मांहे कोई जीव-जिनावर को भी दरसण नही। इसे वगत अेक जवान आदमी जिण की उमर सोळा-सत्रा बरस की थी, माथो कपड़ा सूं बंध्यो हुओ, हुश-हुश करतो-करतो अजमेर कानी चल्यो आ रह्यो छे। रेती गरम होणे सू पगां के परका लागकर फोडा आ रह्या छे, तो भी जोर सू चाल रह्यो छे।"

उपन्यास मे आपणै देश मे व्याप्त फूट री जिकी कमजोरी ही उण तरफ भी भरतियाजी सकेत करण मे कोनी चूक्या—'अपणा देश माहे अेको नही जरां तो आपणी राज्यसत्ता पराया लोगा के हाथ गयी ··· ···· देखकर सारा झट बोल्या के आ तो 'फूट' छे। साहेब हसकर बोल्या के ओ इसो अनोखो पळ थारा देश माहे छे जरां तो म्हा लोगा को राज हुवो; नही तो म्हाकी काई मगदूर थी सू हजारा कोस पर आकर थाके ऊपर हुकूमत करता? इण माहे कांई छूट छे। इण फूट तो सारा देश को सत्यानाश कर दीनो।"

'केसर-विलास' (प्रकाशनकाळ सवत् १९५७) भरतियाजी री पैली राजस्थानी रचना और राजस्थानी रो पैलो नाटक है। इण आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी नाटक री स्वाभाविकता और यथार्थवादिता हिंदी रै पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी नै भी घणा प्रभावित करया। उणा 'सरस्वती' मे लिख्यो—रचना इसकी बहुत ही स्वाभाविक है। कहीं-कहीं पढ़ते समय, स्वाभाविकता का इतना आविर्भाव हो उठता है कि इस बात की विस्मृति हो जाती है कि यह कल्पित कथा पढ़ रहे हैं। [सरस्वती, अक्टूबर, १९०४, पृ० ३६८] इण नाटक मे अणमेल ब्याव री समस्या उठायी है। अणमेळ ब्याव री बुराई बतायनै समाज नै उण सू विमुख करणो ही इण रो उद्देश्य है।

और लगभग आ ही समस्या 'बुढापा की सगाई' नाटक (प्रकाशनकाळ सवत् १९६१) मे उठायी है। भरतियाजी इण री भूमिका मे लिख्यो है—"इस माहे स्त्रियां की स्वतन्त्रता की हद, बी का परिणाम, बुढापा माहे ब्याव की इच्छा, बी को अधिकार, सगाई, बी को बधन और बी बधन को परिणाम, इत्यादि सरळ मारवाड़ी बोली माहे दरसाया छे। जगां-जगां नीति, उपदेश, बोध, शिक्षा, धर्म और विचार को बणती बडै लाई उल्लेख कीनो छे। मारवाड़ी समाज की स्थिति, घर की और बाहर की बातां, विचार की भिन्नता, पचायत और स्त्री-पुरुष का बरताव पर खूब विचार करके यथाभाग इसो जमायो छे के आगे आ इसी-की-इसी बडै हुवोडी सावी बात छे।"

'फाटका-जंजाळ' (रचना सवत् १९६४) भरतियाजी रो तीसरो नाटक है। उणा इण में मारवाड़ी समाज में फाटका (सट्टा) और इण सूं पैदा हुवण वाळी दुर्दशा सूं हुवण वाळी हाणां रो चित्र अंकित करयो है—"प्रेम अनुभव बिना जाण्यो जावै नहीं। मधुपान करया बिना वीं री माधुरी मालम होवै नहीं। जिण सू अनिर्वचनीय आनन्द होवै, जठीने हृदय खिंचीजे, जिण ने बारंबार देखण री इच्छा उत्पन्न होवै, और जिण रा मिलण सू हृदय स्नेहपूर्ण होवै वो ही प्रेम है। ओ प्रेम परस्पर दो हृदय अेक नै बांधे अेक

फळाए ऊपर पूग्योड़ी दुनिया मांहे पण अंधेरी गुफा के अंदर सोता मानी रह्है, इण को अभिमान आप सरदारां ने नहीं कांई ?"

और भरतियाजी राजस्थानी समाज नैं अंधेरी गुफा सूं बारैं लावण माह कमर कसी और आप री कलम री जागती जोत सूं उण रो मारग प्रशस्त करण रो प्रयास करयो, घरट्टट प्रयास करयो।

(३)

भरतियाजी री लिख्योड़ी पुस्तकां री सरया राजस्थानी में ६, हिंदी में १७, मराठी में १३ और संस्कृत मे ३ है। सं० १९६३ में प्रकाशित 'बुढापा की सगाई' नाटक रैं छेड़लै पृष्ठ रैं विज्ञापन में उणां री रचित कृतियां रो विवरण इण प्रकार है—

"सिद्धेंदुचंद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पद्यावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)— दूसरी बार छप रही छे, कनकसुंदर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ १० (हिंदी), बुढापा की सगाई नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राज्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

लिखकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक (मराठी), अनुताप तीर्थ शतक (मराठी), आर्या लहरी (मराठी), विज्ञान पाशुपत (हिंदी)।

तैयार हो रही छे—अब क्या करना चाहिए? हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी; बोधदर्पण (मारवाड़ी)।

भरतियाजी री आखरी छप्योड़ी पोथी 'सूर्यचक्रवेध' मिलै है जिकी उणा द्वारा आयोजित 'विचार-दर्शन' नांव रैं अेक विशाल ग्रंथ रो अेक अंश है। उण रो विषय योग-विद्या और वेदांत सूं संबंधित है।

पुस्तक-लेखन कार्य रैं अतिरिक्त उणां हिंदी पत्र 'वैश्योपकारक' रैं संपादन मे भी घणो सहयोग दियो। सामयिक समस्यावां पर उणां रा जिका विचार हा वै मोकळी कहाण्यां और निबंधां रैं रूप मे उण में नियमित रूप सूं प्रकाशित हुया हा।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनावां मे 'कनक-सुंदर' नांव री कृति राजस्थानी भाषा रो पैंलो उपन्यास है और भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकै है। उण रो पैंलो भाग ही छप सक्यो, दूसरो भाग प्रकाश में नहीं आयो। ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी मे चंद्रकांता-संतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी और जासूसी उपन्यासां रो बोलबालो हो। कनक-सुंदर सामाजिक उपन्यास है। इण मे उण टैम रैं मारवाड़ी समाज री कथा नैं जिण सरस ढंग सूं प्रस्तुत करी है उण नैं देखनै लोग घणा प्रभावित हुया। कनक और सुंदर इण उपन्यास रा नायक-नायिका है जिकां रो प्रारंभिक जीवण ही पैंलै भाग मे आ पायो है। उपन्यास रो प्रारंभ इण भांत हुवै—"दोपहर को वखत। चारया कानी लू चाल रही छे। हवा का जोर सूं बाळू अठी-की-उठीने उड-उडकर बी-का नवा-नवा टीबा हो रया छे, और भीजण भी रहया छे। मुंह ऊंचो कर सामने चालणो मुस्कल छे। लू कपड़ा मांहे वडकर सारा सरीर ने सिकताव कर रही छे। धूप इसी जोर की पड़ रही छे के जमी ऊपर पग देणो

वंदनमाळ

—रामसिंह—

(१) प्रेम रो दृष्टिकोण

म्हारो हृदय हूं थारै आगै खोलनै राखतां डरूं हूं—कठैई थे आ नी कै बैठो कै इण नै तो मैं कदैई देख चूको हूं।

म्हारै गावणै मे मुरझाण क्यो हुवै इण रो कारण थारी आंखियां री कोर सूं बूझो।

हूं थानै म्हारो काव्य नही सुणाऊं हूं; मनै डर लागै है कै कठैई थे प्रशंसा रा पुळ बाधण नी लाग जाओ।

थे मनै संसार भर मे सगळा सूं सुंदर समझो इण खातर हूं थारै आगै मूंडो लुकाय लेऊं हूं पण इण नै थे कदास लज्जा रो परिणाम नी समझ लेओ इण वास्तै हूं थारै आगै निश्शंक हुयनै आऊं हूं।

निशीथ री निःस्तब्धता मे जद थे अेकांत मे म्हारै सूं मिलण नै आओ तो म्हारी इच्छा भाग जावण री हुवै। थे हंस नै कैवो—आओ, आओ। जणै म्हारै मूंडै सूं नीकळै—ना! हूं को जाऊं नी।

जे हूं आभूखण सजाय नै आऊं तो थे पूछो—आज अै आभूखण इता सुहावणा क्यो लागै है?

और जे हूं सादा वस्त्रां मे आऊं तो थे कैवो—ओहो! आज ओ निष्कळंक चंद्रमा धरती माथै कठै सूं ऊग आयो।

फेर थे ही बताओ, हूं थारै कनै किया आऊं?

(२) प्रेम रो व्यवहार

जद हूं आपका नै को देखण नै आऊं तो थे भी उणां री पगत मे आ बैसै।

ने खींचे । बीजळी का तार का ठोका के ज्यूं अेक का हृदय ऊपर अेक का हृदय को आघात करे । प्रेम को भाव, प्रेम को भावुक और प्रेम की भावना इणा माहे सूं अेक को भी लोप हो जावे तो फिर दूजो रहे नही ···· ।"

भरतियाजी री साहित्य-सेवा री मुख्य प्रेरणा समाज-सुधार और देश रो उत्थान है । विदेशी शोषण कानी भी उणां रो ध्यान हो—"अगरेज लोगा कानी तो जरा नजर करो, अठे सू माटी के नाई पावड़ा सूं रुपया खींचकर आपका देस ने ले जाकर इन्द्रपुरी वणा दीनो छे । आपणा देश ने भिखारी कर दीनो छे ।"

समाज-सेवा री भरतियाजी री कित्ती हूंस ही, 'कनक सुदर' री भूमिका रै इण उद्धरण सू आ आछी तरै जाणी जा सकै है—

" 'हाय पैसो ! हाय पैसो !' करवाळा म्हारा सारा सरदारां ने राजा-महाराजा अर श्रीमंत वणाकर, हळका छळ-छिद्र का वेपार सूं छुडाकर खरा-खरा वैश्य वणा दयूं, उण की सारी कुरीतां मेट दयूं, उणका घर को सुधार कर दयूं, उणकी फिजूल-खरची मिटा दयूं, उणकी राहरीत सुधार दयूं, उणका बाळविवाह रोक दयूं, उण का बेजोड़ व्यांव नही होवा दयूं, मोट्यारां ने विद्या सिखाकर स्त्रिया ने शाणी कर दयूं और वेश्या भी नही बोल सके उशा फीटा बोलां का गीत गावणा छुडा दयूं ।"

स्त्री-शिक्षा रा वै गैरा हिमायती हा । नारी री हीण अवस्था देख-देखनै उणां रो काळजो कटीज्या करतो । नारी नै उण री महानता और उण री जिम्मेवारी जतावण रो उणां जबरदस्त प्रयास करयो हो । उणा 'कनक-सुदर' री भूमिका में इण बाबत आप रा विचार प्रकट करया है ।

भाषा रै संबंध मे भी उणा रा विचार स्पष्ट नै महत्त्वपूर्ण हा । कोई भी राष्ट्र जद ही सबळ हुय सकै है जद उण री भाषा अेक हुवै । 'कनक-सुदर' में उणा लिख्यो है—

"हर-अेक देश री सर्वत्र अेक भाषा होणी अत्यंत आवश्यक छे । यूरप, अमेरिका, विगेरा माहे अेक भाषा होणे सूं उण लोगां की दृढ अेकता होकर वे आज सारी दुनियां माहे श्रेष्ठ हो रया छे । आपणा हिंदुस्तान की अेक भाषा होती तो आज आपणा देश की इशी अवनति होती नही ।"

आपणै राष्ट्र रै इण मात रै मूर्धन्य विचारक और समाजसेवी और राजस्थान-भारती रै सपूत पूत री सेवावां रै प्रति सही-सही आभार तो जद ही मान्यो जावैला जद कै उण री नै उण रै समै रा दूजा प्रवासी राजस्थानी साहित्यकारां री सारी रचनावां नै अविलंब आछै-सूं-आछै रूप मे प्रकाशित करायनै उणां रो प्रचार करांला ।

राजस्थानी रै इण समर्थ सेवक री अमर स्मृति नै पुन:पुनः प्रणाम !

चंदनमाल

—रामसिंह—

(१) प्रेम रो दृष्टिकोण

म्हारो हृदय हू थारै आगै खोलनै राखता डरू हू—कठैई थे आ नी कै बैठो कै इण नै तो मैं कदैई देख चूको हू।

म्हारै गावणै मे सुरभंग क्यो हुवै इण रो कारण थांरी आखिया री कोर सूं बूझो।

हूं थांनै म्हारो काव्य नहीं सुणाऊ हू ; मनै डर लागै है कै कठैई थे प्रशंसा रा पुळ बांधण नी लाग जाओ।

थे मनै ससार भर मे सगळां सू सुदर समझो इण खातर हू थारै आगै मूंडो लुकाय लेऊ हूं पण इण नै थे उदास लज्जा रो परिणाम नीं समझ लेओ इण वास्तै हूं थारै आगै निशंक हुयनै आऊ हू।

निशीथ री निःस्तब्धता मे जद थे अेकांत मे म्हारै सू मिलण नै आओ तो म्हारी इच्छा भाग जावण री हुवै। थे हंस नै कैओ—आओ, आओ। जदै म्हारै मूडै सू नीकळै—ना ! हू को जाऊ नी।

जे हू आभूखण सजाय नै आऊ तो थे पूछो—आज अै आभूखण इत्ता सुहावणा क्यो लागै है ?

और जे हू सादा वस्त्रा मे आऊ तो थे कैओ—ओहो ! आज ओ निष्कळंक चन्द्रमा धरती माथै कठै सू ऊग आयो।

फेर थे ही बताओ, हू थारै कनै किया आऊ ?

(२) प्रेम रो व्यवहार

जद हू थांकरा नै को देखण नै जाऊ तो वै भी उण्ता री पवन मे आ बैठै।

गे रीचे । बीजळी का तार का ठोका के ज्यूं अेक का हृदय ऊपर अेक का हृदय को आघात करे । प्रेम को भाव, प्रेम को भावुक और प्रेम की भावना इणा माहे सूं अेक को भी लोप हो जावे तो फिर दूजो रहे नहीं ···· ।"

भरतियाजी री साहित्य-सेवा री मुख्य प्रेरणा समाज-सुधार और देश री उत्थान ही । विदेशी शोषण कानी भी उणां रो ध्यान हो—"अगरेज लोगा कानी तो जरा नजर करो, अठे सूं माटी के माई पातड़ा सू रुपया नीचकर आपका देस ने ले जाकर इन्द्रपुरी बणा दीनो छे । आपणा देस ने भिखारी कर दीनो छे ।"

समाज-सेवा री भरतियाजी री कित्ती हूस ही, 'कनक सुदर' री भूमिका रैं इण उद्धरण सूं आ आछी तरै जाणी जा सकै है—

" 'हाय पैसो ! हाय पैसो !' करवाळा म्हारा सारा सरदारा ने राजा-महाराजा अर श्रीमत बणाकर, हलका छळ-छिद्र का बेपार सूं छुडाकर खरा-खरा वैश्य बणा दयूं, उण की सारी कुरीता मेट दयूं, उणका घर को सुधार कर दयूं, उणकी फिजूल-खरची मिटा दयूं, उणकी राहरीत सुधार दयूं, उणका बालविवाह रोक दयूं, उण का बेजोड़ ब्यांव नहीं होवा दयूं, मोटयारां ने विद्या सिखाकर स्त्रियां ने शाणी कर दयूं और वेश्या भी नहीं बोल सके उसा फीटा बोलां का गीत गावणा छुडा दयूं ।"

स्त्री-शिक्षा रा बै गैरा हिमायती हा । नारी री हीण अवस्था देख-देखनै उणां रो काळजो कटीज्या करतो । नारी नैं उण री महानता और उण री जिम्मेवारी जतावण रो उणा जबरदस्त प्रयास करयो हो । उणा 'कनक-सुदर' री भूमिका मे इण बाबत आप रा विचार प्रकट करया है ।

भाषा रै सबध में भी उणा रा विचार स्पष्ट नै महत्त्वपूर्ण हा । कोई भी राष्ट्र जद ही सबळ हुय सकै है जद उण री भाषा अेक हुवै । 'कनक-सुंदर' मे उणा लिख्यो है—

"हर-अेक देश री सतंत्र अेक भाषा होणी अत्यत आवश्यक छे । यूरप, अमेरिका, विगेरा माहे अेक भाषा होणे सू उण लोगा की दृढ अेकता होकर वे आज सारी दुनिया माहे श्रेष्ठ हो रया छे । आपणा हिंदुस्तान की अेक भाषा होती तो आज आपणा देश की इसी अवनति होती नही ।"

आपणं राष्ट्र रै इण भात रै मूर्धन्य विचारक और समाजसेवी और राजस्थान-भारती रै सपूत पूत री सेवावां रै प्रति सही-सही आभार तो जद ही मान्यो जावैला जद कै उण री नैं उण रै समै रा दूजा प्रवासी राजस्थानी साहित्यकारां री सारी रचनावां नैं अविलब आछै-सू-आछै रूप मे प्रकाशित करायनै उणा रो प्रचार कराला ।

राजस्थानी रै इण समर्थ सेवक री अमर स्मृति नैं पुनःपुन. प्रणाम !

(४) दरिद्र रो दान

जे जाणणो ही हो तो आया क्यों हा ?

जद-कदेई थे आवो तो विदा मांगता ही आवो हो।

याचक ! मैं तो थारी दान-वीरता री घणी प्रशंसा सुण राखी ही, फेर आ उलटी रीत क्यों ?

जे जाणणो ही हो तो आया क्यो हा ?

म्हारो और थारो कोई पैसा रो संबंध है काई ? और जे नही, तो बस म्हारै ही थनै मागण नै क्यों आवो हो ?

हूं दरिद्र, दरिद्र सूं भी दरिद्र, हू और थे हो म्हारा सर्वस्व। लो, देखो ! इण वार थानै ही त्यागनै त्याग रो आदर्श देखाऊ हू।

जे जाणणो ही हो तो आया क्यो हा ?

वै हाथ आगै करै और हूं उणां रै कानी देखू भी नही हूं।

सगळा जणा दान लेयनै जावै परा जद हूं उणा नै कैऊ हूं—थे आप दे सको हो उण नै मागण नै आवो हो। हूं थानै जाणूं हू।

वै चोखा-चोखा उपहार लेयनै आवै और म्हारै आगै हाथ जोडियां ऊभा रैवै। हूं व्यंगपूर्ण हसी हसनै कैऊ—हू आप दे सकू हूं उण नै थे मनै देवण नै आवो हो। हूं थानै जाणूं हू।

ढळतोड़ी रात मे ओस सू भीजियोडै शिरीष रै फूलां री सुगध लेयनै समीर म्हारै घरै आवतो हो। म्हारी आंख लागगी और मैं सपनै मे उणा नै कैवता सुणिया—काई तूं मनै प्यार करै है ?

थे इसो प्रश्न पूछो हो जिण रो उत्तर थे ही जाणो हो—मैं झुंझळायनै उथळो दियो।

फेर भी थारै देवण-लेवण में और कैवण-सुणण मे अेक अपूर्व आनंद है—इयां कैय-नै वै म्हारी नीद रै सागै-सागै कुण जाणे कठीनै रम आवै।

(३) तूं और थारी वैनां

तूं चिणा चूटै जद थारी छोटी-छोटी वैनां नीव री नान्ही-नान्ही डाळियां माथै बैठी-बैठी गीत गावै। उणा रो गीत बंद हुसी जद ही थारो काम समाप्त हुसी और तू उणा रै सागै-सागै आवां रै कुंज कानी उड जासी।

वेला सूं छायोडी थारी झूंपड़ी रै द्वार माथै गाय ढीकै है और थारी वाछी ऊपर लटकतै फूल नै जीभ सू पकड़णो चावै।

धान माथै पड़ती थकी सूरज री आसरी स्वर्ण-रश्मिया थारै केशा और कपोलां माथै, और थारी वैनां रै कंठां और पाखां माथै, पडै।

रात में प्रकृति थां सगळां री आत्मा में विश्राम करै और वा ही थारै दिमाग मे दूर देशां रा सपना भरै।

आकाश थारै लिलाड नै, और निशान्ति थारी निमीलित आंखियां नै, चूमण नै आवै।

तारा थारै अविरल घुघराळा केशां मे आगमीचणी रमै।

फेर उषा आवनै थारै कोमल कपोलां नै स्पर्श करै, जद तू नदी रै किनारै माथै ... संगीत भरै।

(४) दरिद्र रो दान

जे जावणो ही हो तो आया क्यों हा ?

जद-कदेई थे आवो तो विदा मांगता ही आवो हो।

याचक ! मैं तो थारी दान-वीरता री घणी प्रशंसा सुण राखी ही, पण आ उलटी रीत क्यों ?

जे जावणो ही हो तो आया क्यों हा ?

म्हारो और थारो कोई पैला रो संबंध है काईं ? और जे नहीं, तो बस म्हारै ही घरै मागण नैं क्यों आवो हो ?

हूं दरिद्र, दरिद्र सू भी दरिद्र, हूं और ये हो म्हारा सर्वस्व। लो, देखो ! इण वार थानैं ही त्यागनैं त्याग रो आदर्श देखाऊ हूं।

जे जावणो ही हो तो आया क्यों हा ?

मौत : नयो जीवण

—नरोत्तमदास स्वामी—

चांद आथवै
पण दूजै दिन भळै ऊगियावै ।

बादळ बरस जावै
पण भळै भरीजनै
पृथ्वी नै हरी-भरी बणावण नै आ पूगै ।

डाळी रा फूल कुमळायीज जावै
पण वा भळै फूलां सू सदीज जावै ।

दियो दिनूंगै बुझ जावै
पण रात हुतां ही भळै प्रकाश देवण लागै ।

मौत जीवण रो अंत नहीं,
आ हीज तो जीवण नै नयो जीवण देवै ।

भरीजण नै बरसै है मेघ
फूल कुमळावै विगसण नै
जगायीजण नै दीपक बुझै
आंथवै चांदो ऊगण नै
मौत नहि जीवण रो अवसान
करै वा ही नव-जीवण दान

मीठा सपना, खारा गीत

—उदयवीर शर्मा—

(१)

थवकै इग्यारवी कक्षा रै परचै मे मूई शैली रा निबंध आया। पांच शीर्षकां माय सू अेक माथै निबंध लिखणो हो। अेक शीर्षक हो 'मीठा सपना, खारा गीत।' अेक विद्यार्थी च्यार निबंधा नै छोडनै इण नै ही इण भांत लिखियो—

(२)

मीठा सपना बिना जीवण सूनो है। रूंख बारै सू हरियाळो लागतां थकां भी माय सू थोथो हु ज्यावै जिया ही मीठा सपना बिना मिनख बारै सू सजीवतो लागतां थकां भी भीतर सू भिळियोडो रैवै। मीठा सपना री रस-गंगा मे मिनख न्हावतो रैवै जणा ही सुरग धरा माथै उतरियोडो लागै, नही तो नरकोडो ही समझो। मीठा सपना देखणा जीवण रो आनंद है, सार है अर आशावादी मारग है पण मीठा सपना मे जे विक्षोभ पड ज्यावै तो जीवण बोझो है। सुख मे किरकिर आ ज्यावै तो मजो ही जातो रैवै जियां ही जीवण मे खारा गीत गायीजण लाग ज्यावै तो जमारो गयो। मीठा सपना जिदगी है तो खारा गीत मौत है। इण प्रसग मे अेक कथा याद आयगी जिकी अठै बांचो—

अेक शेखचिल्ली हो। आप रै गांव रै चारण बणै हो। चालता-चालता अेक घी रो व्यापारी आप रै माथै माथै घी रो घडो लियां उण नै मिलियो। व्यापारी घणै सू थेन्यचल्यातै हो रैयो हो। अेक मजूरियै आदमी नै टाबो बणतो देखनै व्यापारी बोलियो—भाया! जे तू म्हारै घी रै घडै नै आगलै गांव ताई लेचालै तो अेक आनै रा पईसा मजूरी रा दू। शेखचिल्ली सुणता ही हा भर ली। घडो व्यापारी रै माथै सू उतरनै शेखचिल्ली रै सिर माथै आयग्यो। दोनू चाल्या आगै।

अबै शेखचिल्ली सोचण लागियो—अेक आनै री अेक मुरगी खरीदनै लासूं । मुरगी ईंडा देसी । बोळी मुरगियां हु ज्यासी । बोळा ईंडा देसी । बोळा बेचसूं । बोळा पईसा आसी । पईसा जोड़नै घर चिणासूं । बैठक, चोबारा, चोक, चौपरा में उण हेली रै हुसी । फेर थाप रो ब्याव करसूं । टाबर हुसी । फेर हूं मजूरी करणो छोड़ देसूं । बैठक मे बैठो-बैठो होको टरड़ासूं । टाबरियां री मा म्हारै खातर तीवण तीस-बत्तीस बणासी । म्हारलो छोरो रूड़ियो मनै जीमण नैं बुलावण आसी । होकै री मौज मे मूमतो हूं पैली नट जासूं । बो फेरूं आसी । हू फेरूं कै देसूं—तू चाल, हूं आऊं हूं । थोड़ी देर डहोकनै छोरै री मा आप बुलावण आसी । जणां हूं थोड़ी-सी दिखावटी रीस करनै नाड़ री लटको करतो कैसूं—अबार कोनी आऊ, होकै मे पान आ रैयो है ; तू चाल, हूं आऊं हूं ।

शेखचिल्ली रो लटको करणो हो कै घी रो घड़ो झट धरती पर आयो और फूटग्यो । घी धरती मायै फैलग्यो ।

व्यापारी देखतो-रो-देखतो रैग्यो । थोडो सावचेत हुयनै पूछियो—अरे ! ओ काई करयो ? घडो फोड दियो । घी रा पईसा कुण देसी ? शेखचिल्ली बोलियो—थारै पईसां री लाग रैयी है । म्हारो तो निठ बणियो घर ढहीजग्यो । अबै म्हारो घर कुण बांधसी ? दोनू अेक-दूसरै सू लड़ता-झगड़ता आप-आप रै मारग लागा ।

इयाल शेखचिल्ली रा मीठा सपना खारा गीतां मे बदळ ग्या । मीठा सपनां सेती उण रो मनडो कठै और-ही जागा घूमतो हो । माथै पर राखियोड़ै बोझै रो उण नै भान ही को हो नी । नाड कद हाली, कद के हुयो, उण नै काई ठा ? मीठा सपनां री बाडी में बो तो फळ तोडै हो अर खावै हो । इयांल ही भारत री आजादी रै पैली लोग राम-राज रा सपना लेयनै मोद मनाया करता पण बै सै हवा हुग्या ।

(३)

इण प्रसग मे अेक कथा और लिखनै विषय नै की गभीरता सू खुलासा करणो चाऊं हूं—

अेक गाव मे दो भाई रैवता हा । बडोड़ो व्यायोडो हो, छोटकियो कंवारो । बडोडै रै सात छोरा हा । पण सै कंवारा । भाई भी मायलै कारण सूं कंवारो रैयग्यो । चाणचकी बडोडो भाई सै नै अनाथ बणायनै चालतो रैयो । अबै घर मे रैयग्यो छोरां रो कंवारो काको, मा, अर बै सातू भाई ।

अेक दिन छोरा री मा बोली—बेटा ! थे तो अबै बडा-बडा हुयग्या, घरारी को धड़ सकै नी पन ल्होड़ियै भाई नै परणाय दो तो घर में नूई रोसणी आ जावै, पीढी चाल जावै ; हूं किताक दिनांरी हूं ? थानै भी रोटियां रो आराम हु जावै, म्हारा दिन ही यू बोल-बतळा'र सावळ कट जावै ; बहू आसी तो घर में गाज चीज आसी,

म्हारै परणीजनै आणै रै बाद आज लगै कोई बहू इण घर री देहळी नै लांघनै को आयी नी ; म्हारी मनस्या है कै छोटिये नै ब्याओ ; ब्याव हुसी , मगळा सजन-सनेही मेळ-मिनारी, पावणा-सगी घर में आसी ; मंगळ-गान हुसी , घर-री ईंट-ईंट गुणियां मनासी, हूं भी ब्याव मे कमोण-कारजां नै दे-नेयनै मन री काढसू ; अबार तांई सं रो ले-लेयनै ही पावणा रैया हा, कदै तो मनावणो भी चाहीजै , इण वास्तै छोटियै रो ब्याव कर दो; खेत में बाजड़ी-मतीरा, सिट्टा-फटी हुवै पण कुण खावै ? पड़िया ही रैवै, बेचणा पड़ै, टाबर हुवै तो खाय लेवै ; बहू तो होवती ही चोखी लागै, ये तो म्हारो कैणो मानो अर थारै छोटियै भाई नै लपेट दो ।

पैली तो सै भाया इण बात रो विरोध करियो पण मा री जिद भी मानणी पड़ै । छोरी देखनै ब्याव रच दियो । काको इण बात सू रूसग्यो कै मनै पूछियो क्यों कोनी । घणो मनायो पण काको मानियो नही अर आ जिद कर ली कै ब्याव सू पैली मनै घर मे पांती दो । आखर ब्याव तो करणो ही हो । पाती भी करणी पडी । घर रा दो टुकड़ा हुयग्या । काको न्यारो हुयग्यो । ब्याव मे बरात कोनी गयो । ब्याव हुयग्यो । बहू घरै आयगी ।

बहू नुई रोसणी री ही । आता ही घर में चानणो हुयग्यो ; चहल-पहल-सी हुयगी । आती-जाती री पायल छम-छम बाजै लागी । सातू भाया नै घणी खुसी हुयी । छऊ जेठ बहू रा लाड लडावण चोखी-चोखी चीजा लावै लागा । उण री सुख-सुविधा रो सै ध्यान राखता । मा रै मोद रो तो ठिकाणो ही कोनी रैयो, नित उठ मंगळ-कारणा लेवती । वास-गळी रा भी इण बात सू घणा राजी हुया । सुणता जिका ही इण बात नै आछी अर टैम-सारू बतावता । नुई चीज सै नै चोखी लागै ।

धीरै धीरै भाव बदळिया । सातू भाई लड मरिया । बोलणो बद कर दियो । बात के ? अेक कैवै—मैं ब्याव करियो । दूजो कैवै—म्हारी हिम्मत बिना ब्याव हुतो ही कोनी । साता रा सात मना । साता री सात पारटियां बणगी । गांव रा लोग भी कानी-कानी साता रा सीरी हुयग्या । राड बधगी । पण कांई हुवै ? मा बैठी-बैठी सै बातां देखै अर सोचै कै जे बहू नही लावती तो ही ठीक ही । क्यों तो लालजी न्यारा हुता, क्यो सातू भाई आपसरी मे लडता, क्यो न्यारा हुता, क्यों साता री सात पारटियां बणती, क्यो गाव मे भाता घलता ? पण अबै पछताया कांई हुवै ? सबै तो मीठा सपना रुळग्या । घर मे न्यारा गीत गायीजण लागग्या । बूढली मा बैठी दिन-दिन पिसतावै ।

इण काणी रै लिखणै रो सार भी ओ ही है कै मीठा सपना खारा चीता मे बदळणां ताळ को लगावै नी ।

आज भारत-मा रो हाल भी ओ हीज है । भारत आजादी नै पसद करी । टुकड़ा हुया । टुकड़ा बरदास करिया तो घर-घर मे पारटी बणगी । वैर बधग्या । प्रान्त-प्रान्त में

अर्वं शेखचिल्ली सोचण लागियो—अेक आनें री अेक मुरगी खरीदनें लासूं। मुर
ईंडा देसी। बोळी मुरगियां ■ ज्यासी। बोळा ईंडा देसी। बोळा बेचसूं। बोळा पई
आसी। पईसा जोडनें घर चिणासूं। बैठक, चौबारा, चौक, चौपरा सें उण हेली
हुसी। फेर आप रो ब्यांव करसूं। टाबर हुसी। फेर हूं मजूरी करणो छोड देसूं। बै
मे बैठो-बैठो होको ठरड़ासूं। टाबरिया री मा म्हारै खातर तीवण तीस-बत्तीस बणासै
म्हारलो छोरो रूड़ियो मनैं जीमण नैं बुलावण आसी। होकै री मौज में झूमतो हूं पै
नट जासूं। बो फेरूं आसी। हूं फेरूं कै देसूं—तू चाल, हूं आऊं हूं। थोड़ी देर उडी
छोरै री मा आप बुलावण आसी। जणां हूं थोड़ी-सी दिखावटी रीस करनें नाड
लटको करतो कैसूं—अबार कोनी आऊं, होकै मे पान आ रैयो है; तूं चाल, हूं आऊं

शेखचिल्ली रो लटको करणो हो कै घी रो घड़ो झट धरती पर आयो और फूटग्यो
घी धरती मायं फैलग्यो।

व्यापारी देखतो-रो-देखतो रैग्यो। थोड़ो सावचेत हुयनें पूछियो—अरे!
काई करयो? घडो फोड़ दियो। घी रा पईसा कुण देसी? शेखचिल्ली बोलियो-
थारै पईसां री लाग रैयी है। म्हारो तो निठ वणियो घर ढहीजग्यो। अबै म्हारो
कुण बांधसी? दोनूं अेक-दूसरै सूं लड़ता-झगड़ता आप-आप रै मारग लागा।

ख्याल शेखचिल्ली रा मीठा सपना खारा गीतां मे बदळ ग्या। मीठा सपनां से
उण रो मनडो कठै और-ही जागा घूमतो हो। माथै पर राखियोड़ै बोझ रो उण
भान ही को हो नी। नाड कद हाली, कद के हुयो, उण नैं काई ठा? मीठा सपना
वाड़ी मे वो तो फळ तोड़ै हो अर खावै हो। ख्याल ही भारत री आजादी रै पै
लोग राम-राज रा सपना लेयनै मोद मनाया करता पण वे सै हवा हुग्या।

(३)

इण प्रसग मे अेक कथा और लिखनैं विषय नैं की गंभीरता सूं खुलासा कर
चाऊं हूं—

अेक गाव मे दो भाई रैवता हा। बडोड़ो व्यायोड़ो हो, छोटकियो कंवारो
बडोड़ै रै सात छोरा हा। पण सै कंवारा। भाई भी मायतां कारण सूं कंवारो रैग्यो
धाणधणी बडोड़ो भाई सै नै अनाथ बणायनै चालतो रैयो। अबै घर मे रैग्यो छो
रो कंवारो काको, मा, अर बै सातूं भाई।

अेक दिन छोरां री मा बोली—बेटा! थे तो अबै बडा-बडा हुग्या, घरां री क
थड़ गयो नी पण म्हारीडै भाई नैं परणाय दो तो घर में नुई रोशनी आ जावै, धी
काम आवै; हूं कितरा दिनांरी हूं? थानैं भी रोटियां रो आराम ■ जावै, म्हारा दि
नी बहू सूं बोल-बतळा'र मायड़ कट जावै; बहू आसी तो घर में सात धीज आसी

योगानंदजी

—ब्रजनारायण पुरोहित—

(१)

कचेड़ी मे भगवीं अलफी पैरियोड़ा अेक महाराज आया करता हा । रंग मुसकी, मूंडी गोळ, नाक लांबो, चैरो चमकतो, आंखिया चमकदार और शरीर गठियोड़ो। अस्सी री उमर में ही रोज च्यार-पांच मील रो पैंडो करता । कचेड़ी आवण रो शौक हो इण वास्तै घणी वार उणा रा दरसण हुवा । हां ! हाथ में छड़ी री जाग्यां लो रो मोटो राखता, कोई दस बारै सेर रो । उणां रो नाम हो योगानंदजी ।

'भगवै नै आदेस है' पण उणा नै लोग सिर नमांवता बंदगी रा पूतळा समझतै । इण वात सू वै खुद वाकफ हा । वै कैया करता—मैं भगवो भेयनै भीख मांगणी सरू करी, अेक वार अेक जणे मोमो मारियो कै मोटो-तगड़ो जवान है और मांगनै खावै, इण वात सू मैं सीख ली और उण दिन सू ही भीख सूं पिंडो छुडायो । हूं निठलो बैठणवाळो थोड़ो ही हो। इण वास्तै बंदगी रो हुनर सीखनै इण शरीर नै पोसण लागो।

उणा नै बात पर बात घणी ऊकलती । वै विचारक हा । उणा रा विचार घणा सुळझियोड़ा हा । वै बहुश्रुत हा । ओछा विचारा रै दायरै सू निसरनै वै विशाल क्षेत्र मे घूमणवाळा जीव हा। हरेक सम्प्रदाय रै साधु-संता सू उणा रा भेटा हुवता ।

आप री बंदगी रै बारै मे वै कैवता—अै वैद और डागदर म्हारी बात काटै । इण वास्तै म्हारै रजिस्ट्रेशन रो सवाल आयो जद मनै इणा सूं टक्कर लेवणी पड़ी। वै मनै 'दी बनारस' मे रचावणो चावता पण मैं सगळा रै सामनै उणा नै कैयो कै हूं सगळा री लोच जाणू हूं, हूं थोड़े री कमाई नहीं खाऊं हूं, म्हारो वचन सूं काम चलाऊं हूं।

लोग उणा रै बारै मे कैवता कै बाबोजी भिनाखो अथवा संखियो फूकनै देवै है । इण रो उथळो वै दिया करता—थे टा क्यों नहीं लगावो कै हूं कांई देऊ हूं; पण अेक बात जरूर है कै जिण चीज मे मारण री सगती नहीं हुवै उण में जीवावण री सगती

भेद पड़ती लागी । भारत रा वासी नै कई है पण वैरी ज्यों व्यवहार करता देर को लगावै ही । 'अपणी-अपणी डफली अर अपणी-अपणी राग' अलापी जावै लागी । आ के आजादी आयी ? आजादी जनता नै रामराज रा देवै हा पण रामराज कठै ? जनता रै राज री बात देखणी भी हाथ कोनी लागै । इणी आजादी नै तो हाथ जोड़ लागा । मैं इण नै 'मीठा सपना, खारा मोल' बतावै लागा ।

(४)

निबंध पूरो हुयो । विद्यार्थी री सूझ नूंई ही । कल्पना नूंई ही । अभिव्यक्ति नूंई ही । विषय री मौलिकता आप रै ढंग री ही । लिखणै रो ढंग नूंवो हो । विद्यार्थी री नूंई सूझ माथै परीक्षकजी घणा राजी हुया ।

योगानंदजी

—व्रजनारायण पुरोहित—

(१)

डी मे भगवी अलफी पैरियोडा अेक महाराज आया करता हा। रंग मुसकी,
ळ, नाक लांबो, चैरो चमकतो, आखिया चमकदार और शरीर गठियोडो।
ी उमर मे ही रोज च्यार-पाच मील रो पैडो करता। कचेडी आवण रो शौक
वास्तै घणी वार उणा रा दरसण हुता। हा! हाथ मे छडी री आम्या लो रो
सिना, कोई दम बारै सेर रो। उणा रो नाम हो योगानंदजी।

गवे नै आदेस है' पण उणा नै लोग सिर नवावता बंदगी रा पूतळा समझतै।
त सू वै खुद वाकफ हा। वै कैया करता—मैं भगवो भेयनै भीख मांगणी मह
ेक बार अेक जणै मोसो मारियो कै मोटो-तगडो जवान है और मागनै खावै;
न सू मैं सीख ली और उण दिन सू ही भीख सू पिंडो छुडायो। हूं निठनो
ाळो थोडो ही हो। इण वास्तै बंदगी रो हुनर सीखनै इण शरीर नै पोमण सायो।

उणां मैं बात पर बात घणी करतनी। वै विचारक हा। उणां रा विचार पणा
पोडा हा। वै बहुश्रुत हा। ओछा विचारां रै दायरै सू निसरनै वै विसाल क्षेत्र
णआळा वीर हा। हरेक सम्प्रदाय रै साधु-सतां सू उणां रा मेळा हुता।

आप री बंदगी रै बारै मे वै कैवता—अै वैद और डाक्टर म्हारी [illegible] [illegible]।
ारनै म्हारै [illegible] रो [illegible] आयो कद मनै [illegible] सू [illegible] [illegible] [illegible]।
मै 'डी बनास' मे [illegible] [illegible] पण मै [illegible] रै [illegible] [illegible] मै [illegible]।
ा री पोथ [illegible] है, हू थारै री कमाई नहीं [illegible] है, [illegible] [illegible] सू [illegible] [illegible] हूं।

लोग उणा रै बारै मे कैवता कै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
रो उपजो वै दिया करता—[illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] है कै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भेद पणपै लागो । भारत रा वासी सैं भाई है पण वैरी ज्यों व्यवहार करता देर को लगावै नी । 'अपणी-अपणी डफली अर अपणी-अपणी राग' अलापो जावै लागो । आ के आजादी आयी ? भारतवासी सपना तो रामराज रा देखै हा पण रामराज कठै ? जनता रै राज रो नाव देखणो भी ढोंग-सो लागै । इसी आजादी नै सैं हाथ जोड़ै लागा । सैं इण नै 'मीठा सपना, खारा गीत' बतावै लागा ।

(४)

निबंध पूरो हुयो । विद्यार्थी री सूझ नूंई ही । कल्पना नूंई ही । अभिव्यक्ति नूंई ही । विषय री मौलिकता आप रै ढग री ही । लिखणै रो ढंग नूंवो हो । विद्यार्थी री नूंई सूझ माथै परीक्षकजी घणा राजी हुया ।

योगानंदजी

—व्रजनारायण पुरोहित—

(१)

कचेड़ी में भगवी अलफी पैरियोड़ा अेक महाराज आया करता हा। रंग मुसकी, मूंडो गोळ, नाक लांबो, चैरो चमकतो, आखियां चमकदार और शरीर गठियोड़ो। अस्सी री उमर में ही रोज च्यार-पांच मील रो पैंडो करता। कचेड़ी आवण रो शौक हो इण वास्तै घणी वार उणां रा दरसण हुया। हां! हाथ में छड़ी री जाग्यां लो रो मोटो रासरा, कोई दस बारै सेर रो। उणां रो नाम हो योगानंदजी।

'भगवे नै आदेस है' पण उणां नै लोग सिर नवांवता बंदगी रा पूतळा समझनै। इण बात सूं वै खुद वाकफ हा। वै कैया करता—मैं भगवा भेषनै भीख मांगणी सरू करी, अेक वार अेक जणै मोसो मारियो कै मोटो-तगड़ो जवान है और मांगनै खावै; इण बात सूं मैं सीख ली और उण दिन सूं ही भीख सूं पिंडो छुडायो। हूं निठलो बैठणवाळो थोड़ो ही हो। इण वास्तै बंदगी रो हुनर सीखनै इण शरीर नै पोसण लागो।

उणां नै बात पर बात घणी ऊकळती। वै विचारक हा। उणां रा विचार घणा सुळझियोड़ा हा। वै बहुश्रुत हा। ओछा विचारां रै दायरै सूं निसरनै वै विशाल क्षेत्र में घूमणवाळा जीव हा। हरेक सम्प्रदाय रै साधु-संतां सूं उणां रा भेटा हुता।

आप री बंदगी रै बारै में वै कैवता—अै वैद और डाक्टर म्हारी बात काटै। इण वास्तै म्हारै रजिस्ट्रेशन रो सवाल आयो जद मनै इणां सूं टक्कर लेवणी पड़ी। वै मनै 'दी बनाम' में रगड़णो चावता पण मैं सगळां रै सामनै उणां नै कैयो कै हूं सगळा री पोल जाणूं हूं, हूं धांई री कमाई नहीं खाऊं हूं, म्हारी उजन सूं काम चलाऊं हूं।

लोग उणां रै बारै में कैवता कै बाबोजी भिलावो अथवा संखियो फूकनै देवै है। इण रो उथळो वै दिया करता—थे टा क्यो नहीं लगावो कै हूं कांई देऊं हूं, पण अेक बात जरूर है कै जिण चीज में मारण री सगती नहीं हुवै उण में जीवावण री सगती

किण तरै हुवै ? हां ! भूरण-साटा और जुकाम ठीक करणआळा गोळी-गुटका हूं नहीं बणाऊं ।

(२)

उणां री कई बाता अजीब लागती । उणां रो दवाई देवण रो तरीको तीन लोक सूं न्यारो हो । उणो री प्रैक्टिस दुनियां सूं न्यारी ही । कोई रोगी उणां कनै पूगतो और इलाज करावण री बात कैवतो तो वै उण री तरफ गौर सूं देखनै पूछता—क्यों ! सगळी जागयां जा आयो ? खैर ! हूं थारो इलाज करसूं । फेर वै उण सूं थोड़ी देर बातचीत करता अर आखर मे पूछता—दवाई ऊपर घी लेसी क तेल ? घी लेवणो हुवै तो घी-हो-घी लेवणो पड़सी और तेल री इछया हुवै तो तेल-हो-तेल । आ बात सुणनै रोगी सकपकीज जावतो पण वै कैवता कै घी अथवा तेल नै गळै सूं हेठै उतारण री जिम्मेदारी थारी और पूठो बारै नहीं आवण देवण री पांटी म्हारी ।

जद कोई पूछतो कै घी कींकर खावणो तो वै कैवता कै खीचड़ी में, लापसी में, रोटी में, दाळ मे, मीठै में और थारी मरजी हुवै तो गुटकै-गुटकै; पण अेक शर्त है कै जीमतै वखत, जीमण रै अेक घंटो पैलां ताई और जीमण रै तीन घंटा बाद ताई पाणी पीवण री सकत मनाई है; इण बात रो पाळण करणो घणो जरूरी है ।

अेक बार अेक रोगी पूछियो कै तेल किसो लेऊं ? उणा उथळो दियो कै घासलेट और मोबिल-आयल नै छोडनै हरेक तेल चलै जिण सूं कपडो चीकणो हुय जावै । कारण ओ है कै आपां नै तो कपडो (शरीर रो मायलो भाग जिको कपड़ो ही है अेक तरै सूं) चीकणो करणो है । थोड़ी देर बाद उण रोगी पूछियो कै दूध पियो जावै तो ? इण बात पर वै झट बोलिया—तनै ठा हुवैला कै गळनै सूं चायै जित्तो दूध छाण लो पण गळनो चीकणो नहीं हुवै और जे घी पावनो ही छाणा तो वो झट चीकणो हुय जावै; इण वास्तै घी लेवणो चाईजै ।

उणां री दवाई ऊपर खानपान मे, ऊपर लिखियोड़ी बाता रै सिवाय, की परेज नी हो । गुड़-खटाई री मनाई वै को करता नीं । वै कैवता कै म्हारी दवाई ऊपर कैरी रो अचार ई मनाई कोनी ।

दवाई देवणी सरू करण सूं पैला वै फीस रै नांव अेक नोट लेवता, मुगो-छम्म बिच्छू छापोड़ो (सौ रुपियांआळो) ।

(३)

उणां रै हाथ में जस हो । वै रोगी नै दवाई लेवण री तरकीब ई समझावता । दवाई रै गाळै माय सूं अेक गोळी बनै पैला गुड़ मायनै बतावता, पछै उण में देवता ।

अेक बार उणां बदहजमी रै अेक रोगी रो इलाज करियो। दवाई देवण सू पैलां उण नै पूछियो कै घी री किसी मिठाई रो शौक है? उण उथळो दियो कै खावण रो शौक तो घणो ही मोतीपाक रो है पण हूणै कुण खवावै? आ सुणनै उणां कैयो कै अेक वडो घूमचो मोतीपाक रो वळवाय लै, खवायै घी रो, म्हारी दवाई मोतीपाक सागै ही दिरीजसी।

बै कंवता कै रोगी नै जिण चीज रो शौक हुवै उण चीज सागै ही दवाई देवणो चायीजै; कारण ओ है कै ठीक हुयां पछै वो उण चीज नै खावण री इच्छा करसी ईज, और वे कदास पछै खायां नुकसाण हुय जावै तो? इण वास्तै पैलां सू ही बा चीज खवावणी।

श्रीमती टैम और जीमनै बाद मे पाणी नहीं पीवण रै बारै मे बै तर्क देवता कै बवै मैं गिटण नै जित्तै पाणी री जरूरत हुवै उत्तै रो जुगाड तो प्रकृति आपे-ई कर देवै—कवै मैं चावण सू गिटण लायक कर देवै; और देखो तो सही कै इण बात रो ध्यान तो जिनावरां तक नै हुवै, खावती वेळा बै पाणी नहीं पीवै।

बै कंवा करता कै जिनगी आपै मरै, बेमारी-मेमारी मे वणै जितै ताई मूंडो चलावता ही रैवै; इत्ती अकल तो डांडा में ही है कै थोड़ी-मोड़ बेमारी हुतां ही बै चारै-पाणी मे मूडो ही नही मारै, ताय नै ले सुवाळो हुय जावै तो बा चांदो खावणो ही बद कर देवै, चरणो तो बंद करै ही।

(४)

बै वैदराज कै पैला आदमी मांचै मैं डालै और फेर मांचो आदमी नै पकड़ लेवै।

बै घणी वार कैया करता कै आदमी उण बखत ताई बीं दिन बखत ताई उण रै मन मैं मरण री नहीं आवै। जिण रोगी रै मन मे मरण री बात बस जावै, फेर उण नै कोई ठीक नहीं कर सकै। अेक बार बै अेक इसै ही रोगी नै देखण नै गया। बो कई दिनां सू बेमार हो। बै उण कनै बैठग्या और बातचीत करता-करता पूछियो— काई खावण-पीवण री मन में आवै है?

'है महाराज! म्हारी तो काई इच्छा कोनी।'

'काई पैरण-ओढ़ण री?'

'नहीं महाराज!'

'काई खेल-तमासो देखण री? अथवा और कोई इच्छा?'

'अबै काई देखूं ... ... [illegible]'

किण तरै हुवै ? हूं ! भूरण-नाटा और दुकान ठीक करणवाळा मोठी-गुरका हूं नहीं बणाऊं ।

(२)

उणां री कई बातां अजीब लागती । उणां रो दवाई देवण रो तरीको तीन लोक सूं न्यारो हो । उणां री प्रैक्टिस दुनिया सूं न्यारी ही । कोई रोगी उणां कनै पूगतो और इलाज करावण री बात कैवतो तो बै उण री तरफ गौर सूं देखनै पूछता—क्यों ! सगळी जागयां जा आयो ? खैर ! हूं थारो इलाज करसूं । फेर बै उण सूं थोड़ी देर बातचीत करता अर आखर में पूछता—दवाई ऊपर घी लेसी क तेल ? घी लेवणो हुवै तो घी-ही-घी लेवणो पड़सी और तेल री इच्छा हुवै तो तेल-ही-तेल । आ बात सुणनै रोगी सकपकीज जावतो पण बै कैवता कै घी अथवा तेल नै गळै सूं हेठै उतारण री जिम्मेदारी थारी और पूठो बारै नहीं आवण देवण री म्हारी ।

जद कोई पूछतो कै घी कींकर खावणो तो बै कैवता कै खीचड़ी में, लापसी में, रोटी में, दाळ में, मीठै में और थारी मरजी हुवै तो गुटकै-गुटकै; पण अेक शर्त है कै जीमतै वखत, जीमण रै अेक घंटो पैला ताईं और जीमण रै तीन घंटां बाद ताईं पाणी पीवण री सखत मनाई है; इण बात रो पाळण करणो घणो जरूरी है ।

अेक बार अेक रोगी पूछियो कै तेल किसो लेऊं ? उणां उथळो दियो कै घासलेट और मोबिल-आयल नै छोडनै हरेक तेल चलै जिण सूं कपड़ो चीकणो हुय जावै । कारण ओ है कै आपां नै तो कपड़ो (शरीर रो मायलो भाग जिको कपड़ो ही है अेक तरै सूं) चीकणो करणो है । थोडी देर बाद उण रोगी पूछियो कै दूध पियो जावै तो ? इण बात पर बै झट बोलिया—तनै ठा हुवैला कै गळनै सूं थावै जित्तो दूध छाण ला पण गळनो चीकणो नहीं हुवै और जे घी पावालो ही छाणा तो बो झट चीकणो हुय जावै; इण वास्तै घी लेवणो चाीजै ।

उणां री दवाई ऊपर खानपान में, ऊपर लिखियोड़ी बातां रै सिवाय, की परेज नी ही । गुड़-खटाई री मनाई बै को करता नी । बै कैवता कै म्हारी दवाई ऊपर कैरी रो अचार ई भलाई खाओ ।

दवाई देवणी सरू करण सूं पैला बै फीस रै नाव अेक नोट लेवता, मूगो-छम्म विच्छू छापोड़ो (सौ रुपियाआळो) ।

(३)

उणां रै हाथ में जस हो । बै रोगी नै दवाई लेवण री तरकीब ई समझावता । दवाई रै गाळै मांय सूं अेक गोळी करनै पैलां खुद खायनै बतावता, पछै उण नै देवता ।

अेक वार उणां बदहजमी रै अेक रोगी रो इलाज करियो । दवाई देवण सूं पैलां उण नै पूछियो कै घी री किसी मिठाई रो शोक है ? उण उथळो दियो कै खावण रो शोक तो घणो ही मोतीपाक रो है पण हणें कुण खवावै ? आ सुणनै उणां कैयो कै अेक वडो मूमचो मोतीपाक रो ढळवाय लै, सवायै घी रो; म्हारी दवाई मोतीपाक सागै ही दिरीजसी ।

वै कैवता कै रोगी नै जिण चीज रो शोक हुवै उण चीज सागै ही दवाई देवणी चायीजै; कारण ओ है कै ठीक हुयां पछै वो उण चीज नै खावण री इंछ्या करसी हीज, और जे कदास पछै खायां नुकसाण हुय जावै तो ? इण वास्तै पैलां सू ही वा चीज खवावणी ।

जीमनी टैम और जीमनै बाद ये पाणी नहीं पीवण रै बारै मे वै तर्क देवता कै कवै नै गिटण नै जितै पाणी री जरूरत हुवै उतै रो जुगाड़ तो प्रकृति आपे-ई कर देवै—कवै नै चावण सूं गिटण लायक कर देवै; और देखो तो सही कै इण वात रो ग्यान तो जिनावरा तक नै हुवै, खावती वेळां वै पाणी नहीं पीवै ।

वै कैया करता कै मिनख आपे मरै; बेमारी-सेमारी मे वणै जितै ताई मूंडो चलावता ही रैवै; इत्ती अकल तो ढांढां में ही है कै थोड़ी-सीक बेमारी हुतां ही वै चारै-पाणी मे मूंडो ही नही मारै; गाय नै जे मुवाळो हुय जावै तो वा चांटो खावणो ही वंद कर देवै, चरणो तो वंद करै ही ।

(४)

वै कैवता कै पैलां आदमी मांचे नै हालै और पेर मांचो आदमी नै पकड़ लेवै ।

वै घणी बार कैया करता कै आदमी उण वखत ताई चोखो जिण वखत ताई उण रै मन मे मरण री नही आवै । जिण रोगी रै मन मे मरण री बात जम जावै, फेर उण नै कोई ठीक नहीं कर सकै ! अेक बार वै अेक इसे ही रोगी नै देखण नै गया । वो कई दिना सू बेमार हो । वै उण कनै बैठग्या और बातचीत करता-करता पूछियो— कांई खावण-पीवण री मन में आवै है ?

'हैं महाराज ! म्हारी तो कांई इंछ्या कोनी ।'

'कांई पैरण-ओढण री ?'

'नहीं महाराज !'

'कांई खेल-तमासो देखण री ? अथवा और कोई इछ्या ?'

'अबै कांई देखां ?------सब कुछ तो समझ्यो देख लियो ।'

किण तरै हुवै ? हां ! पूरण-खाटा और जु
वणाऊ ।

(=

उणां री कई वातां अजीब लागती । ट
सूं न्यारो हो । उणां रो प्रैक्टिस दुनियां सू ग
इलाज कराबण री वात कैवतो तो वै उण
सगळी जाग्यां जा आयो ? खैर ! हु थारो
वातचीत करता थर आखर में पूछता—दवा
हुवै तो घी-ही-घी लेवणो पड़सी और तेल रो
सुणनै रोगी सकपकीज जावतो पण वै कैवता
उतारण री जिम्मेदारी थारी और पूठो बारै

जद कोई पूछतो कै घी कीकर खावणो
रोटी मे, दाळ मे, मीठै मे और थारी मरजी
जीमतै वखत, जीमण रै अेक घटो पैलां ताई
पीवण री सखत मनाई है; इण वात रो पाळ

अेक वार अेक रोगी पूछियो कै तेल कि
और मोबिल-आयल नै छोडनै हरेक तेल चलै
कारण ओ है कै आपां नै तो कपड़ो (शरीर
तरै सू) चीकणो करणो है । थोडी देर वाद
इण वात पर वै झट बोलिया—तनै ठा हुवै
पण गळनो चीकणो नही हुवै और जे घी पा
जावै; इण वास्तै घी लेवणो चाईजै ।

उणां री दवाई ऊपर खानपान मे, ऊपर
नी हो । गुड़-खटाई री मनाई वै को करता
रो अचार ई भलाई खावो ।

दवाई देवणी शरू करण सूं पैला वै पं
बिच्छू खायोड़ो (सो रुपियाआळो) ।

(-

उणां रै हाथ में जस हो । वै रोगी नै ट
रै माळै माथ सूं अेक मोटी करनै पैसा ...

सुख ? मैं भगवा लिया है ससार रा दुख छोडण नैं; इण वास्तै दुख-दुख छोड दिया, अबै सुख भोगसूं।

वै डरता किण सू ही कोनी। खरो कैवण मे वै अचूक हा। वै कम बोलता पण बोलता जद सुणणिया उणा सू प्रभावित हुया विना नी रैवता। अेक वार किणीं उणा नै पूछियो कै धोळा क्यो आवै ? वै हंसिया और कैयो कै माथै नै घणो रगडियां सू धोळा आवै; जिको माथै सू काम ही नी लेवै उण रै धोळा नी दीसै। और धोळा सूं किसो बुढापो गिणीजै ? भेड रै जलम सू ही धोळा हुवै और बकरी रै मरै जितै काळा-रा-काळा ही रैवै, धोळा नी हुवै।

जीवण रै आखरी दिना मे वै सवंथा निरळेप हुयनै रैवण लागग्या। आप री जायदाद सू मोह हटायनै वै निश्चिन्त हुयग्या और दो-अेक दिना री साधारण हरारत सू ही इण ससार सू विदा हुयग्या।

ओ उथळो सुणनै वै उठै सूं उठनै पाधरा बारै गया परा। उण रै घरआळा सागै गया और दवाई री बात पूछी। जद उणां झट कैयो—म्हारी दवाई कीं काम नी कर सकै अबै; जिण नैं संसार री कैई चीज में आसक्ति ही कोयनी और जिको आ बात झाल बैठियो है कै अबै मनै मरणो है, उण नै कुण बचाय सकै ?

आ कैय नै वै आप रै थानै-मुकानै गया।

वै खुद की विशेष जीमता और कैवता कै ओ शरीर तो बोरी है, इण नै तो भरता जावो ठूंस-ठूंसनै; फेर बोरी बिना सायरै ही ऊभी रैसी; और खाली बोरी ? .... वा ऊभी नही हुय सकै।

खावण-पीवण रै विषय री उणां अेक घटना सुणायी—हूं जवान हो जद मनै घूमण रो सौक हो; रोटी खायनै अेक गांव सूं टुरतो अर दूसरै गांव मे पाणी पीवतो। अेक दिन घणी खोटी हुयी। सदा ज्यो टुरियो पण गांव नही आयो सो नही आयो। घर-कूचा, घर मजलां करता-करतां सूरज विसूजग्यो। सिंझया पड़गी। आखर अेक झूंपड़ो निजर आयो। हूं खायो-खायो उठै गयो और झूंपड़ै रै बारै ऊभै बेली कनै पाणी मांगियो पीवण खातर। वो मांय सूं गूणियो लायो अर पाणी पावण लागो। हू डकळ-डकळ पीवतो गयो अर गूणियो खाली। वो दूजो भरनै लायो और दूजो ही खाली। आ देख नै वो रोळा करतो गांव कानी भाजियो। हूं ही लारै नाठो। इण वास्तै यो गिरळावण लागो। इत्तै मे ही गांवआळा कई जणा भेळा हुयग्या। बात किण रै ही समझ में कोनी आयी। आखर मैं उणां नै समझाया कै ओ म्हारै सूं डरतो भाजियो है बदाग। मनै भून समझियो है इण बेली। हूं भूत-पलीत नही हूं, मिनख हूं। तिस घणी ही इण वास्तै पाणी की विशेष मायो। आ सुणनै उण बेली रै सांस मे सांस आयो। वै उठनै म्हारै हाथ लगायो—आ देखण नै कै हूं मिनख हूं अथवा नही।

(५)

गोगानन्दजी दुनिया घणी देखी ही। वै कैवता कै जे ग्यान में पूरण हुवणो हुवै तो 'कचेड़ी-मोक' में रिवणो। गीता रो पूरो ग्यान इण मोक में मिलै। कोट-कचेड़ी-आळा तो [illegible] हुवै।

वै कैवता कै [illegible] भाखा आपरी [illegible] उण रै मुण्डा रो [illegible] दूर बसता रैवै। इण कारणै उण नै बोलणी पड़ै और [illegible] करता पड़ै पण मातृभाषा कदैई नीं भूलीजै। "ऊ------ऊ [illegible]! ---ऊ------ऊं [illegible]! ऊ------ऊ मा! ...." वै [illegible] हैं [illegible] ही रैगी।

[illegible]

[illegible]

सुख ? मैं भगवा लिया है संसार रा दुख छोडण नैं; इण वास्तै दुख-सुख छोड दिया, अबै सुख भोगमू ।

बै डरता किण सूं ही कोनी । खरी कैवण मे बै अचूक हा । वै कम बोलता पन बोलता जद सुणणिया उणा सू प्रभावित हुया विना नी रैवता । अेक बार किणी उणा नै पूछियो कै धोळा क्यों आवै ? बै हसिया और कैयो कै माथै नै घणो रगडिया सू धोळा आवै; जिको माथै सू काम ही नी लेवै उण रै धोळा नी दीसै । और धोळा सूं किसो बुढापो गिणीजै ? भेड रै जलम सूं ही धोळा हुवै और बकरी रै मरै जितै काळा-रा-काळा ही रैवै, धोळा नी हुवै ।

जीवण रै आखरी दिना मे बै सवंथा निरळेप हुयनै रैवण लागग्या । आप री जायदाद सू मोह हटायनै बै निजोखमा हुयग्या और दो-अेक दिना री साधारण हरारत सू ही इण ससार सूं विदा हुयग्या ।

श्रो उथळो गुणनैं वै उठै सूं उठनैं पायरा बारै गया परा। उण रै घरआळा सागै गया श्रोर दवाई री बात पूछी। जद उणां झट कैयो—म्हारी दवाई की काम नी कर सकै अबै; जिण नै संसार री कोई चीज मे आसक्ति ही कोयनी श्रोर जिको आ बात झाल बैठियो है कै अबै मनै मरणो है, उण नै कुण बंचाय सकै ?

आ कैय नै वै आप रै थानै-मुकानै गया।

वैं खुद की विशेष जीमता श्रोर कैवता कै श्रो शरीर तो बोरी है, इण नै तो भरता जाश्रो ठूंस-ठूंसनै; फेर बोरी विना सायरै ही ऊभी रैसी; श्रोर खाली बोरी? ···· वा ऊभी नही हुय सकै।

खाश्रण-पीश्रण रै विषय री उणां अेक घटना सुणायी—हूं जवान हो जद मनै घूमण रो शौक हो; रोटी खायनै अेक गाव सू टुरतो अर दूसरै गांव मे पाणी पीश्रतो। अेक दिन घणी खोटी हुयी। सदा ज्यों टुरियो पण गांव नही आयो सो नही आयो। घर-कूचा, घर मजला करता-करता सूरज विसूजग्यो। सिभया पड़गी। आखर अेक झूपड़ो निजर आयो। हूं खायो-खायो उठै गयो श्रोर झूंपड़ै रै बारै ऊभै बेली कनै पाणी मागियो पीश्रण खातर। वो माय सू गूणियो लायो अर पाणी पाश्रण लागो। हूं डकळ-डकळ पीश्रतो गयो अर गूणियो खाली। वो दूजो भरनै लायो श्रोर दूजो ही खाली। आ देख नैं वो रोळा करतो गाव कानी भाजियो। हूं ही लारै नाठो। इण वास्तै वो गिरळाश्रण लागो। इत्तै मे ही गावआळा कई जणा भेळा हुयग्या। बात किण रै ही समझ मे कोनी आयी। आखर मैं उणा नै समझाया कै श्रो म्हारै सू डरतो भाजियो है कदास। मनै भूत समझियो है इण बेली। हूं भूत-पलीत नही हूं, मिनख हूं। तिस घणी ही इण वास्तै पाणी की विशेष भायो। आ सुणनै उण बेली रै सास मे सास आयो। वै उठनै म्हारै हाथ लगायो—आ देखण नैं कै हूं मिनख हू अथवा नही।

(४)

योगानदजी दुनिया घणी देखी ही। वै कैवता कै जे ग्यान मे पूरण हुश्रणो हुवै तो 'कचेड़ी-लोक' मे विचरो। गीता रो पूरो ग्यान इण लोक मे मिलै। कोट-कचेड़ी-आळा तो निर्लेप हुवै।

वै कैवता कै जिकी भाषा मणनैं सीखीजै उण रै भूलण रो डर हर वखत रैवै। इण वास्तै उण नैं घोखणी पड़ै श्रोर अभ्यास करणो पड़ै पण मातृभाषा कदेई नी भूलीजै। "ऊं·········ऊं खोटो! ····ऊं·········ऊं थाळी! ऊं·········ऊ मा! ·········" नै घायै जित्ता ही वरसा बाद पूछ लो, याद ही रैसी।

योगानदजी अेक हवेली मोल ली श्रोर उण में रैवण लागा। अेक बार अेक जणी तानो मारियो जद उणां उथळो दियो कै भगवा लेयनै संसार रा दुख छोडीजै अथवा

कालो चसमो

—दामोदरप्रसाद—

यूरोप और उत्तरी अमरीका रै उत्तरी देशां में बरस में नव महीना जमीन बरफ री सफेदी सूं ढकियोड़ी रेवै । अबर धुंध और झीणा बादळां सूं दूधिया लखावै । सूरज री हळकी रोसणी भर झळकै । पण सूरज उत्तरी गोळार्ध मे प्रवेश करै तो यूरोप रा बर्फाणी देशां मे गरमी री सुखदायी मौसम आवै । हिमखंडा री बरफ झरणां रै मिस ढाळ मे ढळै । इणी गळी-अधगळी बरफ रै ऊपर सूरज री तेज रोशनी पड़ै तो मौसम-बहार रा सैलानियां री आंखियां पर 'चमचमाट' करती बरफ रो पळको पड़ै अर यूरोप रा सैलानी काळा चसमा धारण कर घूमण नै निकळै । आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड रा तटवासी समुद्र-स्नान रै खातर भरी-दोपारी मे निकळै तो काळा चसमा लगायनै निकळै जिण सूं आंखियां री धूप सूं रक्षा हुवै और समंदर रो दरसाव भी सुहावणो लखावै ।

यूरोप वगैरा देशां मे काळा चसमा खास जरूरत रै कारण वापरीजै । गरम देशां मे सा'ब लोग धूप रै बचाव ताणी इण रो उपयोग करै । पण हिंदुस्तान री अजब माया है; अठै कोई नूई बात फैशन बणनै आवै और रूढ़ि बणनै जड़ां जमा बैठै । बिलायती बाबुवां रै मुखड़ै अर फिल्म-जगत रा अभिनेतावां रै दीदार पर काळै चसमै री सजावट देखनै भारत रा नौजवानां रै भी इण बात रो जनून सवार हुयो अर कालेजां रै विद्यार्थी-वर्ग मे लकीर री फकीरी नसीब हुयी ।

आज शहर री सड़कां पर, गांव री दुकानां मे, होटलां और होस्टलां मे, कॉलिजां मे सजावणहार काळा चसमाधारी फैशन-परस्त बाबू लोगां री भीड़-भाड़ देखीजै । दिन भर री मेहनत कर कमावणहार मजूरां री 'सलाम' सूं लेयनै ठेकेदार अफसरां रै 'चैंपू' तांई इण री पुग है । ग्यारह-बारह महीनां सेठी कर पेट-भराई [illegible] सेयनै [illegible], नकली बही-खाताधारी व्योपारियां तांई इण रो राज है । [illegible]-नियम-धारी, पांच टैम माळा फेरणिया पंडा-पुजारियां सूं लेयनै [illegible] तांई इण रो अद्भुत आसन है । चोटी-टोपीवाळी, [illegible]

चेढा रोपो, मत बूंट उपाड़ो

—सौभाग्यसिंह शेखावत—

चेढा रोपो, मत बूंट उपाड़ो
राली सीओ, मत गुदड़ी फाड़ो
बाग लगाणो मत घण दोरो
विधूंस मचाणो सरळो सोरो

सींव-नींव [illegible] मत फोड़ो
गाठो, साधो, बाधो, जोड़ो
कण-कण जुड़ियां मण वण जावै
तिणको सिढ़ै थोगदो हुय जावै

ऊनण दीठा मत घड़ियो ढोळो
फरड़ो बांग फाड़ दे भोळो
ठग-लकड़ी रो गयो जमारो
मोपो ढोबर मत-ना धारो

कर मे निधमी बात बतावै
घी-पाणी मोटो चपरावै
पूरो तोलो, मत टस्का मारो
थोथा चोड़ा मत [illegible]

लिना मोगड़ो [illegible] देवै
दीड़ी [illegible] बण कर लेवै
[illegible] रो बादू छोड़ो
जबर बड़ो, मत ऊमड़ दौड़ो

अणगढ़ाळा मेनावा है पण भी इण रो कोई इलाज नहीं है। गांधी पूर्णा नो गुर बापू भोला रै कनै भी इण रो कोई जवाब नहीं है।

काळा चसमाधारी बाबुवां रै घूर-घूरनै देखणै सूं सहर थारै पानरी लुगाई परेसान है और काळा चसमाधारी मोटरसाइकल-सवारां सूं चौरट रो ट्रैफिक-पुलिस-कर्मचारी भी हैरान है। अे मोटर में स्वार देखणआळा मोटरसाइकल-सवार किणी सूं टकराजै अथवा इणां रै मारग में कोई बूढ़ो-बाळक आ जावै तो कैवता देर भी नीं लगावै—अबे! अंधा है क्या, देखके चल!

धावणै लागे अंधः हरितं हरितं पश्यति—साहित्य री अलंकारोक्ति में कैवा तो काळा चसमाधारी बाबुवां नै सगळै 'सगळी' आकार ही निजर आवै। वे सावण में भी सुगनो देखै। यथार्थ रै भी बदरंगा कोरै। उणां नै सफेद चीज भी काळी, रंगदार भी बदरंग, लगावै। प्रकाश में भी अंधकार-सो मालूम पड़ै। और रात री टैम तो 'अथेन तमसावृत' री उक्ति चरितार्थ हुवै। उणां पर 'कलर ब्लाइंड' रो आक्षेप भी लगायो जा सकै है।

कई लोग काळो चसमो आदत रै मुजब लगावै तो कई फैसन रै खातर। कई सजावट रै खातर काम लेवै तो कई रोब दिखावण वास्तै इण री दरकार समझै। काळो चसमो व्यक्तित्व चमकावण में मददगार है तो नेत्र-दोषां नै छिपावण में सहायक भी। नेत्र-रोगां रै प्रति तो काळो चसमो कवच-सो लाभकारी है। 'पादेन खञ्जः' री भांत 'चक्षुषा काणः' भी अंग-विकारां में आवै। अेक विकार रै योग में संस्कृत व्याकरण री तृतीया विभक्ति अपणे-आप चाली आवै इयांई 'अेकाक्षो' खातर काळो चसमो भी। समाज में आंधो मिनख तो दया और सहानुभूति रो पात्र है, 'सूरदास' रै मिस आदर और श्रद्धा रो पात्र भी, पण काणै रै प्रति समाज में क्रूरता और कुटिलता रा भाव निहित है। 'सूण-सास्तर' में भी काणै रो दरसण चोखो नीं मान्यो है, इण वास्तै काणा आदमी उपहास और व्यंग रा पात्र रैया है। इण सगळी बातां री रामबाण ओखद है काळो चसमो।

तुर्की रो क्रांतिकारी कमालपाशा काळै चसमै रो प्रेमी हो। मुसोलिनी अर तोजो जिसड़ा डिक्टेटर भी काळो चसमो धारण करया करता हा। मौलाना आजाद, राजाजी और जाकिर हुसेन भी इण रा प्रेमी हुया है।

आंख रै काळै चसमै रो आविष्कार यूरोप में हुयो और भाग्यमाळा रै काळै चसमै रो ईजादकर्ता भारत है। इण साधारण काळै चसमै सूं ज्यादा त्रासकारी है भाग्यमाळा रो काळो चसमो। इण में साधारण काळै चसमै रा अेब तो सगळा है पण गुण अेक भी कोनी। इण रो परिणाम भी दूरगामी हुवै और पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकसित हुवै। भारत देस रो इतिहास इण बात रो साखी है।

स्वामी दयानंद सरस्वती मूर्तिपूजा, बाळविवाह, छूआछूत जिसड़ी सामाजिक बुराइयां रो विरोध करनै स्त्री-शिक्षा आदि रै समर्थन में सुधारवादी कदम उठाया तो

पुराण-पंथी लोग इणी काळे चसमे नै चढाय नै आर्यसमाज मूं टक्कर ली और राजा राममोहन राय रो भी इणी वास्तै विरोध हुयो। प्रार्थनासमाज, ब्रह्मसमाज और वेदान्तसमाज नै इण काळे चसमे रै कारण आफतां उठाणी पडी। महात्माजी रै सत्याग्रह और स्वराज्य रो भी अेक अरसे ताई विरोध हुयो। जिन्ना सा'ब और उणां री संस्था मुस्लिम लीग इणी 'द्विराष्ट्रवादी' काळे चसमे नै लगायनै पाकिस्तान री मांग करी और अंत में भारत रो विभाजन हुयो और दंगा-फसाद हुया। अे सब भावनात्मक काळे चसमे री काळी करतूतां ही। आज भी अनेक लोग अंग्रेजी रै मद में भूलिया थका देसी भाषावां री हंसी उडावै और राजस्थानी रो विरोध करै।

आज रूढिवादी, पुराणपंथी लोगां री आंख सूं उठनै काळे चसमे री करतूतां नही रीमणी री औलादां, तथाकथित सुधारवादियां और समाजवादी नेतावां पर भी उतर आयी है। पुराणपंथी रूढिवादी समाजसुधार री हर बात रो विरोध करता, उणी तरै आज समाजवादी सुधारक हर पुराणी बात रो विरोध काळो चसमो लगाय नै आज मोंयनै करै। वे भारत री हर बात नै इंगलैंड, अमरीका, रूस अथवा चीण री निजर सूं देखै। इण वास्तै काळे चसमे रा रंग-रूप भी बदळग्या है; अबै लाल और पीळै रंग रा चसमा भी आयग्या है। विदेशां रै प्रति आपां री अंध-भक्ति इण कदर बधगी है कै मेह भलांई मास्को में बरसो, छत्तो आपां भारत में ताणां, भलांई अठै अकाळ माफ क्यों नी हुवो। काळे चसमे रै पाण बंबई नै हालीवुड, दिल्ली नै लंदन, कळकत्ते नै मास्को बणायनै देखां और भारत नै यूरोप रो मुलक समझां।

जरा मेहरबानी राखो भाई सा'ब! आप काळे चसमे रै चसकेदार चक्कर में हो! आप नै यथार्थ रो ठा नीं है। जरा अेकर उतारनै कोरी आंखियां सूं इण देस नै देखो—ओ इंगलैंड कोनी, अमरीका कोनी, रूस कोनी, चीण कोनी ; ओ भारत है।

घणणआळा नेतावां रै पास भी इण रो कई इलाज नहीं है। साची पूछो तो खुद बाबू लोगां रै कनै भी इण रो कोई जवाब नहीं है।

काळा चसमाधारी बाबुवां रै घूर-घूरनै देखणै सूं सड़क मायं चालती लुगायां परेशान है और काळा चसमाधारी साइकल-सवारां सूं चौराहे रो ट्रैफिक-पुलिस-कर्मचारी भी हैरान है। अै सफेद नै स्याह देखणआळा साइकल-सवार किणी सूं टकरावै अथवा इणां रै मारग में कोई बूढो-बाळक आ जावै तो कंवता देर भी नी लगावै—अबे ! अंधा है क्या, देखके चल !

थाळणे मासे अंध: हरितं हरितं पश्यति—साहित्य री अलंकारोक्ति में कैवां तो काळा चसमाधारी बाबुवां नै सगळै 'असंगति' अलंकार ही निजर आवै। बै सापरत मे भी सुपनो देखै। यथार्थ मे भी कल्पना कोरै। उणा नै सफेद चीज भी काळी, रपदार भी बदरग, लखावै। प्रकाश में भी अंधकार-सो मालूम पड़ै। और रात री टैम तो 'अंधेन तमसावृत' री उक्ति चरितार्थ हुवै। उणा पर 'कलर ब्लाइंड' रो आक्षेप भी लगायो जा सकै है।

कई लोग काळो चसमो आदत रै मुजब लगावै तो कई फैशन रै खातर। कई सजावट रै सारू काम लेवै तो कई रौब दिखावण वास्तै इण री दरकार समझै। काळो चसमो व्यक्तित्व चमकावण मे मददगार है तो नेत्र-दोषां नै छिपावण में सहायक भी। नेत्र-रोगां रै प्रति तो काळो चसमो कवच-सो लाभकारी है। 'धादेन खज:' री भांत 'चक्षुषा काण:' भी अग-विकारा मे आवै। अेक विकार रै योग मे संस्कृत व्याकरण री तृतीया विभक्ति अपणै-आप चाली आवै इयाई 'अेकाक्षी' खातर काळो चसमो भी। समाज मे आंधो मिनख तो दया और सहानुभूति रो पात्र है, 'सूरदास' रै मिस आदर और श्रद्धा रो पात्र भी, पण काणै रै प्रति समाज मे क्रूरता और कुटिलता रा भाव निहित है। 'सूण-सास्तर' मे भी काणै रो दरसण चोखो नीं मान्यो है, इण वास्तै काणा आदमी उपहास और व्यंग रा पात्र रैया है। इण सगळी बाता री रामबाण औखद है काळो चसमो।

तुर्की रो क्रांतिकारी कमालपाशा काळै चसमै रो प्रेमी हो। मुसोलिनी अर तोजो जिसड़ा डिक्टेटर भी काळो चसमो धारण करया करता हा। मौलाना आजाद, राजाजी और जाकिर हुसेन भी इण रा प्रेमी हुया है।

आंख रै काळै चसमै रो आविष्कार यूरोप में हुयो और भावनावां रै काळै चसमै रो ईजादकर्ता भारत है। इण साधारण काळै चसमै सूं ज्यादा चालकारी है भावनावां रो काळो चसमो। इण में साधारण काळै चसमै रा अेब तो सगळा है पण गुण अेक भी कोनी। इण रो परिणाम भी दूरगामी हुवै और पीढी-दर-पीढी विच्छिन्न हुवै। भारत देस रो इतिहास इण बात रो साखी है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती मूर्तिपूजा, बाळविवाह, छुआछूत जिसड़ी सामाजिक बुराइयां रो विरोध करनै स्त्री-शिक्षा आदि रै समर्थन मे सुधारवादी कदम उठाया तो

कपड़ा राखण री काच री अलमारी में गोरकी रो ओवरकोट और कपड़ा अेक छुय-फुटे तकड़े फौजी री पोसाक जिसा हा। अलमारी मे नीचै अेक जोड़ो ऊंचा बूंट राखियोड़ा हा और खूंटियां माथै फेल्ट री नाइट-कैप और रेलबाबू रै जिसा दो टोप हा। खूणै मे अेक ऊभो बेन हो। सामलै पासी अलमारी मे गोरकी नै भेंट मे मिली सामग्री मे हिंदुस्तानी मूर्तियां और पीतळ री कळा रा फूलदान हा। इणां रै अलावै हाथीदांत, चमड़ो, रेसम, लकड़ी, चांदी, सीप आदि री अनेक फूठरी चीजां राखियोड़ी ही जिका चीण, फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देशां री ही। सोवण रो कमरो और रैवण रो कमरो अेक ही हो, कारण लिखतां-लिखतां थाकेलो आवतां ही सारली आराम-कुरसी और छोटी मेज-कुरसी माथै उणां नै नींद मे उठनै लिखण री आदत ही। कमरै मे अेक काठ-फूटो पलंग हो जिको माड़ो और सफेद ऊनी-सूती चादरां सू ढकियोड़ो हो। मेज रै सिराणै कनै छोटी-नीक मेज माथै गोरकी रै पुत्र मैक्सिम री तसवीर ही। आ बात नैणां मे जळ भरतां उणां री जोड़ायत म्हांनै विशेष रूप सू बतायी।

गोरकी आपरी कमरा में नीचली मजल माथै रैवता, कारण गून रो दौरै और दमै री शिकायत हुवण सू ऊपरली मजल माथै आवणो मना हुवगो हो। बातां-ही-बातां में सदागदा देखणोड़ा म्हांनै बतायो कै गोरकी दिन भर मोटा सू लिखतो [illegible] [illegible], लाबा, नैणा मे आप रा नोट ले लिया करता और लिखण री [illegible] [illegible] मोट मेज माथै राखनै लिखता आवता। [illegible] [illegible] संवार करता, और लिखाई रो काम पूरो हुतां ही [illegible] [illegible] देता, और अदीनसार मैं [illegible] काम रै [illegible] [illegible] री [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] और [illegible] मैं [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] लगावता और टट्टा-मसखरी करता। [illegible] [illegible] [illegible] री [illegible] मे पुर करता। आप री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ही। [illegible] रा [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible]।

साहित्यकारां रो तीरथ : गोरकी रो घर

(म्हारी मास्को री साहित्य-यात्रा रो उतरार्ध)

—रामनाथ व्यास 'परिकर'—

मैक्सिम गोरकी रो नाव संसार रा मोटा साहित्यकारां में सिरै गिणीजै। म्हे म्हारी जिग्यासा नैं पूरी करण सारू गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान में उणां री पोती सूं मिलण नै गया। म्हारा गुजराती भायला श्री अतुल सवानी सागै हा। सोवियत्स्काया कल्तूरा (सोवियत संस्कृति) समाचार-पत्र री संवाददाता कुमारी लेविना इण आयोजन री सगळी व्यवस्था करी।

मैक्सिम गोरकी रै नाव जिसो ऊंचो और ओपतो उणां रो घर रूस रै सगळा सूं बडै रईस रो महल हो। घर में बडता ही मैक्सिम गोरकी रै बेटै री बहू नदाज्दा मैक्सिम पेश्कोवा और गोरकी री पोती घणै आदर सूं म्हां लोगां री अगवाणी करी। पूरो घर अेक स्मारक रो रूप है, जिण री देखभाळ अेक संग्रहालय रै रूप में करीजै।

मांय बडता ही घर रै आंगणै में खुलता दो हाल (बडा कमरा) है, अेक में गोरकी रो साधना-स्थळ और दूजै में उणां रो निजी पुस्तकालय है। गोरकी री साधना अेक मोटी और ऊंची मेज मार्थ हुती, कारण वै अेक फेफड़ै रा मिनख हा और राजयक्ष्मा रा रोगी हा। उणां रै छव फुटै कद रै माफक जमी सूं तीन फुट ऊंची कुरसी मार्थ सीधै बैठण रो डाक्टरी सलाह मुजब आ रचना ही। मेज री कोई खास साज-सजावट नहीं ही, अेक कलम राखण री लकड़ी री ट्रे, दो पैड पानां रा, अेक दो खणां रो दवातदान, रंगबिरंगी पेन्सलां राखण खातर लकड़ी मार्थ लाख रै काम री गिलास—बस आ ही ऊंची मेज री सामग्री ही। मेज रै डावैं हाथ मार्थ कई पोथियां अर नोट हा अर अेक ट्रे राखियोड़ी ही।

मेज रै नीचै अेक मोटी टोकरी रद्दी सारू ही। कुरसी रै लारै अेक लांबी कांच री अलमारी में किताबां रो भंडारो भरियोड़ो हो। डावै हाथ पासी अेक घणी मोटी कांच री खिड़की बाग में झांकती ही, जिण मार्थ पड़दो नीं हो। कमरै रै दो दरवाजां मांय सूं दूजो दैवन रै कमरै में खुलै। जीवणै हाथ वाळी मोटी मोट-हुटी

कपड़ा राखण री काच री अलमारी में गोरकी रो ओवरकोट और कपडा अेक छ्त्र-फुटे तकड़ै फौजी री पोसाक जिसा हा। अलमारी मे नीचै अेक जोडी ऊंचा बूंट राखियोडा हा और खूटिया मार्थ फैल्ट री नाइट-कैंप और रेलबाबू रै जिसा दो टोप हा। खुणै मे अेक ऊची वेन ही। सामलै पासी अलमारी मे गोरकी नै भेंट मे मिली सामग्री मे हिंदुस्तानी मूर्तियां और पीतळ री कळा रा फूलदान हा। इणां रै अलावै हाथीदांत, चमडो, रेसम, लकड़ी, चादी, सीप आदि री अनेक मूठरी चीजां राखियोडी ही जिका चीण, फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देशां री ही। सोवण रो कमरो और रैवण रो कमरो अेक ही हो, कारण लिखता-लिखता थाकेलो आवता ही सारली आराम-कुरसी और छोटी मेज-कुरसी मार्थ उणा नै नींद मे उठनै लिखण री आदत ही। कमरै मे अेक आठ-फुटो पलग हो जिको सादो और सफेद ऊनी-सूती चादरा सू ढकियोडो हो। सेज रै सिराणै कनै छोटी-सीक मेज मार्थ गोरकी रै पुत्र मैक्सिम री तसवीर ही। आ बात नैणा मे जळ भरता उणा री जोडायत म्हांनै विसेष रूप सू बतायी।

गोरकी आखरी बरसा में नीचली मजल मार्थ रैवता, कारण खून रो दौरै और दमै री सिकायत हुवण सू ऊपरली मजल मार्थ जावणो मना हुयग्यो हो। वातां-ही-वातां में मदाज्दा पेश्कोवा म्हांनै बतायो कै गोरकी दिन भर लोगां सू मिलती वगत कारखाना, गावां, मेला में आप रा नोट ले लिया करता और लिखण री वगत सगळा नोट मेज मार्थ राखने लिखना आवता। क्यं-क्यंई नोटां मार्थ लाल-नीला सैनाण करता, और लिखाई रो काम पूरो हुतां ही सगळा नोट रद्दी री टोकरी मे भर देता, और अदीतवार नै बारै, बाग रै बीचूबीच, उणा री होळी जगावता। सगळा टाबरा नै और दोस्ता नै बुलावता और मेवा रा पत्ता सागै मोटी कैंपफायर-सी लगावता और ठट्ठा-मसखरी करता। बगीचै में मेवा रा पौधा री समाळ वै खुद करता। आप री कुहाडी सू मकान रा जगळा मे लकड़ काटण रो सोक उणा नै घणो हो। बरफ रा खेल खेलता और घूमता रैवता।

आगण रै पार मीचै री मजल मे गोरकी रो निजी पुस्तकालय हो, जिण मे ग्यारह मेर भीत री जागा काच री अलमारियां पोथियां सू भरी-ठसी ही। बीच मे थंदाकार आबनूस री मोटी मेज ही जिण रै च्यारू मेर मोकळी कुरसिया ही। अठै री घणकरी पोथियां मार्थ गोरकी रै हाथ रा सैनाण और किनारै रा हासिया मार्थ टीपा लिखियोडी मिलै। घणो खुसी री बात आ है कै इण पोथिया री टीपा मार्थ गोरकी रै दिमाग और चिन्तन री खोज सारला बीस बरसा सू बरोबर हुय रही है। भारत रा रवीन्द्रनाथ टाकुर और गांधीजी बाबत कई टीपा इण री बानगी दे मिलै जिणा मार्थ लोकप्रबन्ध इण दिना गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान रा विद्वान त्यार करता हा। इण रै अलावा भारत-संबधी, कई दूजी पोथिया रा, इण टीपा हा जिका मे रोम्यां रोलां री पुस्तक महात्मा गांधी री मूळ प्रति और स्वामी विवेकानन्द री जीवणी, जिकी

साहित्यकारां रो तीरथ : गोरकी रो घर

(म्हारी मास्को री साहित्य-यात्रा रो उतारो)

—रामनाथ व्यास 'परिकर'—

मैक्सिम गोरकी रो नाम संसार रा मोटा साहित्यकारां में गिणीजै। म्हे म्हारी मिणसा नै पूरी करण सारू गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान में उणां री पोथी सूं मिलण नै गया। म्हारा गुजराती भायला श्री अतुल सवानी साथै हा। सोवियतस्काया कल्तूरा (सोवियत संस्कृति) समाचार-पत्र री संवाददाता कुमारी लेविना इण आयोजन री सगळी व्यवस्था करी।

मैक्सिम गोरकी रै नाम जिसो कणो और ओपतो उणा रो घर रूस रै सगळा सूं बडे रईस रो महल हो। घर मे बड़ता ही मैक्सिम गोरकी रै बेटै री बहू नदाज्दा मैक्सिम पेश्कोवा और गोरकी री पोती घणै आदर सूं म्हा लोगां री अगवाणी करी। पूरो घर अेक स्मारक रो रूप है, जिण री देखभाळ अेक संग्रहालय रै रूप में करीजै।

मांय बड़ता ही घर रै आंगणै में खुलता दो हाल (बडा कमरा) है, अेक मे गोरकी रो साधना-स्थळ और दूजे मे उणा रो निजी पुस्तकालय है। गोरकी री साधना अेक मोटी और ऊंची मेज माथै हुती, कारण वै अेक फेफड़ै रा मिनख हा और राजयक्ष्मा रा रोगी हा। उणां रै छव फुट कद रै माफक जमी सूं तीन फुट ऊंची कुरसी माथै सीधै बैठण री डाक्टरी सलाह मुजब आ रचना ही। मेज री कोई खास साज-सजावट नहीं ही, अेक कलम राखण री लकडी री ट्रे, दो पेड पानां रा, अेक दो खणां रो दवातदान, रंगबिरंगी पेन्सलां राखण खातर लकड़ी माथै लाख रै काम री गिलास—बस आ ही ऊंची मेज री सामग्री ही। मेज रै डावैं हाथ माथै कई पोथियां अर नोट हा अर अेक ट्रे राखियोडी ही।

मेज रै नीचै अेक मोटी टोकरी रद्दी सारू ही। कुरसी रै लारै अेक लांबी काच री अलमारी में किताबां री कतारां लागियोड़ी ही। डावैं हाथ पासी अेक घणी मोटी काच री खिड़की बाग मे झांकती ही, जिण माथै पड़दो नी हो। कमरै रै दो दरवाजां मांय सूं दूजो रैवण रै कमरै में खुलै। जीवणै हाथ पासी मोटी आठ-फुटी

कपड़ा राखण री काच री अलमारी मे गोरकी रो ओवरकोट और कपड़ा अेक छुप-फुटै तकडै फौजी री पौसाक जिसा हा। अलमारी मे नीचै अेक जोड़ो ऊंचा बूंट राखियोड़ा हा और खूंटिया माथै फेल्ट री नाइट-कैप और रेलबाबू रै जिसा दो टोप हा। खुणै में अेक ऊंची बेंन ही। सामलै पासी अलमारी मे गोरकी नै भेंट मे मिली सामग्री मे हिंदुस्तानी मूर्तिया और पीतळ री कळा रा फूलदान हा। इणां रै अलावै हाथीदात, चमड़ो, रेसम, लकड़ी, चादी, सीप आदि री अनेक फूठरी चीजां राखियोड़ी ही जिका चीण, फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देसा री ही। सोवण रो कमरो और रैवण रो कमरो अेक ही हो, कारण लिखता-लिखता थाकेलो आवता ही सारसो आराम-कुरसी और छोटी मेज-कुरसी माथै उणा नै नींद मे उठनै लिखण री आदत ही। कमरै मे अेक आठ-फुटो पलंग हो जिको सादो और सफेद ऊनी-सूती चादरा सू ढकियोड़ो हो। सेज रै सिराणै कनै छोटी-सीक मेज माथै गोरकी रै पुत्र मैक्सिम री तसवीर ही। आ बात नैंणा में जळ भरता उणां री जोड़ायत म्हानै विशेष रूप सू बतायी।

गोरकी आखरी बरसा में नीचली मजल माथै रैवता, कारण खून रो दौरै और दमै री सिकायत हुवण सू ऊपरली मजल माथै जावणो मना हुयग्यो हो। बातां-ही-बातां में मदाम्दा पेश्कोवा म्हानै बतायो कै गोरकी दिन भर लोगा सू मिलती वगत कारखानां, गावां, खेता में आप रा नोट मे लिया करता और लिखण री वगत सगळा नोट मेज माथै राखनै लिखता जावता। कणै-रणैई नोटां माथै लाल-नीला निसाण करता, और लिखाई रो काम पूरो हुता ही सगळा नोट रद्दी री टोकरी मे भर देता, और अदीतवार नै वारै, बाग रै बीचूबीच, उणा री होळी जगावता। सगळा टाबरा नै और दोस्तां नै बुलावता और सेवा रा पत्तां सागै मोटी कैंपफायर-सी लगावता और ठट्ठा-मसखरी करता। बगीचै में सेवा रा पौधां री संभाळ वै खुद करता। आप री बुढ़ापी सू नजीक रा जगळा मे कम पाटण रो सौक उणां नै घणो हो। बरफ रा खेल खेलता और घूमता रैवता।

भवण रै चार मीचै री मजल मे गोरकी रो निजी पुस्तकालय हो, जिण मे क्याक मेर भीत री आगा काच री अलमारियां पोथियां सू अटी-टटी ही। बीच मे अंडाकार आबनूस री मोटी मेज हो जिण रै क्याक मेर मोकळी कुरसियां ही। घणै री घणकरी पोथियां माथै गोरकी रै हाथ रा निसाण और किनारै रा हासिया माथै टीपा लिखियोड़ी मिलै। घणी खुसी री बात आ है कै इण पोथियां रो टीपां माथै गोरकी रै दिमाग और चिंतन री सोध लारला कोस बरसां सू बरोबर हुर र्‍यी है। भारत रा रवींद्रनाथ टागुर और गांधीजी बाबत केई टीपां इणां री कलम रे लिखै जिण मन्नै सोधप्रबंध उण दिसा गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान रा विद्वान त्यार करता हा। इण रै अलावै भारत-संबंधी, कई दूजी पोथियां रा, सब उठै हा जिण मे रोम्यां रोलां री पुस्तक महात्मा गांधी री मूळ प्रति और स्वामी विवेकानंद री जीवनकथा, जिकै

गोरकी नैं भेंट में मिली ही, म्हांनै दिखायीजी । शोध रो दूजो विषय देश-विदेश रैं हजारां साहित्यकारां, राजनेतावां अर कलाकारां सूं हुयोड़ो गोरकी रो पत्रव्यवहार है। इण विषय में रूसी, अंग्रेजी और दूजी भाषावां में गोरकी रा पत्र छप चूका है। लेनिन रैं सागै गोरकी रो दोस्तानो हो। ओ पत्र-व्यवहार भी गोरकी-साहित्य रो अेक प्रमुख अंग है।

आंगण सूं ऊपर जावण रो रस्तो रूस री भवन-निर्माण-कळा रो जीवतो-जागतो चितराम है। भवन रो मालक रूस रो मोटो रईस हो जिकै इटली रा कारीगरां सूं पगोथिया री नाळ और हाथ धरण रो लैरदार सायरो बणवाया हा। हरयै रंग रैं मकराणै में रगबिरंगी धारियां री समुद्री लैर रो ओ कटकड़ो म्हारै जीवण में जोयोड़ी अदभुत कळानिधि ही। आजकाल इण नाळ नैं काम में नहीं लायीजै, जिण सूं बारलै पासी लोव री नाळ मायंकर म्हे ऊपरली मंजल में गया, जठै खाणै री मेज म्हारै स्वागत में सजी-सजायी त्यार ही। भात-भात रा पदारथां में रूस री चैरी, सेवा और फळा रा मुरब्बा, चटणियां, अर मोठी-नमकीन डबल-रोटियां, गोरकी री मनभावण, म्हारी भी भावण वणगी ही। 'समोवर' में राखियोड़ी चाय और मनभावता फळा रा रस पाणी री ठौड़। दही, दूध, माखण, पनीर, सूका मेवा, सैंत, साप री छतरिया, आलू री पापड़िया और कासा (दळियो) भारतीय मैमानां री विशेष भोजन पैली सूं ही त्यार हो।

ऊपरली मजल में अेक वडो कमरो साहित्यकारां रैं चितरामा सूं च्यारू मेर सजियोड़ो हो। भारत रैं प्रेमचदजी रो साधारण-सो फोटू वतावता श्रीमती पेश्कोवा म्हानै कैयो कै अमृतरायजी वादो तो करियो पण आ सौगात भेजी। प्रेमचद रो सोवियत-संघ में विशेष सनमान है,—कारण बै जन-समस्यावां रा लेखक और जनवादी द्रष्टा गिणीजिया है। चतुर्वेदीजी इण वात रो कौल करियो कै वोरै कैनवास मायं रंगीन चित्र सग्रहालय खातर अमृतरायजी नैं कैयनै भिजवासी। जनवादी साहित्यकारां में तमिळ और तेलुगू रा सोवियत क्राति रा दिनां में छपियोड़ा ट्रैक्ट और पुस्तिकावां अठै घणा संभाळनै राखियोड़ा है। हरेक मुलक री पोथियां, जिकी गोरकी रैं हाथा मांयकर निकळी और जिणा रा अनुवाद गोरकी करवाया, अठै सार-संभाळ सूं राखियोड़ी है।

सीख री वगत गोरकी-भंवन री इण साखीणी सुगाया रै सागै म्हा गोरकी रै साहित्यकार नैं सीस नवायो।

घणो हेत टूटण नै

—नरेंद्र भानावत—

मिनख रो हिरदो भांत-भात री भावनावां सूं रंगियोड़ो है। उण में रस भी है और रीस भी, लाड भी है और लड़ाई भी। समय पायनै सै भावनावां आपणो रूप और शक्ति प्रगट करै। सब सूं जबरो और रूपाळो रूप प्रेम-भावना रो है, सब रै सार्थ हेताळू बणण री मनोभावना रो है। हेत में जादू भरियोड़ी ताकत छिपी रवै। वा थाकियोड़ा मना में दौड़ण री हूंस भर दै, निराशा री अंधेरी गळियां में आशा रो सूरज चमकाय दै। ससार रा सै प्राणी हेत री बूंद सूं भीजियोड़ा है।

आपणी गृहस्थी रो काई रूप है ? धणी-धणियाणी हेत री डोर सूं बंधियोड़ा है। टाबरां री किलकारी उण डोर नै और घणी रूपाळी अर मजबूत बणावै। मा-बाप, भाई-बैन सै मिलनै गृहस्थी री फुलवाड़ी नै गैरी सींचै और हरी-भरी बणावै। सगळां रै हिरदै में हेत रो रेळो वैवै। हेत रै कारण हीज बेटी नै विदा देती वगत मा रो हिवड़ो भरीज आवै, हेत रै कारण हीज भाई रै परदेस जावती वगत बैन री आंखियां गीली हुय जावै, हेत रै कारण हीज मरवण ढोले री प्रतीक्षा में काग उडाय-उडाय नै थाक जावै—

बांहड़ियां वे थकियां काग उड़ाइ उड़ाइ।

हेत हीज सीता नै राम रै सागै बन में भेजी और दसरथ नै तड़फा-तड़फाय नै मरण पुगायो। हेत री लो लागण रै कारण-हीज मीरा कैवण लागी—

मेरे तो गिरधर गोपाळ दूसरो न कोई।

और कबीर अमरता री अनुभूति करण लागिया—

हरि न मरै, हम काहे को मरिहैं।

प्रेम मे वा शक्ति छिपियोड़ी है जिकी मिनख नैं देवता वणाय दै। नामी कवि मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम रो वखाण करतां कैयो—

मानुस पेम भये बैकूंठी। नाह त काह, छार अेक मूठी॥

प्रेम रै प्रभाव सूं ही मिनख दिव्य वणग्यो अन्यथा अेक मूठी खाक सूं वत्ती उण री कीमत कोनी।

रैती नै रूपो वणावण री ताकत प्रेम में है। प्रेम लोहै नैं मोम वणाय दै। जिका तरवार सूं वस मे नी हुय सकै वै प्रेम री मार सू वसवर्ती वण जावै। प्रेम रै गूंद सूं सै मिनख आपस में जुड़ जावै। प्रेम नी हुवै तो सै मिनख आपस में लड़नै कट-मरै। कौरव और पाडव प्रेम री कमी रै कारण आपस में लड़िया और खतम हुया। पृथ्वीराज और जयचद री फूट भारत री दुर्गति रो कारण वणी।

प्रेम री आ सारी महमा कद है ? जद प्रेम आपणी सीमा और मर्यादा में रैवै ; वो धीरै-धीरै वधतो-वधतो दृढ और स्थायी वणै। जिको प्रेम अेकदम वधनै गैरो रूप ले लेवै उण रै उतरण रो खतरो उत्तो ही वध जावै। 'ढोला-मारू रा दूहा' में इण भाव रा घणा सटीक दूहा है—

डूंगर केरा वाहळा ओछां केरा नेह।
वहता वहइ उतावळा, झटक दिखावइ छेह॥

पहाडी नाळा अर ओछा पुरषां रो प्रेम वैवता तो घणी तेजी सू वैवै पण तुरंत ही आप रो अंत दिखाय दै। दूजो दूहो है—

प्रिय छोटा रा अेहवा, जेहा काती मेह।
आडवर अति दाखवइ, आस न पूरइ तेह॥

भागहीणां रा प्रियतम काती मास रै मेघ रै जिसा हुवै जिका आडवर तो घणा दिखावै पण वरसनै आसा पूरी कोनी करै।

आपणा वडेरा आप रै जीवण रै अनुभवां नै लोकोक्तियां और कहावतां में गूथनै अमर वणाया है। अेक कैवत है—घणो हेत टूटण नै, मोटी आख फूटण नै, अर्थात घणो प्रेम टूटण खातर हुवै। जिण मे सीमा सू घणो हेत हुवै वो कदै-न-कदै विरोध मे बदळ जावै। इण भाव नै तीव्र दरसावणआळो अेक कैवत अंग्रेजी भाषा में है—friendship that flames, goes out in a flash. संस्कृत भाषा री लोकोक्ति है—अति सर्वत्र वर्जयेत्। इण भाव नै प्रकट करणआळी राजस्थानी भाषा में कैवत है—घणी वरी पण गुन नीं आवी।

इण लोकोक्तियां सूं आपां नै प्रेम रो साचो मरम समझणो चाहीजै। अेहा लोगां री कमी कोनी जिका हेत करनै उण रो वेजा फायदो उठावै, पण आखर में तो दव।

नें दुख हीज देखणा पड़ें। कई अवसर ताकणिया लोग भला मिनखां सूं संबंध जोड़नें उणां रा मित्र बणें, माहो-माय घणो हेत वधावें, आपणो काम सारें और पछें मूंडो फेर देवें तक कोनी। अैड़ा लोगां सूं सचेत रैवण री जरूरत है। उणां री जाळसाजी और नकली विवहार सूं समाज में अविश्वास और अशांति वधे।

हूं अैड़ी दो लुगायां नें जाणूं हूं जकी आमें-सामें रैवती ही। दोनां में घणो हेत हो। अेक-दूजी नें देखियां वगैर उणां रें गळें पाणी तक नी उतरतो। वै सदा साथें रैवती। उठणो-बैठणो, खावणो-पीवणो, सीवणो-पिरोवणो सौ साथें-साथें चालतो। दोनूं सहेलियां बैनां ज्यों रैवती। आपस में आपो खोल वातां करती। अेक दिन छोटी सहेली वातां-ही-वातां में बडी बैन नें आप रें घर रें गैणां-गांठां रो सगळो भेद बता दियो। रात पड़ियां दोनूं रोजीनें री भांत कनें-कनें सूती। रात रो पैलो पोर वातां में वीतियो। पछें छोटी नें तो नींद आयगी पण बडी री आंखियां आगें तो वो चमचमाट करतो गैणो तिरतो हो। वा चुपकें-सी उठी, छोटी रें सिराणें सूं कूंचियां रो झूमको उठायो, पेटियां रो संभाळो लियो और सगळो गैणो-गांठो काढ आप रें घरें जाय खूणें में पड़ियोड़ें पिंडारें रै मांय लुकाय दियो। परभात हुतां-हुतां दोनूं सहेलियां रें घणें हेत रो ओ फळ हुयो!

घणो हेत लोभ रें रूप में बदळ जावें जद घणो दुखदायी बण जावें। धन रें प्रति घणो हेत मिनख नें जिनावर बणाय देवें। दूजां री संपत्ति हड़पणें री कोसीसां में उण नें जेळ री हवा खावणी पड़ें। पेटू मिनख नें मुफतियो खाणो मिल जावें तो वो ठूंस-ठूंसनें पेट नें पिटारो बणाय दें और मोटो पड़-पड़ अकाळ-मौत रो भागीदार बणें। रस रें खातर घणो हेत भंवर नें कंवळ मांय बांध राखें, रूप सूं घणा रीझियोड़ें पतंगां नें बळबळती लौ में बळणो पड़ें, संगीत री माधुरी में डूबियोड़ें हिरणां नें तीर रो घातक वार सहणो पड़ें। फेर मिनख रो काई कैणो? वो तो सबद, रस, रूप, गंध, परस आदि सगळां रो धणी है।

हेत रो उचित उपयोग विवेक विगर कोनी करीज सकें। विवेक नें छोड़ नियो हेत करें वै सफळ कोनी हुय सकें। काची ऊमर में घणो हेत करणियां धोखो खावें, वै आप रें अमोल जीवण नें बरबाद कर देवें, आप रें जीवण-लक्ष्य सूं दूर जाय पड़ें।

अेक जवान छोरी म्हारें पाड़ोसी रें छोरें कनें आया-जाया करती। आवती जद उण रें धरां में पौर देवती, घुटक-घुटक घणी वातां करती। *आयें बरस* राखी बांधती। घरवाळा दोनां नें भाई-बैन ज्यों समझता। पण माड़ा रा लोग उणां रें हेत रो खोटो अरथ लगावता और तरें-तरें री वातां बणावता। आखता दोनूं बदनाम हुवण लागिया। जे दोनूं हेत री सीमा और मरजादा में रैवता तो आ दशा कोनी बणती।

मिनख नै हर बात री अधिकता सूं बचणो चाहीजै । कैवत है—घण जायां कुळ-हाण, घण बूठां कण-हाण । घणी संतान हुवण सूं वंश री हाण हुवै और घणै बरसण सूं फसल नै हाण पूगै । घणो संतान और घणी बिरखा किणी काम री कोनी । प्रेम रो क्षेत्र भी ऐड़ो हीज है । घणो लाड-प्यार करण सूं टाबर बिगड़ जावै, घणा झूठा आश्वासन देवण सूं राजनेता रो क्षेत्र हाथ सूं निकळ जावै, घणै पकण सूं आम सड़ जावै, घणी खांचण सूं डोरी टूट जावै—घणी खांची टूटै । इणी भांत घणो हेत दुसमणी मोल लावै—घणो हेत लड़ाई रो मूळ ।

हेत सूं स्वारथ भी जुड़णो चायीजै । स्वारथ रो सिपाही हेत री हद नै उळांघ लै जद उण री मरजादा टूट जावै । हेत रै नाळै नै आप री हद में हीज बैवणो चायीजै ।

सह-अस्तित्व

—अन्नाराम सुदामा—

(१)

गाय, भैंस, घोडा और गधा साव अणसैंधी, अेकदम ओपरी और अजाण धरती पर उछळ-उछळ अठखेल करता, मस्ती मे चरता रोज देखो। सूध तो सूध री जागा, सुखी और सोरा किसाण। स्वतन्त्रता-सुख री इण सुगध सू ही तो आ धरती आनदमयी और जयंवती वणै। अे ही नहो, मौको पड्यां मोर और साप, हिरण और बाघ जिसा जलमजात विरोधी वर्ग आप रै सभाव नै बीसर'र सागै रै सकै।* आश्रमा मे तो इसी मगळ-छवि बारू मास ही विराजमान ही। वाकई वा रूपछवि मिनख री सगळा सूं ऊची साधना-भूमि सू जलमी और जुडी ही, उण मे पशुआं री विशेषता को ही नी। 'फळाहारी बाबा आश्रम', 'मानव सेवा आश्रम' और 'हरिजन हितकारी आश्रम' रा टगियोड़ा इसा साइनबोर्ड तो अवार भी महानगरां रै काळजै में, जठै सिनेमाघर, दारू रा ठेका और मर्यादा री हत्या पर मचळता मीनाबजार मडै, नेता, बाबा और समाज-सुधारका री निजर नीचै कठै-कठै ही नही, घणा ही, जिसकै पण उणा रै मायली मैलवाई रा किवाड नही खुलै तो ही ठीक है।

सिंघ और बकरी बारू मास अेक घाट पाणी पीवता, रामराज री इसी कल्पना तो अवार किताबा री काया मे ही जीवती लाधै—'रहहिं अेक सग गज पचानन' और 'खग मृग सहज बयरु बिसराई'—इतिहास रो इसो खुलो खजानो मिनख नै विवेक रै हाथा सू लूटणो चाईजै। पण आज रो मसीन-प्रेमी ओ दुरगो जिनावर उण अस्तित्व रै खीर-सागर नै सदेह री दृष्टि सू ही नही देखै पण कूडो और कपोल-कल्पित समझ उण नै कूरण मे न्हाखियोड़ो है और आप रै अह री मैली, मूगली और मद भरिया नै

---

* कहलाने अेकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
  जगत तपोवन सो कियो, दीरघ दाघ निदाघ ॥—बिहारी

मिनख नै हर बात री अधिकता सूं बचणो चाहीजै । कैवत है—घण जायां कुळ-हाण, घण बूठां कण-हाण । घणी संतान हुवण सूं वंश री हाण हुवै और घणै बरसण सूं फसल नै हाण पूगै । घणी संतान और घणी बिरखा किणी काम री कोनी । प्रेम रो खेत्र भी अंडो हीज है । घणो लाड-प्यार करण सूं टाबर बिगड़ जावै, घणा झूठा आश्वासन देवण सूं राजनेता रो खेत्र हाथ सूं निकळ जावै, घणै पकण सूं आंबा सड़ जावै, घणी खांचण सूं डोरी टूट जावै—घणी तांणी टूटै । इणी भांत घणो हेत दुसमणी मोल लावै—घणो हेत लड़ाई रो मूळ ।

हेत सूं स्वारथ नी जुड़णो चायीजै । स्वारथ रो सिपाही हेत री हद नै उळांघ लै जद उण री मरजादा टूट जावै । हेत रै नाळै नै आप री हद में हीज वैवणो चायीजै ।

हुवै, वै समर्थ है तो जावै गुप्त वर्मै; पण बठै मिरकै ही कठै। फेर तो धरती री आबादी री समस्या गुळगी ही पडी है। भगवान नै आ ही माळा फेरो कै धणखरा समर्थ और सीग ऊगियोड़ा चांद पर जावै परा और गरीब सपूता री जवानी मुक्त हुय'र सोरा सास लेवै।

(२)

सह-अस्तित्व सू म्हारो मुतलब ओक पर-धरमी जात दूसरी सागै, ओक काळो ओक गोरै सागै, ओक आदिवासी ओक नूवै सागै, ओक साम्यवादी ओक गैर-साम्यवादी सागै सावळ वास कर माण सू ओक-सै हक-हकूका री छाया मे वसै, सार्थ सू साथो मिला'र चाल सकै। सोषण री वात है कै धरती पर आयोडो आदमी धरती छोड'र कठै जावै। डूबो-खाड करै का फासी खा'र मरै ? धरती पर रैवण नै दो पावडा जागा पावै का नी ? और वा सोरै सास कोई देवणो को चावै नी, सह-अस्तित्व रा कोरा प्रस्ताव पास करया तो की वटै नही।

लका ससार रै नक्से मे अंगूठो टिकै जित्तो देश है, वो आयै दिन भारतीया नै गोदाम सू विकी री बोरया निकाळै ज्यो निकाळ दै। बोरया तो वापडी निर्जीव है, अठै तो सजीव रो हाल ही बेहाल है। बर्मा काल ताई आपणै घर रो ही ओक सूबो हो, आज उण भारतीया नै, कोई हरयै खेत सू गधा नै काढै जिया, काढ दिया। धन-माल जबत, वो पडयो रस्तो, धूकीजै जितो धूको कठै ही। किसीक वात है ! जर्मनी यहूदिया नै, अर अगरेजा दक्षिणी अफ्रीका मे इसी राफडलीला घाली कै आणै धरती माथै गोरा काळा रा गाव ही न्यारा वसता हुवै। कबीर रै शब्दा मे* आणै गोरा रै आवण रो रस्तो ही न्यारो हुवै। काळा री खाल वासती हुवै और गोरा कोई सोनै री मीगणी करता हुवै ! नीग्रो अमरीकन नै ऊभो ही को सुवावै नी, आवै-नी कठै ही छिया पडगी और कोढ लागग्यो तो किसीक हुमी ? आयी तो ही छाछ नै, वणगी धिरियाणी ! इगलैंड री रक्षा खातर लडो, कटो, मरो हिंदुस्तानी, मौज लूटो और मजा करो अगरेज ! खावण नै सूर लूटीजण नै पाडा ! जोर धीगाणो और सोधापणो किसोक ? ससार रै इतिहास मे कठै मिल इसो अनूठो उदाहरण ? ओ सह-अस्तित्व किता दिन निभै ?

पैला धूवै जिकै री गाय, गाय दूवो भलां ही किण री ही। अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमरीका, जटैई पोल साधी, धम बंटया। अगरेज उणां रा दूजा भाईबंध। बठै रै मूळवास्या नै कूट-पीट'र काढ दिया, रैवण दिया तो डायरा सू ही माड़ा कर परोटया और अजं उण सापण ही लाटी सू जियाई धरावै जाणै वै सै ओवड री भेड़ा

---

* जे बाम्हण तू बामणी जाया, आन बाट काहे नहिं आया।
जे तुरक तूं तुरकणी जाया, भीतर खतना क्यू न कराया।

सोह-मीहणी नावी और पा रै दूध-नी लिटीन माने । इण रो मूळ कारण, उण री भावना लिखियोड़ी है कोरै गुण पर और आत्मा उण री आधी उधार पर, आधी हवा पर । इंट: उण री टेक्नोलिजम रै बाथ पर ज्यादा और मानखै रै प्रेम पर कम । ध्यान उण रा टेलीफोन पर ज्यादा और गरीब, अनहद रै दुखी मुख पर कम । आगी चेतना उण री अणागत लेखा में कोई तावमात्र, और प्रोपेगंडा में बेहद । इण नातर ही तो अेक धर्म दूजै धर्म नावे, अेक पंथ दूजै पंथ नावे, अेक राष्ट्र दूजै राष्ट्र नावे, अेक पार्टी दूजी पार्टी नावे, अेक वाद (साहित्यिक हुवो चावै राजनीतिक) दूजै वाद नावे सावळ गुणताई सूं लिखणा ओला हुयग्या । लिखै है, मरता-हुवता, पण सगै री मात्र रो पाई भरोगो, अठै ही घोटै-नी स्वार्थ रो भार वध्यो, गुट री रोटी में लिखताव कम माल्यो (Interest clash) तो गजू गटै भेग मारता गाळ ही लिसी ? आ समस्या गणित री नहीं, इण भांत जुग री मर उण मे जनम्यै मानखै री है । सै देवै, नै मांगै, माय रा माय घूळै, कोसीस कम रांडो घणो ही करै । घणी दाघा जासो पीगड़ो मना ही, गुवरण नै कठै ?

जुग री बात चालगी जद कैणो पड़ै, जुग तो जुग ही है; जितो तराजो थोड़ो, जितो भुगतारो ज्यादो काम, बस, कतार इसी ही है कै है आधो, बाकी चमत्कार नै नमस्कार तो करणो ही पड़ै । सिनेमा मे सागै पड़्या जिसै तो घर बस्योड़ो, बारै नीकळ्या पछै माडी-सी छणगी, तलाक, घर ईसो सावळो हुयग्यो कै दोनू दोरा-दोरा ही को मातं नी पण मोको पड़्यां भाषण तो सह-अस्तित्व रा ही छाटसी । टैम ही संक्चर री है अबार ।

इण जुग मे आदमी जद चाद पर आप-रा गोरा, पगहीण चरणारविंद राख दिया और बठै बसण री वात करण लागग्यो तो आ बात अचभै री तो काई ठा है क नहीं पण आशका री जरूर है । हू सोचू, जिको आदमी अठै सिचळो को बस सकै नी बो चाद पर जावतो ही सूधो देवता बण जासी, आ कम ही जचै; कम काई, डोळियो देखतां तो जवण नै जायां ही कठै ? महल री मीडी पर बैठ्यो कागलो हस हुयो आज ताई तो किण ही को सुण्यो नी, आगै ठाकुरजी जाणै । बठै पूगणआळा मे हुसी तो कोई अमरीकी सिरदार ही, का कोई रूसी, का कोई अगरेज मावड़ी रो जायो ही । धरती पर, अेक-दूजै नै देख्या तो जिका री आख्या मे लूण वरसै और बठै पग धरता ही उणां रै नैणा मे नेह री नदी ऊमड पड़सी, आ किया बणै ? बठै भी तो अठली कमाई रा पुद्गळ ही काम करसी । अमरीका आप री वाड़ वधासी और रूस आप री । अगरेज रा वाळ्ळो पग तो इण कामा मे धरती पर नामी रैयोड़ा है । वाड वधाणी सावळ तावै नी आयी तो दोना में लड़ाई रा लाडू तो वाट ही देसी । कंवण रो मुतलब, बठै गया पछै ऊगियोड़ा सीग और वधसी और वै आपस मे अळूझया विना को रैसै नी । फेर का तो ऊपर फैक्यै काकरै-सा सै पाछा ही नीचै, और का सारै साथ रा राजी-खुसी रा समचार आवणा ही ओखा, बठै ही पापो पाप समोसमा । राम करै इसी नही

द्रोपदी रै चीर-सी सांवटीजै ही नही। लिप्सा री खाय समझ री खाड़ मे लाग्यां पछै सारै उवरै अणसमझ री राख, बा नागाई री धून मे भलां ही धाप'र उडाओ। वातां धरम-करम री। इण सू काई? लाभ तो भाव में है और वो घर मे ही बीगड्‌ग्यो। पस्तून कैवे, स्वतंत्र हुयग्या, अबै म्हांनै ही म्हांरी धून मे सोरो सास लेवण दो। आ सुणै जद भाईजी धमकै। बाडियां मे भळै बाड़ियां। इण मे अचूभै री काई वात? थे सो हुमी ही, भीव ही इमी लागियोडी है। फिटोळा रै फैलणै सू अेकर बगाल (पूर्बी) मैं ही मसाणियो वैराग ऊपड्‌यो, भजब रा भगवां पैर'र बाबोजी बण बैठ्यो। आप रो घर बळण लागियो जद चेतो हुयो, पूर फंक्या। ठडै माथै सू सोच्या ही सारो को छूट्यो नी, चौईस-पच्चीस साला रो खायो पीयो सो नीकळग्यो। नीकळग्यो जिको तो नीकळग्यो, घरआळो ओर उजाड बैठ्यो। समझै तो है लोग पण कूट खायां पछै।

चीण फूट तिव्बतिया नै, वणा रै ही देश मे। हुजारू ही आय-आयनै हिंदुस्तान मैं वसग्या। आ ही कोई बात हुयी? लका, बर्मा, कांगो, केनिया, युगांडा, स्पेन, पुर्तगाल मगळां मैं हिंदुस्तान सोनै री चिड़ी दीसै, पांख्यां घुमणी तोई सारो को छोडै नी। पण हुआं मैं दोप ही काई देवां, घरआळा ही को समझै नी, सिक्खस्तान, जाटस्तान, काई टा काई-काई स्तान छेडै। आसाम अेक रा तीन हुयग्या, पजाब अेक रा दो, आंध्र सवाल करण नै त्यार। प्रांतां रै धून जनमै। बडो तमासो है, नीवडगी तो कुण आवै विमारू? ईसाइयां और विदेशी कूटनीतिज्ञां मुफत रो जैर देवण री दुकानां न्यारी-न्यारी खोल राखी है; सह-अस्तित्व नै बेमार करण खातर। तान पाड़ो, समझ गोरड़ो। देखां, कियां ताई आवै।

आस्ट्रेलिया मे लिखा अगरेजां रै कोई बम ही को गयो नी, आजै उण मैं किणी अगरेजणी ही जण्यो हुवै। सह-अस्तित्व रै अस्तित्व [illegible] विजोवणो करण रो उठो पाट छेवड़ घाल्यो कठै मू? पणखरो पच्छिम रै साम्राज्यवादी देसां सू। उपनिवेशवादी देसां रो अळूझो इसो घालियोड़ो है कै कलदी-सीव छूटतै जद पेर पकड़ो ही काई? कोरिया दो, वियतनाम दो, भारत दो-तीन, जर्मनी दो और कई ताई दे, बर्लिन दो। बसावणो तावै नही आवै तो विगाडै भी र धाल र ही नही। विगाड़णो किणै रो काई नांव? इटली रा कूटमा और की तावै नी आवै तो धान रो मवाद रो विगाड ही दै। फूट घालो और राज करो—ओ मोटो और मूळ मत्र अंगरेजा करणी नै [illegible] दियो। उणां रो गुण कियां भूलीजै? दूजा हुकमी [illegible] उण री नी। [illegible] आवै आ बात न्यारी है। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् [illegible] अथम-आदरा अेवाड़िया हा। वै धरती रै वेकड नै टूकडै [illegible] हा? [illegible] इतिहास ही बदळ दियो। घर रा राकडा न घाट रा। [illegible] कदेई सूरज को छिपतो नी [illegible] सूरज देवता छिपणो ही दीसतो। [illegible] न-बई।

हुवै । अन करपतो जुग बीतग्या, तोई पार को आयो नी। नागाई थारो ही आसरो। संयुक्त-राष्ट्र-संघ, विश्व-स्वास्थ्य-संस्थान-सरीखा किणी डीगतो री फूटरी संस्थावां सोन लोबी-चोड़ी वातां करके, माता दुनियां रो परसाद प्रोपेगेंडा री प्रतिमा रै भोग लगावै । विश्वधर्म-सम्मेलन, नाटो, सीटो और कुण जाणै किता-किता कुड़का रचै। सह-अस्तित्व और थारै रंघोड़े भोगां में स्वस्थ और सबळ वणावण रा त्रिन पास करै, घोषणापत्र त्यार करै, मिशन भेजै, मुलका में करप नै लुगमा-टोपी बांटै और घर में भुवाजी मा रै जायो किणी फिरै । सद्-विचार रो डोरो ही टोस पर हुवै किसी पोल पड़ी है । बैठा-बैठा होळै-सीक नीयतो वागण दनो वंगो लिलराई कै मरै जिका तो मरै, पस्मीड़ और बोलै । पछै उणां नै सोग-दिलासै रा होळै-सीक पुचकारै न्यारा ही—क्यों, लागी तो को नी ? आप पूसै आततायां ताई, पण दूजां नै समझावै 'दया पाळो' । आ राजनीति है, साप और स्नेह रै फूटो लगावां । कागजी काम पक्को हुवणो चायीजै; जमानै री मांग है, आयो जुग आ ही चावै । जमानो आयो, हवा बोळी, जोड़ी मिली रे जोगिया ! मांगो'र खावो ।

पाकिस्तान काल ताई मिनख री पूछ-सो कठै ही को दीसतो ही नी। आज भारत मे उण भारत रा बाड़ा कर'र प्रजा सागण पण धजा नूंवी धारण कर ली । सागै रैवता पीढयां गळगी; काका, बाबा, केय-कैय'र किती ही सदियां गुजार दी, अबार इसा कांई सुर बधग्या हा कै साथै उठणो-बैसणो मुसकल हुयग्यो। धरम खतरै मे है, सह-अस्तित्व को निभैनी—अै आग-लगाऊ सुर कठै सूं निकळया, जिका करोड़ूं मिनखां री समझ री ढिगली मे चिणख नाख दी और आप योग सू परिया तमासो देखण नै दूर जा बैठ्या । संकीर्णता इयांई कम को ही नी, धरम रै नाव पर और साकडी हुयगी; नहीं, कर दी । कोई बात नी, थारो अस्तित्व रैवणो चाहीजै, पण अेकर कोई पूछै तो खरी उणां नै कै अबै सोरा हो का पैला हा ? दो जुगां सूं घणा हुयग्या, आजादी गी मोटियार जवान लुगाई अजे चुनाव रै टाबर रो मूंढो को देख्यो नी, थे वात करो सोराई री । चालो, बाड़िया मिलग्या, पण उणां सूं धाप कठै ? भळे वधाऊ चावै, लड़ परा'र, फूक परा'र—जियां ही तावै आवै । गुड़ दे नहीं तो छोरी हुय आसू—आ कित्ताक दिन निभै ? कावर रा बीज जागां-जागां लुक्या ऊभा थापी देवै, कान मे समझावै कै अस्त्र-शस्त्र म्हे देसां, लाय लगावण रो सगळो सामान म्हारै कनै है, पईसो ही को लेवां नी। गूगा रे गूगा ! गाव मत बाळो, भलो चेतायो । बस, गूगसाह नै इत्तो ही चायीजै । म्हारी अेक फूटै तो फूटो भला ही, सामलै री दोनूं नहीं रैवणी चाहीजै । रोटी, कपड़ो और रैवणनै जागा, इणा री चिंता नहीं, शस्त्र-पातो भेळा करो; नगद, उधार और मांग'र कियां ही । इसी समझ सोधी ही को लाधै नी ।

आयै दिन भारतीयां नै ही नहीं, अेशियावासियां नै भी कोई-न-कोई करतूत में देय'र काढ दै, कोई की करै तो करो देखा । समझावै बो फरद्द और पड़ै । मोडा घणा और मडी साकड़ी । व्यायला ही पींचीजै, तोई सरकार बापड़ी बसावै ही । पण समस्या

द्रोपदी रै चीर-सी मावटीजै ही नही। लिप्पा री माय समदर री थाड मे लाग्दा पछै मारै उबरै अणमणा री राख, बा नागाई री पून मे मली ही घार'र उडावो। वाता घरम-करम री। इण मू कांई ? लाभ तो भाव मे है और बो घर मे ही बीगड्यो। पछून बंवे, ग्यनय हुयग्या, अबै म्हानै ही म्हारी पून मे मोरो लाम लेवण दो। बा मुणी जद भाईजी चमक्या। बाडियां मे चढ़ै बाडियां। इण मे अचुभै री कांई बात ? बै तो हुमी ही, नीव ही इणी लागियोडी है। किटोळा रै कंवळै मू केवर कनान (दुर्गा) मे ही पसारियो बैराग काल्यो, मजब रा मगसा पैर'र बाढोजी बन बैठ्यो। आव री घर बळण लागियो जद बेनो हुयो, पूर फंवता। ठंडै माथै मू सोच्यो ही लागो को छुट्यो नी, चोईस-पच्चीस सालां रो गाढो पोदो मो बीखळ्यो। बीखळ्यो जिको सो बीखळग्यो, घरवाळो और उजाड बैठ्यो। म्यमै सो है लोग पण कुछ [illegible] ।

चीण हुई सिरकसिर्ला मे, डणा रै ही देस मे। [illegible] ही [illegible] [illegible] बणाया। आ ही कांई बात हुयी ? मवर, कर्म, कारो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मगळां मे हिंदुस्तान मोनै री चिड़ी दीसै, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। पण इमां मे दोष ही कांई देवो, घरवाळा ही बो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कांई टा कांई-कांई लाभ लेई। आराम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मजाक करण मे त्यार। प्रानी रै पुन [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विनाब ? ईसाइयां और विदेसी मुसळमानां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] म्हारी लोग रामी है; गट-प्रतिमाव मे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देवो, किया माथे आवै।

हुई । [illegible] कुद मोड़न्यां, कोई पार को आवै नीं । आपाई हार्‌यां हूं भागो । [illegible], [illegible] [illegible] दीसण री पुरसी [illegible] मोटो-मोटो [illegible], [illegible] री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] हुया रवै । [illegible] और [illegible] [illegible] में [illegible] और [illegible] [illegible] रा [illegible] कर्‌यां, [illegible] [illegible], मुलक में [illegible] [illegible] और घर में [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] रो [illegible] [illegible] हुई [illegible] पड़ी है । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नै मरै [illegible] गई, [illegible] और [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्यारा ही—क्यों, [illegible] तो को नी ? आज पूरै [illegible], पण दुखां में [illegible] 'हवा पाड़ो' । आ राजनीति है, [illegible] और [illegible] रै [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] चाईजै, [illegible] री [illegible] है, आधो जुग आ ही [illegible] । जमानो आयो, हवा बैठी, [illegible] [illegible] रै [illegible] ! [illegible] [illegible] ।

पाकिस्तान [illegible] [illegible] मिनख री पूछ-गो करै ही को दीसतो हो नी । आज भारत ने उण भारत रा पाड़ा कर'र प्रजा [illegible] पण प्रजा मूंडी धारण कर ली । सांपे रैवतां पीढ्यां गळगी, कावा, पाबा, बेव-कैद'र किती ही सदियां गुजार दी, अबार इमां काईं गुर तपस्या हा कै आवै उठगो-बैठणो मुराकल हुयग्यो । धरम खतरै मे है, सह-अस्तित्व को निर्भेगी—अै आग-लगाऊ गुर कठै सूं निकळ्या, बिना करोड़ूं मिनखां री समझ री डिगली मे पिणत मारा दी और आप लोग सूं परिया तमासो देखण नै दूर जा बैठ्या । संकीर्णता इयांई कम को ही नी, धरम रै नाम पर और साकड़ी हुयगी; नहीं, कर दी । कोई बात नी, थारो अस्तित्व रैवणो चाहीजै, पण अेकर कोई पूछै तो थारी उणा रै कै अर्थ सोरा हो का पैसा हा ? दो जुगां सूं पणा हुयग्या, आजादी री मोटियार जवान लुगाई अजै भुताव रै टाबर री मूंडो को देख्यो नी, ये बात करो सोराई री ! चालो, बाढिया मिलग्या, पण उणा सूं धाप कठै ? भळै वघाळ चावै, लड़ पराे'र, कूक परा'र—जिया ही तावै आवै । गुड दे नही तो छोरी हुय जासूं—आ कितीक दिन निभै ? कायर रा बीज जागा-जागा बुवया ऊभा धापी देवै, नाम मे समझावै कै अस्त्र-शस्त्र म्है देसा, साम तलासण रो सगळो सामान म्हारै कनै है, पईसो ही को लेवा नी । गूंगा रै गूंगा ! गांस मत बाळो, मतो चेतायो । बस, गूगसाद नै इत्तो ही चायीजै । म्हारी अेक फूटै तो फूटो भलां ही, सामलै री दोनूं नहीं रैवणी चाहीजै । रोटी, कपड़ो और रैवणनै जागा, इणा री चिंता नहीं, शस्त्र-पाती भेळा करो, नगद, उधार और मांग'र कियां ही । इसो समझ सोधो ही को लाधै नी ।

आयै दिन भारतीयां नै हो नहीं, अेसियावासियां नै भी कोई-न-कोई करतूत नै देव'र काढ दै, कोई कीं करै तो करो देखां । समझावै बो फरद और पड़ै । मोडा घणा और मढी साकड़ी । आगला ही पीचीजे, तोई सरकार थापड़ी वसावै ही । पण समस्या

पड़ो रै चीर-सी सांवटीजै ही नहीं। लिप्सा री लाय समझ री बाड़ मे लाग्यां पछै ारै ऊवरै वणसमझ री राख, वा नाणाई री धूल मे भलां ही थाप'र उडाओ। वाता रम-करम री। इण सूं काई? लाभ तो भाग में है और बो घर मे ही बीगड़्यो। स्तून वंवै, स्वतंत्र हुयग्या, अबै म्हांनै ही म्हांरी धून में सोरो सास लेवण दो। आ ुणं जद भाईजी धमकै। बाड़ियां मे भळै बाड़ियां। इण मे अचूंभै री काई वात? अै सो हुमी ही, नीव ही इसी लागियोड़ी है। फिटोळा रै केंवणै सूं अेकर बंगाल (पूर्वी) मे ही मसाणियो वेराग कपड़्यो, मजब रा भगवां वेर'र बाबोजी बण बैठ्यो। आप रो घर बळण लागियो जद चेतो हुयो, पूर फंवरा। ठडै माथै सूं सोच्या ही सारो को छूट्यो नी, चोईस-पच्चीस साता रो खायो-पीयो सो नीकळग्यो। नीकळग्यो जिको तो नीकळग्यो, घरबाळो और उजाड़ बैठ्यो। समझै तो है लोग पण कूट खायां पछै।

चोग धूई तिरयतिथा मे, उणा रै ही देश मे। हजारू ही आय-आयनै हिंदुस्तान मे धमग्या। आ ही कोई बात हुयी? लंका, बर्मा, कांगो, केनिया, युगांडा, स्पेन, पुर्तगाल सगळा मे हिंदुस्तान मोनै री चिड़ी दीसै, पास्या खुसगी तोई लारो को छोडै नी। पण दूजा मे दोष ही काई देवा, घरबाळा ही को समझै नी, सिक्खस्तान, जाटस्तान, काई टा काई-काई तान छेड़ै। आसाम अेक रा तीन हुयग्या, पंजाब अेक रा दो, आंध्र सवाल करण मे त्यार। प्रांतां रै धून जगमे। बडो तमासो है, नीबड़सी तो कुण जाणै किसाक? ईसाइया और विदेसी कूटनीतिज्ञां मुफत रो जैर देवण री दुकानां न्यारी-न्यारी खोल राखी है; सह-अस्तित्व नै बेमार करण खातर। तान साथो, समझ साकड़ी। देलो, किया लावै आई।

आस्ट्रेलिया मे तिका अंगरेजा रै कोई बस ही को सकै नी, जाणै उण नै किणी अंगरेजणी ही जण्यो हुवै। सह-अस्तित्व रै अस्तित्व मे विजोगसो करण रो उळटो पाठ पढ़ेर धाल्यो कठै सू? घणखरो पश्चिम रै साम्राज्यवादी देशां सूं। उपनिवेशवादी देसां रो अड़्यो इसो मांनियोड़ो है कै घणदी-सीक मुळकां जद फेर पाल्यो ही काई? कोरिया दो, वियतनाम दो, भारत दो-तीन, जर्मनी दो और कठै तोई कै, बर्लिन दो। बसावणो तावै नही आवै तो बिगाड़ै भीन घाल र ही नही। बिगाड़णो जिकै रो काई माल? दर्जी रा कुटमा और भी लावै नो आवै तो धान रो सवाद तो बिगाड़ ही दै। फूट घालो और राज करो—ओ सोटो और मूळ मंत्र अंगरेजा धरती नै विशेष रूप सूं दियो। उणा रो कुण किया भुलावै? भुला हुवणो चाहीजै उणां री तो। तावै नहीं आवै आ बात न्यारी है। 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्' री राग करणिया तो [illegible] हा। बै बरनो रै बैठ नै सपलै ही बाई हा? उणां रो तो [illegible] दियो। घर रा रास्ता न घाट रा। इण खातर ही इणां रै राज में कदेई सूरज को छिप्यो नी पण सूबो रो जग नै मच्छा पछै ताळ किणीर स्याणी? सूरज देवन छिप्यो ही दीस्यो। करतूता रो काटणा ही पड़ै, मोड़ा-वेगा पड़ै-पड़ै।

(३)

आप री भाषा री भाग इसी पायी कै लोगां परआळी ठढाई री उळटी करणी सरू कर दी। जुगां गूं दसूं-बीसूं भाषा जिके उपमहाद्वीप में तीजणी-सी पूठरी सह-अस्तित्व री आस्था रो इमरत पी'र हसती-मुळकती ही, अंगरेजी अेकली उणां रो सास बसणो मुसकल कर दियो। गधै रो पूंछ पकड़ायो तो इसो कै मूढै पर लातां किती ही पड़ो, छोरै लास छोडां जद डाल्यो ही कांई ? आप रै स्वार्थ खातर आदमी रो 'स्व' कितो साकड़ो हुवै ! 'स्व' जित्तो ही संकीर्ण, सह-अस्तित्व नै बित्तो ही डर। 'स्व' रो विस्तार सह-अस्तित्व रो आधार। फैंऊ जिकी साच, म्हारी पार्टी सोचै जिकी ठीक—बस, अै विचार ही पनपणा चायीजै, बाकी नहीं। सह-अस्तित्व नै फेर आसरो कठै ? अबार आ ही अवस्था नागी हुय'र धरती पर नाच घालै; देखां, किया पार पड़ै ? दवाई जद ताई उळटी, बेमारी बधसी ही।

तो, धरती चेकड़ चावै कांई ? विविध वर्गां रो सह-अस्तित्व, उणां रो सागै विकास-वैभव, और साची पूछो तो इण चाव और सदभाव सूं ही उण विधाता-बागवान आप री कळा रो विस्तार करयो है—ओ 'विश्व-वन'। पण जद सगळां सूं स्याणो, समझदार मिनख-विरछो आप जिसै वर्ग सार्थ को रैंय सकै नी, उण वेळा आह और उसासां री पून इण बाग सूं अेक दुरगंध लेय'र ऊपर उठती सरमावै, बाग री सार्थकता इण मे कठै ? मिनख रो मोल ही दूजा नै सुख पूगावण मे है, आप रो पेट तो कागला-कुत्ता ही भरै है। The glory of human life is to serve others and not to be served—साव जचती है। कोसीस तो आ हुवणी चायीजै कै देवता मिनख री धरती पर उतरण नै मूढो धोवै, और हुवै आ है कै मिनखां नै देख'र डागरा ई चमकै। फेर तो बाजो किया पार पड़ै ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं मिनख रै इसै पारमार्थिक प्रयास री अेक दिव्य गंध जद-कद उठ'र अनत फैलै जणा ही सह-अस्तित्व री बाजरी रै मानवी वैभव रा सिट्टा नीकळै; गंधवती धरा रो अर्थ फेर ही समझ में आवै और फेर ही हुवै मिनख रो मोल।

जीवण रो सूरज, दुख रा बादळ

—दीनदयाल ओझा—

सावण रै बादळां ज्यूं
कदै-कदै
जीवण रै सूरज माथै
दुख री घटाआं आवै ।

मदमाती घटाआं
आप रै लारै
घणै हेत सूं
काळै अंधियारै नै
बुलाय लावै,
गळै लगावै ।

पण समै रै बायरै रो
झपेटो लागै अर
जीवण रो सूरज तो
हेमाळै ज्यूं
थिर भाव सूं
अडिग ऊभो लाधै ।

दुखां रा बादळिया
नाड नीची किया
रूई रै फूंआ ज्यूं
कठै-रा-कठै ई जावै

(३)

आज री धरती री बात इणी बादी रै मोटा चमत्कारी ढलाई री उठी बरती मह कर दी। जुदा सू दसू-बीसू धरती जिकै राजस्थान रै मीरबर्टां-मी कुदरती सह-अस्तित्व री भावना रो इचरज ओ'र हलकी-फुलकी ही, अटोमो भेकरी उणा री सारी बस्ती मुसकल कर दियो। म्हे री पूरा नक्शां तो इणी कै मुंहै पर काना लियो ही रहो, गोरे नाम लोह अर लाम्बो ही काई? आज है इणनै भारत मालवो री 'रद' लिखी मारको हुवै। 'मद' लियो ही नहीं, सह-अस्तित्व मैं लियो ही हद। 'मद' री विस्तार सह-अस्तित्व रो आधार। हूँ कैऊ लिखी नाय, म्हारी बाटी मोर्चे लिखी ठीक—बस, भै विचार ही दरवला भाषीजै, बाकी नहीं। सह-अस्तित्व नै फेर भागरो कठै? अवार आ ही अवस्था नाली हुय'र धरती पर नाम पानै, देखो, किंयां पार पड़ै? दवाई अर लाई उठी, बेमारी बधती ही।

तो, धरती देखड़ चावै काई? विविध वर्गा रो सह-अस्तित्व, उणा रो सारै विकास-वैभव, और सागी पूछो तो इण भाव और सद्भाव सू ही वन विधाता-बागवान आप री बगीचा रो विस्तार करयो है—ओ 'विश्व-वन'। पण अर सगळा सूं स्याणो, समझदार मिनख-विरखो आप जिसै धर्म मार्ग को रैय सकै नी, उण बैठा आह और उसासा री धूल इण बाग सूं अेक दुरगध लेय'र ऊपर उठती सरमावै, बाग री सार्थकता इण मे कठै? मिनख रो मोल ही दूजां नै सुख पुगावण में है, आप रो पेट तो कागला-कुत्ता ही भरै है। The glory of human life is to serve others and not to be served—सांच जचती है। कोमोरा तो आ हुवणी चायीजै कै देवता मिनख री धरती पर उतरण नै भूखो मोवै, और हुवै आ है कै मिनखां नै देख'र डागरा ई धमकै। फेर तो बाजो कियां पार पड़ै? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सू मिनख रै इसै पारमार्थिक प्रयास री अेक दिव्य गंध जद-कद उठ'र अनत में फैलै जणा ही सह-अस्तित्व री बाजरी रै मानवी वैभव रा सिट्टा नीकळै, गंधवती धरा रो अर्थ फेर ही समझ में आवै और फेर ही हुवै मिनख रो मोल।

जीवण रो सूरज, दुख रा बादल

—दीनदयाल ओझा—

सावण रै बादळां ज्यूं
कदै-कदै
जीवण रै सूरज माथै
दुख री घटावां आवै ।

मदमाती घटावां
आप रै सागै
घणै हेत सूं
काळै अंधियारै नै
बुलाय लावै,
गळै लगावै ।

पण समै रै बायरै रो
झपेटो लागै जद
जीवण रो सूरज तो
हेमाळै ज्यूं
थिर भाव सूं
अडिग ऊभो लाधै ।

दुखां रा बादळिया
नाड़ नीची किया
रुई रै फूंमा ज्यूं
कठै-रा-कठैई जावै

(३)

आप री भाषा री मांग इसी घायी कै लोगां मरजाळी ठंडाई री उळटी करणी सरू कर दी। जुगां सूं दसूं-बीसूं भाषा जिकै उपमहाद्वीप में तीजणी-सी पूठरी सह-अस्तित्व री आस्था रो इमरत पी'र हंसती-मुळकती ही, अगरेजी अेकली उणां रो सागै बसणो मुसकल कर दियो। धर्म रो पूछ पकड़ायो तो इमो कै मूंडै पर लाता कित्तो ही पड़ो, सोरै सांस छोडा जद झाल्यो ही कांई ? आप रै स्वार्थ खातर आदमी रो 'स्व' कित्तो साकड़ो हुवै ! 'स्व' जित्तो ही संकीर्ण, सह-अस्तित्व नै वित्तो ही डर। 'स्व' रो विस्तार सह-अस्तित्व रो आधार। हूं कंऊ जिकी साच, म्हारी पार्टी सोचै जिकी ठीक—बस, अै विचार ही पनपणा चायीजै, बाकी नहीं। सह-अस्तित्व नै फेर आसरो कठै ? अबार आ ही अवस्था नागी हुय'र धरती पर नाच घालै; देखां, किया पार पड़ै ? दवाई जद तांई उळटी, बेमारी वधसी ही।

तो, धरती छेकड चावै कांई ? विविध वर्गा रो सह-अस्तित्व, उणां रो सागै विकास-वैभव, और साची पूछो तो इण चाव और सदभाव सूं ही उण विधाता-बागवान आप री कळा रो विस्तार करयो है—ओ 'विश्व-वन'। पण जद सगळां सूं स्याणो, समझदार मिनख-विरखो आप जिसै वर्ग सार्थ को रैय सकै नी, उण वेळा आह और उसासा री पून इण बाग सूं अेक दुरगध लेय'र ऊपर उठती सरमावै, बाग री सार्थकता इण मे कठै ? मिनख रो मोल ही दूजा नै सुख पुगावण मे है, आप रो पेट तो कागला-कुत्ता ही भरै है। The glory of human life is to serve others and not to be served—साव जचती है। कोसीस तो आ हुवणी चायीजै कै देवता मिनख री धरती पर उतरण नै मूंढो घोवै, और हुवै आ है कै मिनखा नै देख'र डांगरा ई धमकै। फेर तो बाजो किया पार पड़ै ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं मिनख रै इसै पारमार्थिक प्रयास री अेक दिव्य गंध जद-कद उठ'र अनंत मे फैलै जणा ही सह-अस्तित्व री बाजरी रै मानवी वैभव रा सिट्टा नीकळै; गधवती धरा रो अर्थ फेर ही समझ मे आवै और फेर ही हुवै मिनख रो मोल।

जीवण रो सूरज, दुख रा बादल

—दीनदयाल ओझा—

सावण रै बादळां ज्यूं
कदे-कदे
जीवण रै सूरज माथै
दुख री घटावां आवै ।

मदमाती घटावां
आप रै साथै
घणै हेत सूं
काळै अंधियारै नै
बुलाय लावै,
गळै लगावै ।

पण सामै रै बायरै री
लपेटो लागै जद
जीवण रो सूरज तो
हेमाळै ज्यूं
थिर भाव सूं
अडिग ऊभो लावै ।

दुखां रा बादळिया
बाद मीठी विदा
रूई रै फूंमा ज्यूं
कठै-रा-कठै ई जावै

मोर
जीवण रो सूरज
तपियोड़े हेम ज्यूं
दूणे भाव सू
धरती मांयं
फेरूं चमकै
फेरूं दमकै ।

सांसां रो सूत

—पुरुषोत्तम छंगाणी —

समै रै अरटियै
सांसां रो सूत कातूं—
जाडो हुवै भलां झीणो,
अटेरण अटेर लीजै,
म्हारी देनगी दे दीजै,
ज्यों-ज्यों कातूं
अटेरती जा,
म्हारै लारै मांडती जा,
मलमल भी तो
विद्रोही बणाती जा।

आ भी हुवै कै
थारी धरम-न्याव मे
म्हारो कांनियोड़ो सूत
बाबरै सूं बुणकार बणनो
[illegible]
अणुतो अटक आवै,
उण रो भव हैं
[illegible] आवै
[illegible]—
[illegible],
[illegible]?
[illegible]
[illegible]

और
जीवण रो सूरज
तपियोड़ै हेम ज्यूं
दूणै भाव सूं
धरती माथै
फेरूं चमकै
फेरूं दमकै ।

अणजाणियो-सो गांव

—गोरधनसिंह शेखावत—

मारनैं मास
घणै दिनां पाछै देखियो
अदरस हुयोड़ो गांव ।
पीठ बांधै ओळखाण रा
मीठा सबद
गांव री दूसरी छाती मावै ।

गांव अजाण लागै
जेम बूढै मिनख ज्यूं, अर
अजाण मन लागै नगर-सी ।
मैं गूढ में हार्टडोड़ो
पोतो भिखु लावड़लो-सो ।
गोळ
ठगै नजारा म्हारनै दैजो परवान,
अर भूल [illegible] लालटी [illegible]
धीमै-धीमै [illegible]
अ[illegible] रात
[illegible]
[illegible] मारनी [illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

धापड़ो काचो सूत
कुण जाणे कै टूट जासी—
कै अळूझ जासी—
वेरो कोनी ;
पण ठा है,
जे टूटियो तो
सांधतो फिरूंला उण नैं ;
अर फेर काई गारंटी—
तद ताणी पंसां री भांत
म्हारो अरटियो चालतो रैसी ?

आ नीं हुवै कै
इण राफारोळ मे
विना कातियोड़ी पूणी मनै
धूड़ै मे नाखणी पड़ै,
अळूझियोड़ै सूत रो कोइयो
सिळगावण मे वापरणो पड़ै,
अर मनै खाली हाथां
घरै जावणो पड़ै ।

अणजाणियो-सो गांव

—गोरधनसिंह शेखावत—

सारसँ साल
घणै दिनां पाछै देखियो
बदरंग हुयोड़ो गाम ।
पीठ आवै ओळखाण रा
मीठा सबद
गांव री दुखती छाती मांयं ।

गाम अवाज लगावै
अेक बूढै मिनख ज्यूं, अर
अवाज लट जावै तरप-सी ।
मैं धुंद मे दाबळियोड़ो
थोड़ो भिचू सापूत्यो-सो ।
रोज
ऊगै लखारा मारतो मैलो परभात;
अर धुग उडियोड़ी सावळी दानां मांयं
धीमैं-धीमैं उतरती
मकड़ीजती रात
बिगारै साव टूटै अतीत री
धमका मारती नस मैं ।

अेक लाल नदी बैवै
गांव अर मुझार रै बीच चुपचाप;
म्हारै होटां मे ऊगै
पोर रो जगळ अर

बापड़ो काचो सूत
कुण जाणं के टूट जासी—
कै अळूझ जासी—
बेरो कोनी ;
पण ठा है,
जे टूटियो तो
साधतो फिरू'ला उण नैं ;
अर फेर काई गारटी—
तद ताणी पैलां री भांत
म्हारो भरटियो चालतो रैसी ?

आ नी हुवै कै
इण रांफारोळ मे
बिना कातियोड़ी पूणी मनै
धूड़ै मे नाखणी पड़ै,
अळूझियोड़ै सूत रो कोइयो
सिळगावण मे बापरणो पड़ै,
अर मनै खाली हाथां
घरै जावणो पड़ै ।

म्हारो देश

—करणीदान बारहट—

म्हारो देश—
बाजरी री रोटी पर मिरचा रो बीज ।

म्हारो देश—
टींगरां री लगाटेर,
सैरलै-ही-सैरलै छोरै री
टामकी-सो पेट ।

म्हारो देश—
काळ रो बामो,
बेजरी रै छोडां रो गाम,
टीबड़ै रै ओलै
नाणी-मूली लुगाई री
घूमेरी पीळी टांगां ।

म्हारो देश—
धूंसता मिनखां रो टा-टप्प,
भीचरेड़ै टीबरा री आग,
सब मारई मोटयारां रो भर्भूड़ियो
बट्टेड़ी बस,
हटपै रा तार,
होदिया भगाड़,
धूंसरा पैमला

सारो गांव बदळ जावै,
सूनै देवरो-सो ।
ढूमणी बोपी धुणं बोदा कुत्तां री
गूंगाड़ै सू भरियोड़ी गळी रै
कंठां नै घोरती;
लोग बैठा है आप रै घरां मे
बागळ लगायां ।
आंग दिरावै
गुरजी गांव रै मायं;
सावड़ो अेकलो सोयो रैवै
डूंगर रै उजाड़ खोळै में;
उगाळी लेवै
मुरझायोड़ा पाना रा रूंखां री
चिकदा लागियोड़ी-सी छियां हेठै
नाड़ पसारियोड़ी बूढी गाय अर भैंस ।

धोती रा पायचा टांगिया
घूमै सूनी हेली रै अैड़ै-गैड़ै
कई ठाला-भूला बदमास;
घरां रै मांय
मोसा मारै बूढी-ठैण लुगायां
जमानै री तसवीर झांकती,
ऊंची मेडी में बैठी उदास
च्यार साल री मुसाफरी सू
आवाळा घर रा धणी री
ससवती बीनणी ।

दूर अेक रोळो सुणै अर
लो जावै ऊंडै अकास रै पीदै मे;
अेक धुणै मे चमकै आस
सगळै दिन दारू री भट्टी रै सामै
तपतै मिनख री ।
ओ गांव मावा बूढो लागै,
सारला कई बरसां पैलां देखियोड़ो,
ना मो पिछाणै
ना मैं पिछाणूं ।

म्हारो देश

—करणीदान बारहट—

म्हारो देस—
बाजरी री रोटी पर मिरचां रो बीज।

म्हारो देस—
टीबड़ां री सवाटेर,
मैरमें-ही-मैरमें धोरां रो
टापरी-सो पेट।

म्हारो देस—
बाळ रो बाळो,
खेजड़ी रै खोखां रो साग,
टीबड़ै रै ओनें
काची-कुंवी कुवाई री
कुंवेड़ी पाड़ी टाळा।

म्हारो देस—
कूंपा मिनखां रो टाळटप,
धौबरैई टीम्बा री छाव,
बस मारवै मोटयारां री मरुंटेरो,
मड़ेरी बस,
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सारो गांव बदळ जावै,
सूनै देवरो-सो ।
कुसूणी बोली सुणै बोदा कुत्ता री
सूंसाड़ै सूं भरियोड़ी गळी रै
कंठां नै चीरती;
लोग बैठा है आप रै घरां मे
आगळ लगाया ।
आस दिखावै
सुरजी गाव रै माथै;
सावड़ो अेकलो सोयो रैवै
डूंगर रै उजाड खोळै में;
उगाळी लेवै
मुरझायोड़ा पाना रा रूखां री
चिकदा लागियोड़ी-सी छियां हेठै
नाड़ पसारियोड़ी बूढी गाय अर भैंस ।

धोती रा पायचा टागिया
घूमै सूनी हेली रै अेड़ै-नेड़ै
कई ठाला-भूला बदमास;
घरां रै मांय
मोता मारै बूढी-ठैण लुगायां
जमानै री तसवीर झांकती,
ऊंची मेडी में बैठी उदास
च्यार साल री मुसाफरी सूं
आवाड़ा घर रा धणी री
[illegible] री बीनणी ।

दूर अेक गोटो सुणै अर
सो आवै ऊंडै अकास रै पीडै सूं;
अेक सुणै में चमकै आस
[illegible] दिन दाक री भट्टी रै माथै
नरै मिनख री ।
ओ अेक गांव बूढो व्हैगो,
[illegible] कई पराणा नैना देखियोड़ा,
ना दो रिश्ते
ना ही रिश्ता ।

म्हारो देस

—करणीदान बारहठ—

म्हारो देस—
बादळां री गोदी पर मिरगां रो देस।

म्हारो देस—
टीबा री सळवटां,
मैदानां-ही-मैदानां धोरां री
धरती-सी पेट।

म्हारो देस—
बाळू री बातो,
कैरड़ी रै कांटा री भाव,
टीबड़ै रै कांनै
भाठी-फूली भूरट री
फूंफी ऐंठी टोळा।

म्हारो देस—
कूंपळा मिनखा री टळ-टळ,
बांठां रै टीबड़ा री बात,
मन मारती मोटयारां री मसूंळी,
बड़ेरी बाप,
दुखां रा दाद,
अणिंदा बराड़,
कूंपळा पींमळा,

(३)

आज री भाखा री मांग इसी पाणी कै लोगां परआळी ठंबाई री ठ कर दो । जुगां सूं दगू-चीगू भाखा जिकै उरमहाईल में तीजणी-सी फूट री भाम्या रो इमरत पी'र हुलगी-मुळकती ही, अंगरेजी अेकली उणां मुगरूर कर दियो । गधे री पूंछ पकड़ायो तो दगो कै मूंडै पर लाता वि तोरं सांस तोडां जद जाल्यो हो कांई ? आज रै स्वारथ गातर आदमी न नाकड़ो हुवै ! 'स्व' जितो ही संकीर्ण, सह-अस्तित्व नै वित्तो ही डर । 'स्व सह-अस्तित्व रो आधार । हूं कैऊं जिकी साच, म्हारी पार्टी सोचै जिकी अै विचार ही पनपणा चाईजै, बाकी नहीं । सह-अस्तित्व नै फेर आमदे आ ही अवस्था नागी हुय'र धरती पर नाच घालै; देसां, विचां पार पड़े तांई उळटी, बेमारी चपरी ही ।

तो, धरती देखड़ पावै कांई ? विविध वर्गा रो सह-अस्तित्व, उण विकास-वैभव, और साची पूछो तो इण धात और सदभाव सूं ही उण बागवान आप री कळा रो विस्तार करणो है—ओ 'विस्व-बन' । पण जद स्याणो, समझदार मिनख-बिरखो आप जिसै वर्ग सार्थ को रैय सकै नी, उण और उनसानां री पून इण बाग सूं अेक दुरगंध लेय'र ऊपर उठती सरमावै, सार्थकता इण में कठै ? मिनख रो मोल ही दूजां नै सुख पुगावण मे है, आप न कागला-कुत्ता ही भरै है । The glory of human life is to serve oth not to be served—साव जचती है । कोसीस तो आ हुवणी चाईजै मं मिनख री धरती पर उतरण नै मूंढो चोवै, और हुवै आ है कै मिनखां नै देख' ई चमकै । फेर तो बाजो किया पार पड़ै ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं ि इसै पारमार्थिक प्रयास री अेक दिव्य गंध जद-कद उठ'र अनंत मे फैलै अ सह-अस्तित्व री बाजरी रै मानवी वैभव रा सिट्टा नीकळै; गघमती धरा रो अ ही समझ मे आवै और फेर ही हुवै मिनख रो मोल ।

३. भोर

पूरब रै बड़ाणा पीगनियो तारो ऊगो,
धरती ओढ'र बैठी चूनड़ू;
कालिय ग्रामगाळी सुपारां रै
हरजस री टेर सुण'र
धारी धाम दीनी;
पण
पूरब री पावरी पधोई दियै री मोढूं
टिकई नी
धारी में दाळ ज्यू दळो सागी।

४. कुण जाणै ?

खातो भोत करै आ दुनिया
सर्म-चामणी सै नै धापै
पण गुलाब री रूप-सुधा नै
पागल भमर बिना कुण जाणै ?

५. कुरसी : आदमी

पोथ्यां में पढी ही
अर बडा-बूढां सूं सुणी ही
कै भगवान री सृष्टि में
आदमी सब सूं बडो है,
पण कुरसी रै सामै
आदमी भोत ओछो लागै—
बावनियो।

७. घास्तो

गोवर थापती विरहण
घर कूरियै सूं उठतो धूंवं रो गोट
जाणूं हिवड़ै रै मांय लाग री वास्ती री
सांप्रत ओपमा हुवै ।

८. याद-ठगोरी

थाणचकै पीव री याद मे
नैणा सूं टपटप आंसूड़ा टपकावती
मिरगानैणी पणिहारी
घड़ो भरणो भूल'र
घड़ो रितावै लागी,
भूण रोवतो-मो थमग्यो ।

९. सूक्यो आवै आक ज्यूं

नूई 'बाटेड' पड़'र
बे-रुजगार रामूड़ो अेक बार तो हरयो हुयग्यो
जाणै मूलेड़ै जरसणं पर पाणी बरसग्यो हुवै,
पण पेरू
चोमासै मे आक ई ज्यूं
पीळो पड़ै लाग्यो ।

१०. फेर कद्दै ?

मुळक'ती कळियां री
छिमकतो जोबन
बरसतै बादळ ज्यूं
बरस्यो-र-बरस्यो,
फेर कद्दै ?

ठैरचोड़ो बिंदु

मूल—पाब्लो नरूदा
भाषांतर—नंदलाल शर्मा

मैं की नी जाणूंला, नीं कल्पना करूंला
कुण मेरी अ-सत्ता नै मिटावैला
कोशिश बिना सत्तावान हुवणो ?

पाणी किया ओ अरदास कर सकै ?
भाठां किण अकास रो सपनो देख्यो है ?

ठैरघोड़ा, जद ताई बै लोग
अळगोई देस जावण नै ठैरघा
आप रै तीरा माथै चढ'र
ठाई दीपा कानी उड नी जावै ।
आप रै छक्योड़ै जीवण मे थिर
जमीदोट नगरी री भात
दिन ऊतरता चल्या आवै
पकड में नी आवण-आळी ओस री तरिया
की खतम नी हुवैला, नी बेकाम हुवैला,
जद ताई म्हे पाछो जलम नी लेवा,
जद ताई आज दिन लूटघोड़ी जमीन
पाछी पुराणै वसत सू भरीज नी जावै—
अेकल रूप सूं चुपचाप खुद नै
अ-सत्ता सूं बारै काढता, अजे भी
फूला लदी डाळी हुवणै वास्तै ।

भाग-भुंवाळी

—शिव् पाडे—

देखं है अद भाग भुवाळी
उम्ळी राता लागै काळी

हर-की नैं कर दे फकचूथो
सूधो काम करा दै ऊंधो
सीधै मारग सू भटकावै
भाया री आस्था रड़कावै
मीठो बोली विस घुळवा दै
लड़ायां देवतां पुळवा दै
इण विण सू ही प्रीत न पाळी
देखं है अद भाग भुवाळी

जुलमी जागण रोस करावै
बिरचक मनड़ो टिक ना पावै
तन रो कपड़ो बैरी बणज्या'
फूल मिर तबू कणकै तणज्या'
बिणनोटा रै लागै चूंपी
मीठ विनी-सी उड़ज्या' ऊंधी
जुलमी री है आग बराळी
देखं है अद भाग भुवाळी

इण तरियां रा मारै चप्पर
सीधो कर दै तार 'र अक्कर
काई-रो-काई करवा दै
माटी मे मुट्ठ्यां भरवा दै

दया न सा गीडा टिकन्ना दैं
अस्तीफो हाथां लिखन्ना दैं
दुनिया सूं बजन्ना दै ताळी
देखैं है जद भाग मुंन्नाळी

आंखड़ल्यां करन्ना दैं धोळी
अइयां जिंदगी लागै मोळी
मिनख होयज्या' हक्को-बक्को
कूवै मे दिरन्ना दैं धक्को
खरचै सू चाचर घडन्ना दै
भगा-भगा जूरया फड़न्ना दै
राजा नै बणन्ना दैं हाळी
देखैं है जद भाग भुन्नाळी

फागण

—सांवरमल दाधीच—

स्याळै में जद खावै काळ
घालै मधरी-मधरी थाळ
धम्म-धिनक-धिन बाजै चंग
झांझ मजीरा छम्मक-छम्म
बोल-बोलकर मस्त धमाल
छूम-छमाछम नाचै यार
इन्नै गीता रो रमझोल
फागण में मस्ती रो घोळ
खूब जवानी करै किलोळ

गैर माघ री धूमाधार
छूटै रंग-भरी पिचकार
के टाबर, के नर, के नार
तन-मन भीजै रस री धार
रंग गळयां में, रंग बजार
रंग-रेळ में उठै मलार
करै मसखरी भाई बोळ
फागण में मस्ती रो घोळ
खूब जवानी करै किलोळ

रंग-रंगीलो चौक सजाय
भांत-भांत रा सांग बणाय
झूम-झूमकर गींदड़ घाल
घूम-घूमकर गींदड़ घाल
रसिया हिळमिल करै कमाल
मनड़ो नाचै नौ-नौ ताल
'वा भई! वा भई!' गूंजै बोल
फागण में मस्ती रो घोळ
खूब जवानी करै किलोळ

धर मुरधर रा धोरिया

—रामसिंह—

धर मुरधर रा धोरिया सोवै घणा सरूप
धोळ हिलोळ किलोळ मय सायर रूप अनूप । १

लागै घणी लुभावणी टीबा री टोळी
जाणक जोबण री प्रकृति घड - री - घड खोली २

सूर-किरण सोनल करै चाद-किरण चांदी
धर मुरधर रा धोरियां बांकी धज बांधी ३

केसर कण रज-रजणी कोमळ काया जाळ
धर मुरधर रा धोरिया कोमळ वण्या कमाल ४

धोळा-धोळा धोरिया चादै तणै उजास
हास-भास हुळसै-हसै रमै रसीला रास ५

निस पूनम धोरा निरख बालभ बोल्यो वाम—
सुरग रच्यो सागर-सहित धोळो किण मरु-धाम ? ६

रात पड़यां रमणीक दिन मे दीपै दोवणा
प्रेम तणा परतीक धोळा-धोळा धोरिया ७

रात पड़यां मन-रजणा रुत वरखा रमणीक
धर पर दोमै धोरिया नेहा भरया नजीक ८

पावस तन पुलकै घणो हिवड़ै मिटै हुवाड़
धूड नही अै धोरिया पेम तणा पाहाड़ ९

मुरधर करण सरूप धारयो जोबण धोरियां
राजथान रा रूप बीर त्याग वण लग वण्या १०

धोरा औ रे जीवधर जाणै सो जाणै
मेवड़लां तन ऊमगै आंधी उफळाणै ११

आंधी आयां धोरिया उड-उड करै पड़ाव
रचै, विगाड़ै, फिर रचै विधना सरिस बणाव १२

लोल वेवळू-लहरिया विखरै-वणै सुरेख
पवन धोरिया प्रेम रा लिखै नव-नवा लेख १३

भात-भात रा माडणा वाळू रचै विचित्र
पवन धोरिया प्रेम रा चितरै चोखा चित्र १४

जीव-जत रात्यू रमै ठडी वाळू ठोड
मडै फूठरा मोडणा जाणक मरु रा मोड १५

तीखा तिरछा तणतणा ऊचा अडिग अनेक
'चढ्ह दिस जीतण नै चढ्या दळ धोरा रा, देख १६

खाया कोट 'र कागरा बुरजां-धार सु-घाट
मुरधर राखण माडिया धोरा द्रिढ दुरग-टाट १७

धरो गरब मत धोरिया! ऊचो सीस उठाय
आंधी सू उड आवसो सू लारी तन साय १८

अवर-अवर धार पवन भरै जप मौन-जप
धोरा धूड रमा'र जगळ मे मगठ करै १९

ताप तपै तपसी तरण रेती राख रमाय
धर मुरधर रा धोरिया धूणी रह्या धुखाय २०

अलख लखै धूणी तपै टहरै टीब म टोड
धर मुरधर रा धोरिया जोग्या रा सिरमोड २१

भेख लियो वाल्हा विरह टहरै टीब म टाम
धोरा पावन प्रेम रा रूडा रमना राम २२

हिमथळ-सायर हेरिया कासमीर - बद्रिधाम
थम रे थारो धोरिया! मिल्यो नहीं मोटम्य २३

सायर-हिमथळ सोधिया कासमीर - बद्रिधाम
मेघ बुझी नहि नेह री परपट धोरा प्यास २४

हिमथळ-सायर हेरिया कासमीर रो देस
धन धन थारो धोरिया! नेह घट्यो नहि नेस २५

अब थोड़ं लिख धोरां सुन्दर री महमाय !
बिन चाखं, सोचूं नहीं धोरा हरो राज २६

ऐ तन धोरा में पड़्या मैं धोरा री मार
हिये उण रै निम निम हुवै धोरा री मनवार २७

धोरां सू प्यारो नहीं घरै धोरिदो ध्यान
हिवड़ो धोरां में हिल्यो भायो सबै न आन २८

मैं' मूठा धोरा परै सीतळ कोमळ गात
तन तरसै मन उमगं कूदण-खेलण बात २९

टाबर टीलां पर गुड़ै कूदा करै विहार
बाळू रा लाडू घड़ै बाजू-रा घर-बार ३०

बाळक बाळू रेत में खेलै हिलमिल खेल
सुरग छोड़ आया सता मीठो मिळियो मेळ ३१

वजावै रो वीर

—सवाईसिंह धमोरा—

(१)

शेखाटी मे गाव अेक है, वठै वजावो उण रो नांव
राजतणां री च्यार कोटडी, च्यारां रो गावां मे नाव

भेरूसिंघजी कंवर लाडलो ब्यावण गयो सुहाणे गाव
तवरांका सूं ब्याय बीनणी आयो पाछो कांकड मांय

गयो खवास डाळ ले हरियल, ऊंटां री दी गोडी ढाळ
कांकड मांय जाजमां बिछगी, बारी रयो कसूमो गाळ

दी खवास रावळै बधाई—जान पूगगी कांकड आय
साथेळो साधो मांगर सूं कांकड सामा जाय वधाय

माजी बोल्या—सुणो नेगजी! जान पडूपा आया गमचार
मांडण मे भेळा सै हो रया कुटम कबीलै रा सिरदार

कांकड पर सामा कुण जावै, कोटडल्यां मे कोइ न आज
मांडण रै लगडै रो नूतो, सगळा पूग्या रजवट काज

पेसारा रो देण बुलावो, बारणजी भी भाग्या जाय
थोड पुराणो रावळियें मे मुद्दी बीनणी लानर आय

(२)

आय नेगजी पाछो कहियो—सिरदारां! मैं सुण ल्यो बात
सामेळा नैं मती उडीको, वेगा चालो अबखी स्यात

मांडण मे लगडो मंडियो है, शेखाटी सा पूगी आय
तीन कोटड्यां रा सै ठाकर पूग्या है लगडै रै मांय

तो रावतसजी ! म्हे भी चाल्या—कह बनड़ै सूंतो तरवार
इसड़ो दिवस फेर कद आसी, इण काया रो करण उवार

सालमसिंघजी हा बड भाई, जा पकड़्यो बीरा रो हाथ—
पैंसारो करणो है भाया ! ब्याव बीनणी ल्याया साथ

दादाभाई ! कियां विसरग्या पाबूजी री गौरव-गाथ'
पाबू ज्यूं पैंसारो हुयसी, भैंचो कर मेलो सिर हाथ

सोढी ज्यूं तवराणी जासी सुरगां मांय बधेड़ी मोड़
रावत रो भैंरूं भी समझो पाबू ज्यूं दौड़ासी घोड़

(३)

काकड़ पर ही लियो कसूमो, बाथोबाथ मिल्या सिरदार
घोड़ा रै झट ऐड़ लगा दी, आ पूग्या मांडण रै बार

झगड़ै मे जा जूझ्या भाई, घणी मचायी मारो-मार
वीर-गती ली भैंरूं बनड़ै, पाग लेय फिरियो असवार

पाग पूगता तवराणी भी साध्यो सोढी-सो आचार
गुनागार ही हथलेवै री गुणागार सतियां री सार

गाव बजावै छतरी बण री आज पुजापा री उण ठोड़
भैंरू सिंघ बनड़ा री बनडी काठ चढ़ी बांध्या सिर मोड

देव न धोकीजै जिण दिन सूं, सती धुकै जूझारां साथ
ब्याव बीनणी घरां पधारै, पगल्यां माथै मेलै माथ

पाबू ज्यूं पूजीजै भैंरू, सोढी सम तवराणी फेर
गाव बजावो कोळूमंड ज्यूं जण-जण री आसा रो घेर

जीवत तो भैंरूं रावत रो आज हुयो जण-जण आराध
जात-झडूला जठै चढीजै, जण-जण री पूरीजै साध

जांगड़ दूहा आज ई जान चढता वेर
जान चढायी भैंरजी गाव बजावै फेर

बनड़ो मत भैंरूं हुयो, रावत रो रजपूत
काकड़ सूं सीधो गयो, मांडण झगड़ै हूंत

मूमल

—दीनदयाल ओझा—

दृश्य १

[मूमल री मेडी रो सजियोडो कमरो। कमरै मे दो रूपाळी लुगाया बैठी है—अेक २५ वरस और दूजी १७ वरस रै अडै-गडै। छोटी रै मूडै मायं अचरज और उत्सुकता री झलक, मोटोडी रै मायं खुशी, पण कणै-कणैई चिंता री रेखावा उभरै और मिटै।]

मूमल—(हठ-भरी वाणी मे) नहीं! आ बात तो म्हारी मानणी ही पड़सी। मनै टलावतां घणा दिन हुयग्या। अबै आप री बात नही मानू। हू तो आज महदरै राणै नै देखूला 'र अवस कर देखूला।

सूमल—(नम्रता री वाणी मे) मूमल! हर बात मे हठ चोखो नही हुवै। उण दिन जद सगळी बात जिकी नही कैवण री ही बा भी तनै बताय दी तो अबै हठ किण बात रो?

मूमल—(उतावळी बोली मे) नही! अबै हू आप री बात नहीं मानू। नै उण वेळा दूजो आदमी नही रैय सकै, जणै आरव भैरासी किण तरै रैवै—बताओ—बोलो क्यो नी? सगळी बात समझू हू, आप रै मन मे ...

सूमल—(कठोर वाणी मे)—साची कैवै। खोट तो म्हारै मन मे हीज है, जणै तनै आज इण तरै पाळ-पोस नै मोटी करी। सगळी बात जाणनी चाही अणजाण बण भांत-भांत रा प्रश्न करणा चोखा नही। मूमल! काल तनै दूजै ठिकाणै जावणो पड़सी; अबै तू छोरी नही है। हर बात मायं हठ नही करणो, मूमल!

['बाईसा-बाईसा' री अवाज आवै।]

हू जाऊ हू मूमल! देखू, काई काम है।

सूमल—(बाळ-सुलभ चंचळता करता मूमल रो हाथ झालै; पेरू खाडी ऊभै; पेरू हाथ पसारनै रस्तो रोकै; चंचटाई मे बोलै) म्हारी बात माननै

पछै आप भीतर पधारो; नही जणै हूं नहीं जावण दू। हूं ऊभी हूं। देखूं, आप मनै आपी करनै किण तरै मांय पधारसो। जे नहीं मानसो तो हूं सागै चालसू।

मूमल—(तिरस्कार-भरी वाणी में) कद जासी ओ थारो टाबरपणो? चाल, सागै चाल।

(दोनू जावै है)

[पड़दो पड़ै है।]

दृश्य २

[साधारण घर रो अेक कमरो। खूंटं मायं सारंगी टांगियोड़ी है। अेकै कानी दो ढोलिया ढालियोड़ा है। दोनू ढोलिया मायं दो आदमी बैठा है। अेक री वेशभूषा सिंध री है, दीसण में गवइयो दीसै। आपस में संगीत री वाता चाल रैयी है। अचाणचक बारणो खड़कावण री अवाज आवै। अेक आदमी कमरै मे आवै, च्यारू कानी देखै, फेर आरब कानी देखनै आदर-भरी वाणी मे कवै।]

अजनबी—दाता फरमायो है कै आप रै अठै सिंध रा नामी गवइया खान साब पधारियोड़ा है, उणा नै सागै लेयनै आप वेगा पधारो। कोई दूजा महमान पण पधारियोड़ा है। बस आप री उडीक है।

आरब—ठीक है! अरज कराय दै कै म्हे आवां हां।

[आदमी पाछो जावै है।]

खान साब—(घणी श्रद्धा-भावना सू) धन है मरुधरा! धन है लोद्रवो! जठै इण तरै रा कळाकार और कळा-पारखी विराजै। हू आज भोर मे आयो हूं। सिन्ध्या सू पैली-पैली दाता नै खबर भी मिलगी, उमरावां नै बुलाय भी लिया और मजलस री त्यारी भी हुगी! कळा रै जाणीकारां बिना इण भांत कुण सोचै आरब साब!

आरब—(आदर रै भाव सूं) कळा रा साधक तो कळाकारां नै उडीकता रैवै। मनै याद है लोद्रवै मे आवणआळो कोई कळाकार इसो नहीं गयो जिण रो मान-संमान दाता नहीं करियो हुवै। फेरूं आप री सोरम तो सिंध सू लेयनै इण दिस तांई बरसां सू आय रैयी है खान साब!

खान साब—(श्रद्धा भाव सूं) आरब साब! आज म्हारै मन री मुराद पूरी हुयी। अेक आप रा दरसण करनै और दूजै लोद्रवै रै कळापूर्ण नगर नै देखनै—इण भांत रा भवन, सजियोड़ी दुकानां, वैभव, मान-आदर मैं तो कठैई नहीं देखिया। कळा और संस्कृति रो अनूठो केंद्र ओ लोद्रवो आज री ख्याति रै उणियारै हीज है आरब साब!

आरव—(मुळकनैं) खान साब ! ओ आप रो बडपण है जिको इण भांत कैय रैया हो । आप री मान-संमान करण री म्हांनैं आज अवसर मिळियो। ओ इण धरती रो बडो भाग है । आप जिसा कळाकार सिंध और दूजै देशां मे है किताक ? पधारो अबै, दाता उडीकता हुवैला ।

(दोनूं जावै है)

[पडदो पडै है ।]

दृश्य ३

[राजसी ठाठ सूं सजियोडो मोटो कमरो । रेशम रा गलीचा विछियोड़ा । सरदार अेकै कानी गादी माथै बैठा है । विचाळै गावणआळां ताई रेशम रो गलीचो विछियोडो । कंई जणा उडीक रैया है, मालम पड़ै है । कै वै आरव रा चेला है । धीरै-धीरै आरव और खान साब सभा-मंडप मे आवै । ऊचै झरोखा मे मूमल और सूमल तथा दासियां बैठी है । 'पधारो-पधारो' री अवाज सुणीजै । आरव और खान साब आप रै स्थान माथै बैठै । आरव खान साब री परिचय देवै । सगळा लोग ध्यान सूं सुणै । खान साब गावणो सरू करै । अेक गीत खान साब गावै फेर अेक आरव । सगळा वाह-वाह कैवै । सहसा अेक चाकर नीचै आवै अर अेक हकियोडो थाळ आरव रै हाथा मे राखै और मूमल री ओर सूं खान साब नै भेंट देवण री कैवै ।]

आरव—धन है बाईसा और धन है खान साब ! जिकी गुरावट खान साब रै कंठा मे है बा मैं तो आज ताई नही सुणी । बाईसा री तरफ सूं खान साब नैं आ भेट देवतां मनैं घणो हरख हुवै है ।

[भेट देवै है । सगळा उमराव भी आप-आप री भेट थाळ मे धरै है ।]

खान साब—(कृतज्ञता रै स्वर मे) हूं आप रै गुणां और दाता री महरबानी री किण शब्दां में प्रशंसा करूं । म्हारै कनै कोई बोल नहीं । हूं आप रो शुकगुजार हूं कै आप मनै इत्तो मान दियो । इण इनाम मैं पावण रा हकदार आरव साब है ।

(सभा री समाप्ति हुवै, सगळा जावै है)

[पडदो पडै है ।]

दृश्य ४

[राजसी ठाठ सूं सजियोडो कमरो । कमरै मे मूमल और सूमल दोनूं बैनां बैठी है । मूमल रो मुख-मंडळ उदास है । लिलाड़ माथै चिंता री रेखावां है, पसीनो है । सूमल रै मूंडै माथै चचटाई रा भाव दीसै ।

[धीरे-धीरे दिनां रै आवण री अवाज आवै। दासी आवै और अरज करै।]

दासी—(हरख सूं) बाईसा ! मारग महेन्द्रो गाज्यो है कै आरब आज हाजिर नहीं हुय सकैला।

मूमल—(आवेश-भरी बोली में) जा मारग नै बंद दे कै इणरा बणाव दी है।

मूमल—(घबराई री बोली में) बाईसा ! इण में कैई भाग ! आज आरब नहीं रैवेला। हूं आरब री जोगार पैलें आरदे बनै रैऊंला और महेन्द्र राणे रा दरसण कर म्हारै मन री साध पूरी करूंला। आप ही तो कैवता हा कै जिण दिन आरब नहीं आवै उण दिन याद करावै। ओ अवसर आज-ई आयग्यो। बोलो, आप रो काई हुकम है बाईसा !

[मूमल रै मूंडै माथै गैरी चिंता रेखावां उभर आवै। मन री अकुलाट मूंडै माथै साफ-साफ झलकै। काई करै, काई नीं करै—इण तरै री दुविधा में वा मूमल नै की कैवणो चावै इण तरै रा भाव दीसै। आखियां मूमल कानी गडायनै देखै।]

मूमल—(लड़खड़ावती बोली में) मूमल ! काई कैऊं ! तूं म्हारै मन री नहीं जाण सकै ? राणोजी पधारसी क नहीं—ओ किण नै पतो ? तूं आज हठ ना कर। म्हारी जीवणी आंख दिनूगै सूं फरूक रैयी है। मन अमूझ-सो रैयो है। तूं क्यो हठ करै ? बैन ! सुण आणै आज काई हुसी !

[मूमल गैरी चिंता में पड़ जावै। अेकर मूंडै री हवायां उड़ जावै; दूजै ई खण मूंडै माथै पैलां सरसी रौनक दीसै। थोड़ी गभीरता सूं बोलै।]

मूमल—बाईसा ! बाईसा ! आ नहीं हुय सकै कै महेंद्र राणोजी नहीं पधारै। पधारसी अर अवस कर पधारसी। देखावो—आज पूनम री ऊजळी चांदणी किण तरै काक-नद माथै अमी बरसा रैयी है, नदी री धीमी-धीमी स्वर-लहरी किण भात मीठा रस-भरिया गीत सुणा रैयी है। हूं जाणूं हूं जद औ चांद आभै रै विचाळै आ ऊभसी जद महेंद्र राणो-सा पधारसी, अवस पधारसी।

मूमल—(उदास मन सूं बोलै) सूमल ! तूं दासी कनै सूं आरब रा पाचूं कपड़ा मगाय ले, कर लै थारी मन-चायी, जा।

[सूमल जावै है। मूमल अेकली बैठी है। गैरी चिंता री रेखावां मन री उथळ-पुथळ नै दरसाय रैयी है। पसीनै री बूंदां लिलाड माथै झलक रैयी है। अेकली बोलै है।]

मूमल—आज मन रो इण भात अमूझणो, जीवणी आंख रो फरूकणो, पतो नहीं किण अणहोणी री सूचना देवै है। जी में आवै कै अेकांत में आयनै जी भरनै रोऊं; पण पाछो कहूं। कुण है म्हारो जिको म्हारै मन री वेदना नै समझै ? सूमल, पण सूमल अजै नहीं समझै

प्रेम काई हुवै। उण नै काई पतो? दोना विचाळै दिसलो भी जागतो नही रेवै। वा तो अेक हठ नै समझै। खैर! जो हुणी है हुय रैसी। कुण टाळ सकै?

[कमरै रै बारणै माथै अवाज आवै। अेक दासी आयनै कैवै—बाईसा! थाळ त्यार है, आरोगण पधारो।]

मूमल—(आदेश री अवाज मे) जा, त्यारी कर, हू आऊं हूं।

(दासी जावै है)

[पड़दो पड़ै है।]

दृश्य ५

[राजसी ठाठ सू सजियोडो कोई कमरो। कमरै मे अेक पलंग जिण माथै मूमल ... रा कपड़ा पैरियां सूती है। कमरै रै बारणै आदमी रा जूता पड़िया है। काकनय री कळ-कळ री अवाज आय रैयी है। कमरै मे दिवलै रो मद-मद परगास है। मूमल रै मूंडै माथै गैरी चिंता-रेखावां है। आंखियां मे नींद घुळण लाग रैयी है। मूमल नींद मे सूती है। सूमल उण रै कनै बैठी है। बैठी-बैठी नै झोंका आवै। दूजी तरफ अेक आदमी री पग-चाप मेडी रै पगोथियां चढै ज्यों आय रैयी है। अचाणचक वा अवाज रुकै। कोई चीज धरीजै ज्यो अवाज हुवै। पेछै पगोथियां सू नीचै उतरण री अवाज आवै। दूर-दूर ऊंटणी री अवाज आवै। अचाणचक मूमल जागै और हाथां मे दाबो थामनै देखै। गैरो निसासो नाखै। पेछै दीयो हाथ मे भरनै बारणै कानी जावै। नीची निजर करता मिनखां री तीन पगरखियां कानी ध्यान जावै। मूमल तीन जूतियां देखनै पाछी कमरै मे आवै और जोर-जोर सू हेला पाडै।]

मूमल—सूमल! अे सूमल! देख लै, महेंद्र राणोजी नै आगिया लोगनै देख लै। देख लै चंदमा री चांदणी मे हुई पो भोग। म्हारा समझावो ही पण अेक नही मानी। अंब सूमल! किण नै कैऊं? देख, हिवड़ै री लौ माथै ओ पतगो बळ रैयो है। अवर राणोजी अठै पधारिया पण इण पगरखियां नै देख हीजी आप रो दरसणो छोड उणी बेटा माथै चढ पाछा मुड़ग्या। कुण अठै उण नै बतावण नै? किण नै कैऊं? है कोई? सूमल? सूमल! अे सूमल!

सूमल—(हड़बड़ाहट मे आंख्यां मसळती मूमल कनै आवै) बाई-सा! बाई-सा! कठै महेंद्र राणोजी? कठै गया? ... बाई-सा!

[मूमल री आंखियां सू आंसूड़ा पड़ै है। नस नीची है। अेक हाथ महेंद्र राणे री अेक जूती माथै है, दूजो धरती माथै टिकियोड़ो है। मूंडै माथै गैरी चिंता री रेखाबां और पसीनो है। होळै-होळै गरदन उठावै।]

मूमल—सूमल ! देखले राणा रै पगां री अेक छाप। वै आया बारणै तांई और आयनें पाछा मुड़ग्या। हिवड़ै री वाता हिवड़ै मे रैयगी। ना वै की कैय सकिया, ना हू-ई। मनै याद है उणां रा बैण हा—थोथो कोई मानवी म्हारी बात नही सुण सकै ! थारै छोटै-सै हठ म्हारै जुगां री प्रीत तोड़ दी। सूमल ! तू म्हारी बैन नही ·······

सूमल—(भरियोड़ै कंठां सूं) साच बाई-सा ! बैन नही, बैरण थणी बाई-सा ! बैरण ······· *(सहसा बेहोश हुय जावै)*

मूमल—(जोर-जोर सू हेला मारै) सूमल ! सूमल ! सूमल !

(नेपथ्य मे बिरह-गीत री धुन उठै)

[पड़दो पड़ै है।]

अेक नयो मठ

- मनोहर शर्मा—

[चाय-होटल मे समीक्षकजी बैठा चाय उडीकै है और कविवर आ'र उणां रै कनै बैठै है।]

समी०—कविवर ! आज ढीला-ढाला किया दीखो हो ?

कवि०—काई बतावां ? आज कोई कविता कोनी सूझी। और तूं जाणै ही है कै कविता रै पाण ही तो म्हारा चाय-कलेवा चालै है। (उबासी लेवै है)

समी०—इसी काई बात है ? आपणी आज री बातचीत ही किणी सरकारी मासिक रै संपादक नै लिख भेजो। पारिश्रमिक त्यार है। (मुळकै है)

कवि०—अर जे इण रचना नै संपादकजी रद्दी री टोकरी मे फैंक देवै तो ?

समी०—(जोश मे आ'र) पछै उण संपादक रो मिजाज म्हारै लेख मे हूं पूछ लेसूं। म्हारै हाथ में भी तो कलम है।

कवि०—जद तो खेल बण सकै है। (मुळकै है)

समी०—तो आवो, आज चाय म्हारी तरफ सूं पीवो। और पारिश्रमिक आधा पछै अधंम-अर्धा।

कवि०—मनै मंजूर है। (मुळकै है)

समी०—हाथ मिलायां हाथ धुपै है। आज रचना कोनी देखीजै, रचना रै लारै किणो और है, बा चीज देखीजै है।

कवि०—अब तो साहित्य-ससार भी पूरो राजनीति रो अखाड़ो बणग्यो समझो।

समी०—कोरो राजनीति रो अखाड़ो ही नहीं, ओ अर्थनीति रो मार्केट भी है। जे आ कळा कोनी सीखी तो पारिश्रमिक मत उडीक्या करो। किणी 'मावस' मे आ'र सबद बाणी गाया करो। उठै पुन्न और चाय दोनूं मिलसी।

कवि०—पण म्हारै गळै मे तो क्रांति रा सुर है।

समी०—क्रांति रा सुर तो चोखा पण गळो भी दोनो रैसा ही सुर निकळै। मूर्ई माटडै ना क्रांति रा सुर निकळै अर ना शांति रा।

कवि०—खैर, इण विषय माथै पछै वात करसां। पैली चाय मंगवा। (उबासी लेवै है)

समी०—कोरी चाय ही क्यों, सागै भुजिया भी लो। पण जबान पर कायम रैया। *हाथ में पईसा आया जबान नैं मत भूल जाया। आप रो भूलणो सभाव है।*

कवि०—तो सागै छोड़ो मीठो भी मंगवा ले। आदमी मीठो खायोड़ो कोनी भूलै। (मुळकै है)

समी०—मीठो तो कविवर! म्हारी जीभ है। जिसा आप कवि, जिसा ही म्हे समीक्षक। आप 'काफी हाउस रा कवि' हो तो म्हे 'चाय-होटळ रा समीक्षक' हां। आव माई हरखा! आपां दोनू सरखा।

कवि०—तू काणो हूं खोडो, राम मिलायी जोड़ी। (मुळकै है)

समी०—आयगी ना आखर गाडी लैण पर!

कवि०—(गंभीरता सूं) के वेरो गाडी लैण पर आयगी कै लैण सूं उतरगी। म्हे तो आज थारी चाय पीयां पछैई कविता करणी छोडां हां।

समी०—हूं जाणू हूं—आप पैली भी इणी-ज भांत कई वार कविता करणी छोड चुक्या हो। (मुळकै है)

कवि०—पण फेर भी संकोच तो मन में जरूर पैदा हुतो रैवै है।

समी०—साची बात है। आपां देखां हां कै पत्र-पत्रिकावां आखर रद्दी में बिकै है। पण ओ जमानो ही संकोच रो है। अणु-युग में सगळी चीजां छोटी हुती जावै है। साहित्य-संसार में ही देखो—कविता संकोच रा'र सुद 'मिनी कविता' हुयगी।

कवि०—मिनी-कविता री तो कोई बात ही कोनी, आ 'अकविता' हुयगी। थारली समीक्षा भी तो 'असमीक्षा' बणगी।

समी०—कविवर! थोड़ा ठैरो। 'प्रिय' अब 'अप्रिय' हुगी अर 'प्रकाशित' नैं लोग 'अप्रकाशित' कैसी। (मुळकै है)

कवि०—(तैश में आ'र) इसी चीज तो सहन कोनी करी जा सकै। फेर तो म्हांनै [illegible] करणो ही पड़सी।

समी०—क्यूं [illegible] करो हो? ओ समाचार [illegible] है। आवो चाय पीवां।

(चाय भुजिया आवै है अर चाय साथै वातचीत भी चालू रैवै है।)

कवि०—[illegible]
[illegible]
([illegible])

समी०—[illegible]
[illegible] (मुळकै है)

कवि०—[illegible]
[illegible]
[illegible]

समी०—पण आज ताई आप री कोई करामात तो नजर आयी कोनी ; ना कवि-सम्मेलनां मे ही वाहवाही मिली अर ना पत्र-पत्रिकावां मे ही समान सायँ छप्या ।

कवि०—जदई तो कदै-कदै साहित्य-ससार नैं छोडण री तरंग मन मे उठै है ।

समी०—ओ पलायनवाद है । क्रांति रै कवि नैं पलायनवाद शोभा कोनी देवै ।

कवि०—तो पछै करा काई ? साहित्य-ससार मे जमा किण उपाय सू ?

समी०—उपेक्षित साहित्यकारा रो सगठण वणावो और मठाधीशा रो विरोध करो ।

कवि०—राम भजो । साहित्यकार तो अेक-नै-अेक देख'र बळै है । इण बळोटियां रो भी कदै सगठण हुय सकै है ? असभव !

समी०—तो पछै म्हारो कैवणो मानो—आज मू आपा भी अेक नयै मठ री थापना करां और चेला मूडा । आप गादी पर बिराजो अर हू प्रचार-विभाग सभाळूं । देर-सवेर आपणै मठ नैं भी प्रतिष्ठा मिलसी, आपणी भी पूजा सरू हुसी ।

कवि०—म्हारी तरफ सूं तनैं पूरो अधिकार है । तू कहसी जियाई करसा ।

समी०—तो मिलावो हाथ । आज सू ही अेक नयै मठ री थरपना हुयगी समझो । (हाथ मिलावै है)

हार को मानू नी !

—रामेश्वरदयाल श्रीमाली—

(१)

भो तो को कै सहूंनो कै मास्टर छोरां नैं जितरो भणा सकै, पण ओ नहचै मह मफू हूं कै कोई-कोई छोरो इतरो सिखा सकै कै जिंदगी बदळीज जावै ।

अड़ो हीज अेक छोरो । नांव हरिभजन । राज री स्कूल री छठी किताब में भणीजै । धोघरा जैड़ा पूर-पूर हुयोड़ा कपड़ा । जट वधियोड़ी । मैं उण नैं कदेई हंसतो को देखियो नी पण उण रा सिरखा साईंगा कंदड़ा—पक्को कुचमादी, पक्को हंसोड़ ।

देखत में तो मूडै माथै सदाई बारैं बजियोडी रैवतो, पण कमजोर कोनी हो । हुणमानजी जैड़ो—हाडको वधियोड़ो मूढो, अेक पग सूं खोडो, जात रो ब्राह्मण । बैंत भरिया रो हो जद बाप भगवान नैं वालो हुग्यो । विखै सू दूबळी मा पाणी-पीसणो कर घणो दोरो दोनूं वेळा रो टुकडो ओढ़े, टक टाळै ।

हरिभजन म्हारैं कोळै रो पाडोसी । अेकर मैं सुणियो, मा-बेटै मे राड चालै । मा बापड़ी अणवस सूं रोवती जावै और रीस-खारी बकती जावै—म्हारैं आखी ऊमर मजूरी करण रो ठेको कोनी, बामण रै बेटै नैं मागण रो किसो मैणो लागै ? भला-भला लखपति ही मागै, हाथी रै होदै चढिया ही हाथ पसारै, हाथ मे ब्रह्माजी रो दियोडो सोनै रो खप्पर, मागण में किण री लाज ?

हरिभजन रो थोबड़ो चढियोडो । खार खायी आखिया सू मा नैं देखै । जाणै आखियां-ई-आखियां में कैवतो हुवै—मागण मरण समान है ।

जिंदगाणी किताब रो भणेतर कोनी, उण सूं की बेसी है—इण तत्त्व-ज्ञान रा जाणणहार 'घर सूं' बोलिया—डोकरी बापडी भलै नैं रोवै, जावयां न कोई जमीन, है जिको धन जिजमान-विरत रो हीज है; अठीनैं आ मैंगाई नैं अठीनै आ स्कूला री ,

काळजा-खाऊ भणाई ! आज किताब लाओ, आज कापी लाओ; आज आ फीस भरो कालै बा फीस भरो !

बात म्हारै ही हियै बैठी । छोकरी बापडी साचो रोवै । पण हूं ······· हूं हरिभजन नै मांगणै री सीख किंयां देऊ ?

को देर मनै म्हारो ही टाबरपणो याद आयो । यादगीला बाळपणै रो [illegible] पड़ग्यो; दरद-भीनै गीत री ढाळ ! बिग्यो, जिंदगाणी रो [illegible] मान, मिनख री मोत [illegible] री मसाणो; साथियो, जाणै जिंदगाणी जुद्ध है, हरिभजन सिपाई है—जूझार; [illegible] इण री मदद करसूं ।

(२)

कोई पांच-सात दिनां पछै तणखा मिळी । मनो कियो कै हरिभजन री फीस भर दूं [illegible] हरिभजन री क्लास मे म्हारो ही घंटो हो । इण कारण मैं पूछ्यो — हरिभजन ! फीस भर दी ?

भर दी, सा !—उण आंख्यां नीची [illegible] लिवी ।

मनै अचम्भो हुयो । पूछणो चावतो हो — [illegible] पूछ्यो कोनी । [illegible] माळो ।

[illegible] म्हारो मन [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(४)

बात-री-बात मे अेकर उणा पेर मनै कैयो— सुणियो जी ! थे ? ओ हरिभजन तो बडो उस्ताद निकळियो ।

उस्ताद ?—मैं प्रश्नचिह्न ज्यूं उण मामो देखियो ।

'हां ! छोरै विरत रो काम सरू नी कीधो जिको नहीज कीधो ।'

इण मैं कोई मा री दया माया थोड़ी-ज है—मैं बीच मे ही कैयो—डोकरी रा पईसा नी हुवै जठैसू बिल्लै मिळावै ।

'नही मा ! ओ आप कांई फरमावो ? छोरो तो मा नैं ओर सारो दै ।'

सारो ! – म्हारै बात समझ मैं नी आयी, हूं वगनो हुवै ज्यों उणां सामै देखतो रैयो।

'और पछै कांई ? छोरो साई आर्पआळो निकळियो । मा घणो कंवणो सह करियो जणै छोरै मजूरी करणी चालू कर दी ।'

मजूरी !—मनैं ओजू अचभो हुयो—पण बो तो सोड़ो है । टीट भरियो छोरो, नै खोड़ो न्यारो; बो कांई मजूरी करतो हुवैला ?

'अरे सा ! बो तो अेड़ो दौड-दौड़ नैं काम करै कै अचभो हीज आवै। सूइ कारण मे अेड़ो हुसियार कै भलं-भलं चोधरी नै ही लारै राखै । सवार-सांझ खेतरै जावै नै दोपारै रा स्कूल ।'

'हूं !'

म्हारै सामै हरिभजन रो चेरो दौडण लाग्यो—फीस, किताबां, वर्दी । उण री बाटका जैड़ी आंखियां, और आंखियां मे चमकता डोळा जाणै मनैं कैवता हुवै—आप मनैं दान देवणो चावता हा नीं ? पण हू को हारू नीं; कोनी लू दान—मागण मरण समान है ········ !

अेक कसूर री गांठ जाणै म्हारै माथै पड़ी । अंतस मे घणो रंज हुयो । उण निर्दोष टाबर ताणी कांई-कांई हीणो बातां विचारी !

दूजै दिन, जद हू स्कूल गयो, मैंनत सू मांतरो पड़ियोड़ो हरिभजन मनैं म्हारै सूं ही ऊंचो निजर आयो ।

च्यार 'मिनी'-वातां

—ओम अरोड़ा—

१. पुरातत्त्व री खोज

सन् १६७२ मे पुरातत्त्व-विभागवाळां ओक खुदाई करी और लगाभग ओक हजार बरस पुराणी (कई विद्वानां रै विचार में सात हजार बरस पुराणी) ओक नगर-सभ्यता खोद'र काढी। पुरातत्त्व-विशारदां रै सामै और तो सै बातां उघाड़ में आयगी पण ओक बात रो ठा नहीं लाग्यो—इण नगर-सभ्यता रै नष्ट हुवण रै कारण री लाध नहीं मिळी। ना तो किणी समदर रै पाण डूबण रा निसाण लाध्या अर ना कोई परमाणु बम फूटण रा; ना धरती हाल'र दराड़ पाड़ण री सूंवां हुई ही और ना कोई तूफान री मळियामेट रो।

अब मे ओक विद्वान, जिको उणा खण्डरां मे सिरैकार हो, किणाई सिर खपाअर-खपाअर आ पूरी खोज ही नाखी। उण विज्ञान री नूंई-नूंई मशीना सूं वे में मायोड़ी हाडक्यां री परीक्षा करी अर ओ तुमार काढ्यो कै उणा मिनखा री मौत भूख रा नहीं सोषण सूं हुयी ही। उण खप री आ शोध चालू राखी और थोड़ा ही दिना में हजारां-न-हजारां लाइब्रेरियां रा ढाबा-ढोबना खोद'र काढ नाख्या।

उणळा रै सामै सभ्यता रै नष्ट हुवण रो कारण माळू हुग्यो।

२. पुरस्कार

ओक फिल्म बणावणियै 'टाप बजट' री फिल्म बणायी। उण बार रो घर फूंक'र तमासो देख्यो जिको तो देख्यो ही पण बारह फाइनेंसर रो घर फूंक'र उण मैं भी तमासो दिखाव दियो। तीन हीरो और बढाई हिरोइनां (ओक री कद-काट री छोटी ही) ली। उणा रा गाणा भरिया। घटरमटो-पटरमटो रो सीन टोक्यो। कहाणी उणा री आप री होन ही। सात पहाड़ी आगला री सीनरिया रै उपरांत कश्मीर अर यूरोप रै पांच देश मे जा-जा'र फिल्म री शूटिंग करी।

टाकी डिस्ट्रीब्यूटर करियो कै फिल्म रिलीज हुवतां ही तहलको माच जासी।

फिल्म रिलीज हुयी। निर्माता जी फोन कनै बैठ'र तहलकै माचण रै समाचारां री उडीक मे ही हा कै अचाणचक फोन री घंटी बाजी। निर्माता जी फोन सुणतां ही बेहोश हुग्या और कुरसी सूं उठै बताया गैया, सहाय ------। घरवाळां ओ सुमार देख'र हवो-दाबी रैवती ही हुयो कांई ?

डागदर री तीन घंटा री कोसीस सुफळ हुयी । निर्माता नै की होश आयो । घरवाळी रोवती-कळपती बूजियो—किण रो फोन हो ? काई अणूती हुगी ही ? की तो बतावो ।

निर्माता किवाई आख्यां टिमटिमा'र डूबता-सा इतरा ही बोल्या—म्हारी फिलम नै राष्ट्रपति-पुरसकार दिरीजग्यो । आ कह'र वै फेर बेहोश हुग्या ।

३. प्रसिद्ध लेखक

सपादक अेक मानीजतै लेखक नै गिड़गिड़ा'र कागद लिख्यो—पत्रिका रो विशेषांक काढण रो विचार है; अंक री सफळता सारू आप री अेक रचना हुवणी जरूरी है, नहीं तो विशेषांक नै कोई रद्दी रै भाव भी नहीं पूछैला; सो आप कोई दो हजार शब्दां री कोई रचना भेजण री किरपा करोला ।

लेखक मानीजतो की ज्यादा ही हो । उण सपादक रै कागद नै फाड़'र रद्दी री टोकरी मे नाख दियो ।

कई दिना रै आंतरै सूं लेखक नै उणी कागद री कारबन कापी मिली । लेखक उण रै सागै भी वै ही कारबन-बरताव करियो ।

छेकड़ लेखक नै अेक दिन अेक तार मिल्यो । लिख्यो हो—मैं विशेषांक में आप री रचना री घोषणा कर चुक्यो हूं; जे थांरी रचना नहीं मिली तो पाठक मनै जीवतो नहीं छोडैला; सो आप लोटती डाक सूं घणी नहीं तो अेक हजार शब्दां री रचना तो बिलजरूर ही भिजवावोला; आप रो गुण हूं जिंदगाणी भर नहीं भूलूला ।

लेखक संपादक रै इण चिपकूपणं सूं तंग आयग्यो हो । उण खीजां मरतै डिक्शनरी उठायी और उण माय सूं लगोलग अेक हजार शब्द टाइप कर'र सपादक रै नांव भेज दियो ।

रचना घणै मान सूं स्वीकार हुयी ।

छपी ।

और उण री प्रशंसा में पाठकां रा अेक हजार पत्र सपादक नै मिल्या ।

४. बेनांव

अेक पत्रिका रै सपादक री सोगन खायोड़ी ही कै वो फकत मानीजता लेखकां नै ही छापसी । सपादक नै अेक नूवै लेखक अेक फूठरी-सी रचना भेजी । सपादक पढ'र तो निहाल हुग्यो पण करै काई ? लेखक जायक नूवो । उठीनै देखै तो रचना भी बा अेक ही बव कै कांई कैवणै री बात ? संपादक रै धर्मसंकट हुयग्यो । ईनै-ऊनै माज-पच्ची कर'र उण बिना लाठी टूट्यां साप मारण रो मारग काढ ही लियो ।

संपादक वा रचना लेखक रो नाव दिया बिना ही छाप नाखी । रचना रै नीचै दो ओळ्यां दी—जे किणी पाठक नै लेखक रो नांव जाणणो हुवै तो सपादक नै टिकटां लाग्योड़ो, पतो-ठिकाणो मड्योड़ो, लिफाफो भेज'र जाण सकै ।

लेखक रो नाव जाणण वास्तै संपादक कनै फकत अेक लिफाफो पूग्यो ।

... लिफाफो उण लेखक रो होज हो जिकै री बा रचना ही ।

सोनलदे सोढी

—पन्नालाल शर्मा 'पन्नल'—

(१)

मुगला रा मतर ढीला पड़ग्या हा। अंगरेज भी हाल पूरी तरै सूं भारत माथै
[illegible]ठी नी हुया हा।

बाड़मेर जिलै रो मीयाणी गांव। बाळोटी वेळा। गांव रा कईक मिनख ऊंघ में
[illegible]रड़ाटा भरै, कईक जागै। वारै मवाड़ मे पड़िया डोकरिया खासी सूं बाथा भरता
[illegible]। ढोरा रै बाड़ा मे हळचळ हुय री ही। गाया रै दूध रो धमको पड़तो हो। घरां
[illegible] घरटियां रा घम्माट हुवै।

अचाणचक गळिया मे दौड़-भाग। ऊंघ मे सूतोड़ा टाबरिया नै लेय नै मा-बाप,
[illegible]छोकरा-छोकरी आप-आप री मुआड भागर कानी भाजै हा। गाया रो दूध, घरटी रो
[illegible]आटो, बाड़ै रा जीव रा जडा ढोर और घरां री खूंटिया मे टंगियोड़ा हारवा सैं उठै-
[illegible]रै पड़िया हा। गांव मे जाणै धाड़ो पड़ग्यो। छोटा-मोटा मिनख अर लुगायां, ताजा
[illegible]नै माढा, बस रोवता-बिलखता टाबरिया नै ताणता भाखर मे बड़ रैया हा।

कोई-कोई पूछै हा—अरे! क्या किया भागो हो? काई भीड़ पड़ी? पण जवाब
[illegible]कुण देवै? आप-आप रो जीव बचावण सारू सगळा भाजै हा।

लोईदार बहूवरी रा टैका पड़ै हा। मारो, झाल लो, भाजण मत दो बैरिया! दस-
[illegible]बीस सराई गाव रै आथूणी बाजी सूं गाव मे बड़ग्या। डाकू, लुटारा, मिनखमार, धाड़
[illegible]रा अवतार सीमाड़ै रा सराई। घरां मे रोईडियोड़ा मिनख पूछै हा। पण सुणै कुण?

गाव रे मिनख भरै हा। लुगाया आप री लाज बचावण वेरै मे कूदता हुवगी
[illegible]वाई, पण आगै कुण आवण दै। हाय राम! हाय-तोबा!

लुटेरा रो मुखियो मस्तान (मस्तो) कद मानो? उण होय हुकम दियो कै लूटो
[illegible]और मारो।

(२)

इणी गाव रै ओक रजपूत घराणै [illegible] [illegible] हुवैहार, [illegible] [illegible] दिया,

पड़ियो हो । उण री वीर और धणी मूठरी लुगाई सोनलदे, जाणे सोनै री पूतळी। रजपूताणी धणीनै छोडनै किया दोड़ जावसी ? दरवाजै माथै नागी तरवार लेयनै 'सगत' ज्यूं ऊभी हुगी ।

मल्लो सोनल रै रूप री बात जाणतो हो । गवर लागी—सोनल घरं है । मल्लै रा पगला थिरग्या । सीधो सोनल रै रावळै पूग्यो । देखै तो कल्लो बेमारी सूं दबियोड़ो ढोलियै माथै सूतो है । कोमलांगी सोनल कमळ जेड़ै हाथां में तरवार काढी हालिया ऊभी है । बोलै न चालै । लुगाई पण रजपूताणी । मल्लो आ बात जाणै हो । मल्लो आगै बधतो हो और सोनल सावधान ऊभी ही, निधड़क । कवळै काळजै री सोनल और काठै दिल रो मल्लो । कैड़ी बरोबरी ?

सोनल नै देखतां ही मल्लो ढीलो पड़ग्यो । बोलियो—सोनल ! सुगन सुभ होता आज मग मांहि, तोरै कारण आयो सुंदरी ! तू म्हारी बात सुण । सोनल तो जाणै मूंडै मे मूग घालिया हुवै । हिरण जेड़ी आखियां पर बाघणी जेड़ो तेज । बोलै न चालै । मल्लो औरूं नेड़ो आयो । सोनल नै छानी देख कल्लै नै मारण सारू कमरै मे बड़ण नै पग उठायो । जितेक तो जाणै बीजळी पळको करै जियां सोनल री तरवार चमकी।

पळ मे परळै जिसी लाय लपकती दीसी । मल्लो घणी मीठी-मीठी बात करै—सोनल ! तूं म्हारै सागै चाल, रोगलै नै छोड दै । घणा लालच दिया । पण रजपूताणी नी डिगी । सिंघणी स्याळां लारै कद चाली ?

मल्लो हिम्मत करनै माय बड़ण लागो जितेक तो सोनल री तरवार रो वार हुयो । रीठ उडी । अबळा कोमळ नारी और दुष्ट भारी रो मुकाबलो । तरवारां रा तटका बाजै । दोनू अेक दूजै नै दबावणो चावै ।

खड़कै सू कल्लै री आंख खुली—लुगाई मर्द सू जबरो मुकाबलो कर रैयी है । राजपूत नै जोश आयो । सिराणै हाथ पड़ियो । तरवार हाथ मे आयी । बेमारी कठै ही परी गयी । लुगाई लड़ै अर वीर पड़ै, अैडा तो पापी रामजी ! मत घड़ै । छानो-मानो कल्लो रण-भोम मे पूगो । मल्लै दीठो, सोनल दीठो पण सोनल लड़ती जावै और विचारै—जे म्हारै धणी इण असुर नै मारियो तो म्हारो मेनत फजूल जासी । धणी ताना देसी मनै रोज । मल्लो कल्लै सामै लपकियो जितेक तो सोनल रो अेक सांगोपाग हाथ मल्लै री गरदन माथै पड़ियो अर माथो कल्लै रै पगा मे । कल्लो घणो राजी हुयो । बहादर वीर 'सगत' सोनल री घणी बडाई करी पण सोनल तो नीची धूण करनै इतरो ज कैयो कै ओ सेंग आप रो परताप है ; आप नीं आवता तो ····

खतरो मिटण रो ढोल वाज्यो । मिनख मावरां सू पाछा घरा मे आया ।

धन है सीमाड़ै री 'सगत' सोनल !

पाटै कुण उतारसी ?

—मनुज राजस्थानी—

(१)

नौ-कूटी मारवाड़ रै माय नागौर रो इलाको, जठै अमरसिंह राठौड़ हुया जिका री वीरता रा गीत अजे गाव-गांव मे गायीजै ।

नागौर सू पनरै-वीस कोस दूर अेक गाव; नाव तरणाऊ । इण गांव नै देखणियां नै दिन माय ही डर लागै । ऊडै खाडै माय वसियोड़ी बस्ती । गांव रै च्यारू मेर बाथां सू बाथ मिलायां भैर ऊभा । तरणाऊ रै सारै अेक नाडी । चौमेर ऊची-ऊची पाळ । पाळ मारै छोटो मिंदर जिको अबै कदै-कदै ही खुलै । पचमुखी बालाजी महाराज मिंदरां माय बैठा तप करै । कदै-ई इण मिंदर री सोभा, बापू वातां करो ; सुणतां-सुणतां नी थाको । जमानो पलट ग्यो, मिनखां नै पेट-सिवाडी सू ही फुरसत कोनी ।

धाड़ैती जद इण मारग सू गुजरता तो दरसण करियां बिना आगै नी बधता । धाड़ो मारनै आवता जद सात बदूकां री सिलामी देवता अर परसाद चढावता । कई बार फौजां रै सागै भिड़त हुयी पण धाड़ैतियां रो कई नी बिगड़ियो ।

(२)

अेक बार तरणाऊ सू पनरै-वीस कोसां रो टोळो मिंदर री बेळा तरणाऊवाड़ आवतो हो । सामै सू गायां रो खापो गाव कानी आवतो हो । धायो विचार नीं आय इण ग्वालर ऊटां रा गवारां बैठां नै धीमा करणै ताई राम सेव सी । गायां रै खुरां सू अण-मिणती रा गोधूळी रा गोट उठता हा । पूरो मारग भिखर नी आवतो हो । पारै रै सारै-सारै अेक बळधां री गाडी ही । उण मे दोय लुगायां बैठी ही । डिबिया रै मारै मैं सारै गिरधारजी अेक जणी बोली—हू तो अबै नवीनी हू, टाबरिया परणाय-परणाय दिया, अबै आप-आप री लावो अर ओढो, सोनकी रै ब्याव मांय लाई म्हारै माई गारो दियो म्हारो तो ध्यान बळी आवनो । उण ज्योंही कई रो माव मोंठो सारै बैठी बळी रोवण लागी ।

मारग रै सारै-सारै, गेनै बाथै, मुड़ै रै महलसो मन्दिरा अर बाबू के नुगवर भैर

फाधै बंदूक्षां सटकायां ऊंटां रा सवार धीमा-धीमा वैवै । उणां मांय सूं अेक नै रोवणै री अवाज सुणीजी । टसूकड़ा जोर-जोर सू ·······

बीचलै सवार दापल करी । सैणां आप-आप रै ऊंटां नै थाम लिया । दोय जणा मदतै ऊंटां सूं हेठै उतरिया अर कनै आयनै गाडी नै थमायी अर बोलिया—थारै काई दर्द है ? दोनूं जणियां थाकी-थाकी हुगी—ही जठै-री-जठै रैगी—बोली न चाली । उणां फेरूं धीरज सूं पूछियो—बोलो, बतावो थारै काई दुख है ? जकी लुगाई रोवै ही वा हिम्मत करनै बोली—म्हारै मंगली रो ब्याव ···· है ······· ; आखातीज नै फेरा है ······· पनरै दिनां पछै, म्हारै कोई भाई नी है, म्हारी छोरी नै पाटै कुण उतारसी ? उण रो मायरो कुण भरसी ? वा मामो नाव लेयनै किण नै बतळासी ?

सवार बोलिया—बस आ ही बात है ! जा, आज सू नू म्हारी बैन और म्हे थारा भाई । तू चिंता ना कर । म्हे पाटै उतारसां म्हारी भाणजी नै । पण इण बात रो भेरो किणी नैं नी चालै, इण रो वचन दे । मंगली री मा बोली—म्हारै गरीबणी रै कुण आवै ? काई ठा, थे कठै रा हो ? कोई जाण नी, पिछाण नी ·······

दोनू जणां उण नै धीरज बधायनै कौल करियो और बोलिया—तूं म्हानै अबार ही टीक दे । मंगली री मा कनै रोळी कठै ही ? फेर सोचनै उणां री कटार लेयनै अगूठो वाढियो अर टीक दिया । दोनू सवारां रा नैण भर आया । सोनकी री मा रा कालजा चिपग्या ।

असवारां ऊंटां नै जेकायनै झट रास खैंची, अेडी मारी, और ऊंट सरणाट हुग्या, पून री चाल, अर घणा आगै नीसरग्या ।

मंगली री मा आंसूड़ा पूछिया अर बळधां नै टोरिया । तरणाऊ आयग्यो । सोनकी री मा सूं कौल करायो—तूं आ बात कैई नै ना कैयी, तूं म्हारी धरम री बैन ·······

गांव आयो । मंगली री मा हरखी-हरखी जायनै मगली रा लाड करिया ।

आज काई बात है मा ! इती राजी क्यूंकर हुय रैयी है—मगली बोली ।

बस बेटी ! म्हारै हिवड़ै रो बोझ उतरग्यो ······· ।

(२)

आखा-तीज रै पांच दिनां पैली मगली रा हाथधान लिरीज्या । रोजीना मगली रै पीठी हुवै । छोरी रो रंग ऊघड़ग्यो । आखातीज रो दिन आयो । जान आयी । तूनड़ तू-तूअ-तूअ ···· तू तू तू ···· तुरही बाजी । आगलै ऊंट मार्थ बोद राजा; लारै लारै जानेती ।

ओटोड़ै आयनै बधाई दी । गोधूळी रा फेरा हा । नायण बनड़ी नै न्हवा-धवायनै पाटै ऊभायी । अद ताई मायरो लेयनै कोई नीं आयो । लोगां में बातां हुवण लागी—पाटै कुण उतारसी ? मगली री मा भगवान नैं अरदास करी—सांवरिया ! म्हारै कौल री लज्या तूं राखी ···· । नैणां सूं आंसूड़ा ढळकै । घूंघटै मे हाथ जोड़ियां बैठी । सुगायां आपसरी में छानै-छानै वातां करी—मा मायनै अर बेटी बारै ······· ।

(४)

ढोला रा ढमका । अगूणो कांकड गूजी । बंदूकां रा धड़का सुणीज्या । मगली री मा चेतो करियो अर उठनें बारै आयी । बावळी-सी बारणै सू नीसरी । बागळ मे ऊटां अर बळधां-गाडियां री भीड़—गाडियां सामानां सूं भरियोड़ी । लोग थाका-थाका रैग्या । अेक-दूजे कानी झांके, बोल नी नीसरै, मूंढै पाटी बधगी । इतरो सामान तो राजा-रजवाडा ही नीं दे सकै । पेटियां मांय तारा-फूल-सलमैं-सितारा सू जडियोडा ओढणा अर लूगडां रा वेस पळपळाट करै । मंगली री मा ताई तारां रै जाळ री चूनड़ी । इसा गाभा तो उण आप री जिंदगानी मांय ना पैरिया ना देखिया । चौखळै मांय चरचा हुवण लागी । गाव मांय छोटै सू मोटै ताई आयनैं मायेरो देखियो । घूघटै मांय सू लुगायां झांके नै वातां करै—हीगळू रै पागां री खाट, ऊचा-ऊचा ढोकणा-धुवारा—कांसी रा वरतण, पीतळ रा न्यारा ········ थाळ मे बाटकै मांय अेक हजार रुपिया चांदी रा; सगां नैं मिलणी रा न्यारा; पीळा पेचा अर पाच-पाच रुपिया जानैतियां ताई ।

लुगायां वधावा गाया । इतै मे दस-पनरै मदनैं ऊटां रा सवार आया । दोय जणां आयनैं मगली नै पाटै उतारी । मगली री मा नै चूनडी ओढायी । गोरा, फूटरा, गोळ चाद-सै मूढां मार्थं काळी मूछा । चूनडी रा फेंटा बाधियां थका । दोनू मामा सूरज-चाद-[illegible] आपणै मे ऊभा । लुगायां घूघटै सू झाकै अर मन-ही-मन सरावै । मगली री मा गुड़ सू मूढो मीठो करायो । दोनू भाया बैन रै माथै हाथ फेरियो । मगली री मा रो हियो भरीज आयो । नैणां सू आंसूडा ढळकण लागा । भाया नै टीको करनै सीख दी । दोनू सवार साथियां सागै विदा हुया । ऊटां रा पैकडा खणकिया । नेवरिया वाजी । धूंधी-धूधी अवाज घणी ताळ ताई सुणीजती रैयी ।

अर मगली रै मायेरै री बात ब्याह् लूट मे पैलगी ।

माथै रो मोल

—गोपाल 'राजस्थानी'—

(१)

पुलिस नै हरेक धानियो-मगानियो भला-भूंडा सबद कंयथो करै, मनचाया हळका और थोछा सबद वापरै, कळक और काळस रो टीको काढता धापै ही कोनी, मनघड़त किस्सा और असली वारदातां मे थाने अैड़ो तानो-बानो वुणणो आम वात है। वात-वात मे लालफीताशाही और पुलिस री ज्यादतियां रो कच्चो चिट्ठो खोलियो जाने चायै उण मे कोई तुक हुवो मत हुवो। जनता रै सामै तो पुलिस री काळी तसवीर ही पेस करीजियोडी हुवै जिकी नै मिलकावणी हरेक रै वस री वात कोनी। जुलम हुवै है, करायीजै है, अर अणजाण मे भी हुय जावै है, आ वात न्यारी है पण दोपारोपण हर वखत वापड़ी पुलिस रै माथै करीजै है।

(२)

कड़ाकै री सरद रात, सूं-सूं करती सीतळ हवा काळजो चीरै, लोग-वाग आप-आप रा घरां में जाय लुकिया है, मूंढो ही बारै काढण री हिम्मत नही हुवै।

धाड़ैतियां सूं हारियोड़े इण इलाकै रो अेक थाणो; पुलिस रा कास्टेबल पौरो दे रैया हा, केईक सीया मरता गूदड़ां री सरण आ चूका हा ; पण इस्पैक्टर राज मेहरा और सहायक पटवर्धन किणी अळूझियोड़ै मामलै री तफ्तीस री योजना वणाय रैया हा। इत्तै में ही घड़ी साढी इग्यारै रो ठोको दियो। मिस्टर मेहरा री मोट घड़ी पर पूगी और अबै दोनूं आप-आप रै कमरां कानी जावणो चावै हा।

इत्तै में ही थाणै रै वारै जोर रै ब्रेक री चीस सुणीजी और वै दोनूं जणा सावचेत हुयर चौकस हुयग्या। बारै भींत री छियां में दो आदमकद मूरतियां निगै आयी; दो लांबा, तगड़ा, मुस्टंड, तेमलां मारियोड़ा, हट्टा-कट्टा जणां वनै आया, दुआ-सलाम करी और फेर अेक जणै गुलाबी रंग रा दो मनीवैग इचाजै थाणैदार रै हाथ मे झलाया और मुळकतै थकै सलाम करियो। अर दूजोड़ो बोलियो—मसाळो आप री भेंट-पूजा थाणैदारजी !

मिनखदीठ पचास-पचास हजार रा नोट; म्हे थांनू थोड़ी मदत लेवण अठै हाजर हुया हा, म्हारो मकसद है बदळो, आपणी आवरू रो; म्हे दोनू भाई हा गोग अर जमीन; म्हे म्हारै काकै रै बेटै रै लोही रा तिरस्या हा, उण नै मारणो चावा, यानी खून ! तफतीश तो थे ही करोला, कारण कै ओ थांरो ही इलाको है पण म्हे लोग इण मामलै मे साफ बचणो चावा, इण कारण म्हां सोचियो कै हालो, आप नै पैला ही खबर दे देवा, अबै म्हारी विगत सुण लो—औ रुपिया थे राखो। इत्ता रुपिया तो थारै साजिंदगी नहीं मूटैला और थे इण तणखा रै भरोसै इत्ती रकम तो जीवण में भी भेळी नी कर सकोला। म्हारी अरज आ है, कान खोल'र सुण लो। काल दिन रा ठीक बारै बजिया म्हे उण चक्कोजाळै मुरेंदरसिंघ सू राड़ कराला; बो रपट देवण नै थां कनै आवैला हीज और थे तफतीश करसो ही, म्हांनै दोषी अथवा जुलमी ठैरायनै हथकड़ी घालनै सैर री आम सड़क सू म्हारो जुलम दरसावता पाळा-पाळा ही ले जायीजो और बंदगानै मे बद कर दीजो, सैर रा ख्यातीणा पैठदार मिनख भी जे जमानत देवण आवै तो भी जमानत मत लीजो, अळमा-मळसा टाळमटोळ करता रैमीजो, मजिस्ट्रेट कठै है कोनी, दो-तीन दिन घुळाय दीजो और काल रात रा म्हांनै काम पूरो करण खातर फगत आप घटै रै खातर छोड़ दीजो, म्हे उण नै मारनै आपोआप ईमानदारी सूं आप री हाजरी मे हाजर हुय जावाला, थारै-म्हारै बिच्चै राम-धरम है; आगै जिकी हुवैला, देखी जावैला, डरजो मती, घबरावण री जरूरत कोनी; की कोनी हुवैला, इत्ती बड़ी रकम सिरफ अधघटै री मोलत खातर दे रैया हा, बोलो मजूर है ? थे नहीं तो थां दोना रो भी परवार समेत खातमो कर दियो जावैला, आपणै टाबरां रै भेळो जे जीवण बितावणो चावो तो म्हारो अैलाण सुण लो और म्हारै कैयै मुजब चालो।

दोनू ही इस्पेक्टरा रै पगा हेठै सू जमी धसकण लागी। सीयाळै री रुत मे भी पसीनो आयग्यो और वै दोनू-ही मूगा बणग्या, सास घुटगी और अेक-दूजै कानी जोवता रैयग्या। ऐनै बूझो तो ऊनै लाई। जे हत्या करण म मिटीभरम कर मैं तो यकारण सरतां, सिर पर खून रो, और गुस्सो जे खुलग्यो तो बदनामी अठै न्यारी, जेट-चाकरा, नौकरी सू छुट्टी और अणटीठी कानूनी पेचीदगिया मे उटजणो पड़ै। खैर ! अबै रैवणो खांसो, भलाई हवारै रो लखण हुवो।

दोनू लम्बार बटै सू बहीर हुग्या। पण लारै थानेदारां रा बुरा हाल हा। [illegible] निरणै कोनी कर सकिया। आ घटना उणा रै मगज मे प्रश्नवाचक निशान बणनै रैयगी।

(२)

दूजै दिन ठीक बारै बजिया रैम-अलैन [illegible] रै [illegible] [illegible] रो [illegible] [illegible] दियो। बो कोठी सू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]

पुलिस रो दरजो मारी ले लियो और वै शेख-अमीन नैं गिरफ्तार करण नैं उणां रै घरां गया। दोनूं जणां रै बेड़ियां और हथकड़ियां घाल दी और गिरै बजार रै मांय सूं उणां नैं पाछा ही पुलिस-स्टेशण लेयग्या। शहर में बातां रो बजार गरम हुग्यो। शहर रै निरा ही मुगदियां जमानत री मनस्या दरसायी। पण पुलिस तो उणां नैं छोडिया ही कोनी। दिन भर दोनूं भाई जेळ मे बैठा रैया और रात रा बारै रै मुजब थानेदार उणां नैं आपपर्टै रै थणा छोड़ दिया। वै बठै सूं सीधा भाग रै खेत गया और फरसी लेयनै'र घात पड़िया। घणां हेठै घास बांध सो जर्कै सूं पगां रा निशाण नीं बणै और आपणै सागी काकै रै बेटै भाई रो कतल कर दियो और पाछा आयनै जेळ मे बैठग्या।

(४)

इदरीस नहरआळै खेत मे अेकलो ही सोवतो। रात भर तो किणी नैं ही ठा कोनी लागियो इण कारण कोई कोनी बोलियो। सवार रा जद उण रा लुगाई-टाबर खेत गया तो इदरीस री लास रा काता-काता करियोड़ा, बिखरियोड़ा देखिया। सैंग जणा धूकण ढूकिया।

सगळै इलाकै मे हाको-सो फूट पड़ियो। पुलिस में रपट करीजी। तपतीश हुयी पण नांव-मात्र री। जनता मे अणूतो भौ फैलग्यो। कैई जणां सूं पूछताछ करीजी, सूबै मे धर-पकड हुयी पण कठैई सुराक कोनी लागी जणै राज-सरकार जनता री जी जमावण नैं ओ मामलो सी० बी० आई० नै सूप दियो।

मजिस्ट्रेट रै आसरणै पर चौथै दिन शेख-अमीन री जमानतां हुयी।

पुलिस-विभाग और सी० बी० आई० अकास-पताळ अेक कर दीना, पण ठा कोनी पड़ी। कतल करणियै इती हुसियारी बरती कै लारै कोई सक-सूबो अथवा प्रमाण कोनी रैवण दियो।

अबै सी० बी० आई० री गुप्त जांच चाली। सी० बी० आई० रा सीनियर अेस० पी० मिस्टर अग्निहोत्री इण नतीजै पर पूगिया कै असली हत्यारा तो शेख-अमीन ही है, इण मामलै में पुलिस रा पजा भी भेळा है, पण सबूत बिना किणी नै ही दोषी अथवा जुलमी ठैंरावणो उणां रैं बस रो रोग कोनी। इण कारण वै जुलम करणिया नैं सजा करावण मे कामयाब कोनी हुया।

दिनचर्या

—भंवरलाल सुथार 'भ्रमर'—

(१)

पसवाड़ो बदळता-बदळता उपपग्यो जणै उण हाथ लाबा करनै पड़यां-पड़यां ही जोर सू आळस मोड़यो'र उण रै मूंडै सू निकळग्यो—हाय राम! फेर सोच्यो, अबै तो उठणो हीज पड़सी ; सात बजणआळी है, अबै जे नी उठयो तो अबार जी-मा री हेलो सुणीजसी—अरे! टंमगर उठीजै वळोजै कोनी ? धोळै दुपारै तांई पड़यो रैवै है, माट माव। और वो भचकै सू उठ'र बिछावणै मायं बैठो हुयग्यो।

थोड़ो'क सोच्यो, लिलाड़ मे सळ पड़ग्या। फेर उठ'र सीधो लोटो भर'र होळैसीक निमटण नै टुरग्यो। बारणै सू बारै निसरण लाग्यो'र का मा री हेलो सुणीज्यो—अरे! चाय तो पी'र जा, मैं थारो काई बिगाड़यो है जिको तू आजकाल मैं सू ही परहो-परहो रैवण लागग्यो। हेलो सुण'र वो ठैरग्यो। फेर थोड़ो मुळक'र बोल्यो—नहीं मा ? इसी कोई बात कोनी, पेट मे थोड़ा मरोड़ा चालै है इण खातर चाय तो हूं पाछो आय'र ही पीसू, तपेली चीरा मे धर दे, गरम रैवं ज्यो।

निमटण जावतो वो सगळै रस्तै आप री स्थिति मायं सोचतो रैयो—अबै तो काम चालणो दोरो है। तू तो कोनी ठई उपपग्यो। नटै-न-नटैई तो काम-धंधो सोधणो ही पड़सी। जीन्सा जे रैवै-बीनै सू बी रुपिया-गईणा दब र दै तो दुकान खोल'र बैठ जावू। दुकान री बात आवता ही वो आ सोचण मे मस्त हुय ग्यो कै दुकान किसी ठीक रैसी। कटपीस री दुकान हुवै तो ठीक रैवै। नहीं, कटपीस सा सू मनिहारी री दुकान ठीक रैसी। अथवा तेल-लूण री पसारी री दुकान ठोक सू। पण औ सोचो तो बैठणो मुसकल होज है क्योंकै इण मे पईसा घोन लागै। इसा रुपिया तो जी-सा कटै सू लासी ? ब्लता रै तो सगळां सू सस्तो सौदो औ होज बैठसी कै कटैई चाय री दुकानड़ी खोल'र बैठ जावां। पण जी-सा कैसी—ओ होज रोट है काई थारो ? अबै इण खातर भणायो-गुणायो ? बी० ए० पास करता ही अबै चोखी-सी नौकरी ही को मिलै। असल मे बी० ए० पास चाय री दुकान करतां तो दुआ लोक ही ठीक बतावै। इण मे थोड़ो-घोट टोटो हुवै तो कठिनता रैवै। होटल मे [illegible] है। चाल-चूक पांच-दस हजार खर्च हुवै अबै काई बात बधै। [illegible] दिन मे

फसग्यो । बिजनिस आपां रै बस री रोग कोनी । जी-सा नै कंई जणा वकार'र देख लियो । उणां तो हाथ झड़का दिया । जद आपां कनै पईसा ही कोनी तो क्यों बे-फालतू इत्ती वातां सोचा । अेक वात तो हुय सकै है कै वंक सूं आपां रुपिया उठा लां । वंक आजकाल काम-धंधे और बिजनिस सारू लोन देवै है नी । पण लोग-वाग कैवै है, वो ही हरेक नै को मिलै नी । घर री प्रापर्टी हुवै जणै मिलै अथवा कोई चोखी पोंचआळी सिफारस हुवै जणै मिल सकै । कंई लोग कैवै है इण में भी घूसखोरी चालै है । आपां कनै तो की चीज कोनी । और जे सिफारस ही हुवै तो नौकरी ही हाथ आ जावै नी ।

(२)

निमट'र पाछो आवतो वो खाथा-खाथा पग उठावै । सोचै—जे मोडो हुयग्यो तो अवार जी-सा लडसी । कैसी कै आसै जिको आगड़ो हीज जावै, कठैई जावो पाछो टैमसर आ जावै किसी पोल पडी है, काम ना कोई धंधो, कोरो वळध हुवै ज्यो दिन भर ईनै-बीनै रळतो फिरै । पाछो घरे आय'र वो हाथ मूंडो धो'र चाय पीवै और आप रै कमरै में जा'र कोई उपन्यास हाथ मे लेवै । रोटी हुवण नै उडीकै । पोथ्यां फिरोळता-फिरोळता वो उपन्यास नै तो छेड़ै नाखै और स्वेट मार्डेन री पोथी 'चिंता छोड़ो सुख से जीओ' कठा लेवै और पढण मे मस्त हुय जावै । उण नै पढतां-पढतां थोड़ी ताळ पछै ध्यान आवै कै स्वेट मार्डेन री अेक और पोथी है नी आपां कनै । और वो पाछी पोथ्यां ईनै-बीनै करण लाग जावै । छेकड़ उण नै अेक दूजी पोथी लाध जावै—'सफलता कैसे प्राप्त करें ?' उठाय'र माथै माथै आखो हुय'र पढण लाग जावै । वो कई बातां पढै ज्यों—बाहादुर बनिये, बिना अेक शत्रु, निर्भीक बनिये आदि । इणी में अेक शीर्षक आवै 'दरम्यू मे मक्खन कैसे हों ?' । उण नै वो बडै ध्यान सूं बांचै पढ़ै बो लिखाई दरम्यू द गुप्तो है पण कठैई सलेक्ट को हुय सक्यो नी । उण वो भेद नी पड्यो और अबखी समझ्यो ।

पोथी पढण मे मस्त हुय जावै । मा रा दो-तीन हेला सुणीजै, पण पोथी नै छोडण रो जी को हुवै नी । [illegible]

[illegible]

वो जीमता-जीमता ही सोचै—जीवणो विरथा है। रोटी ही ढंग री को मिलै नी। ओ ही जे कमावतो हुवू तो चोपड्योड़ी रोटी मिलै, और वा ही दो नोरा काढ़'र। अबार तो कोरो टंक टाळणो है। आ ही मिलै सो है। मनै तो गुड़ नै ही गरम खावै। पण जोर काई करू ? नौकरी तो मिलता-मिलतां मिलसी। तो ई अबै आपां नै कीं-न-की तो काम करणो पड़सी। इयां कितरा दिन पार पड़सी। सोचतो-सोचतो वो दुखी हुय जावै। इतै मे मा दूजो रोटी थाळी मे नाख दी। कणै रोटी खतम हुयगी, ठा ही को पड़ी नी। रोटी थाळी मे पड़ता ही चेतो हुयो। सोच्यो—मना कर दू पण को कर सक्यो नी क्यो कै अबार मना करता ही मा उपदेश झाड़णा सरू कर देसी। कैसी—काम तो हाथ आवतो-सो आसी, रोटी खावणी छोड्यां पार थोड़ई पड़सी।

दूजोड़ी रोटी किया ही करनै गिगळी। और हाथ धो लिया। मा कैंवती ही रैयगी—सळै ले लै, भूखो तो मा उठ। वो झट आ कैय'र ऊभो हुयग्यो कै आज मनै दो-तीन ठौड़ जावणो है। ऊंनावळ में हूं। वेगो उठण रो खास कारण तो ओ है कै वो आजकाल मा रै उपदेशां और गाळयां सू डरै। सोचै कै अबार कैवणो सरू नी कर दे कै अबै तो कोई काम-धंधो देख। तू अेकलो तो है कोनी। लुगाई है, टाबर है। थारै छोटा-छोटा बैन-भाई है। घर मे दस-बारै जीव हा। थारो बाप ही लाई किया ई चलावै है। तनै ही पढ़ता ताई पढ़ा दियो। परणा दियो। अबै कांई सारी ऊमर राख्यो करता ही रैसी ? बूढा तो हुयग्या। तू खुद पढ्यो-लिख्यो है, कठै ही कोई छोटी-सी नौकरी टाळी कर लै। करयां बिना किया चलसी ? बैन परणावणी है, बाप री तो सरधा टूटगी अबै। वै जे कणैई रीसा बळता की कैय देवै तो तू रीस ना करया कर, कैयीज ही जावै। मा अै बाता घणी लाड सू ही कैवै पण उण नै अै बाता सुहावै कोनी। सुणतां-सुणतां कान पकग्या। अबै जदई मा मीठी-मीठी हुय'र बोलणो सरू करै तो डर लागण लाग जावै। हुय सकै उपदेश मीं तो गाळयां ही सरू कर देवै। अबार कैसी—ना तो तू कमावै और ना ही थारी बीनणी काम करनै छाती ठारै। इण सू चोखो हुवै थे थारै न्यारा-जुदा हुय जाओ। कमाओ और खाओ। म्हानै तो थारी कमाई री चाहना कोनी। थापगी ▮ तो थासू। इण वास्तै वो आजकाल मा कनै घणो को बैठै नी। वेगो-सांक पिंड छुडा'र भागण री कोसीस करै।

(२)

बम्बई मे आय'र धायो-धायो मामा-ससा पैरै और खाय-री हाथरी कमाई। उण मे दूधघोड़ा खाय साफ करणआळा काम देख्या और हाईस्कूल रो प्रमाणपत्र, मार्क लिस्ट और बी० अे० री डिगरी लेय'र अेक कागद मे साचवटेबी सू फंट-पोट सगैट ली और आप री सुगाई बाबी टाळी मोट सू देख'र लिमकारो मालतो घर सू बारै निकळग्यो। बारै सू मा रो हेलो सुणीजै—लिखया बारै टैम सू ही आ जाई, आधी रात घाल'र ना आवै। बारै निकळता ही उण रै मूडै सू सब्दा देवा री बस निकळदी।

पैसा बो देवी-देवतावां में बो मानतो हो नी पण आजकाल तो बारा-दिन सगळा देवतावां नै धोकै है । हनुमानजी नै तो दिन-रात ध्यावै । हनुमान-चालीसो ही कंठै कर लियो और जद जदी हूं उण नै उपटूण लाग जावै । बारै बारनै आगै दो बरसां रो उण रो छोरो धूड़ मे बैठो रवै है । आटा मा रैयो है पण बो मना बो कर सकै नी । लाड करतो पावै पण करै कोनी क्योंकै पाड़ोसण आटा आवतां देख'र राजी हुय रैयी है । पाड़ोसण उण नै कैवै—थारो छोरो धूड़ खावै है नी रे ! मना बो करै नी? बो सुण'र मुळकै और दूर जावै ।

घर सूं निकळतां ही पण पुस्तकालय कानी मुड़ जावै । अठै पूग'र बो ताजा अखबार देखै और खास तौर सूं रिक्त स्थान अथवा वेकेंसीआळै कालम नै पढ़ै । सगळा अखबार फिरोळ लै । क्यां उण नै अंगरेजी सूं चिड़ है पण वेकेंसी बो अंगरेजी रै अखबार में भी देख लै । दो-तीन जागां लिखियोड़ो देखै कै अंजटां री जरूरत है । पण अै घणी-सीक जागावां तो दिल्ली मे है । पैलां भी कई दफै अेप्लाई करयो हो और इंटरव्यू भी काल हुयो हो पण दिल्ली जाय'र किरायो लगाय'र कांय सूं देयीजै इंटरव्यू ? खाली गाडीभाड़ै सूं ही तो पार को पड़ै नी । की खावण-पीवण नै और रैवण सारू भी चायीजै । सीधो अेपोइंटमेंट लेटर तो आवै कोनी । इण विज्ञापनां नै फालतू समझ'र बो आगै पढ़ै तो देखै कै कई ट्रेंड अध्यापकां री जरूरत है । अनुभवी अथवा लडकी हुसी उण नै पैल । अेकर तो देख'र राजी हुवै पण आगली लैण पढतां ही माथो झाल'र बैठ जावै । बो ना तो ट्रेंड है और ना ही लडकी है । और जागावां भी दिल्ली, कानपुर और जयपुर मे है । वै भी प्राइवेट स्कूलां मे । अनुभव कठै सूं आवै ? कोई नौकरी देवै जणै अनुभव हुवै !

(४)

उण स्थानीय अखबार मे अेक जागां लिख्योड़ो देख्यो—काम सीखणो चावै उण नवयुवकां री जरूरत है; वेतन योग्यता सारू । पढतां ही उण ठिकाणो लिख लियो । आज इण सूं पकायत ही मिलणो है । अेक-आध ठिकाणो और उतार'र बो सीधो स्थानीय अखबार-आळै रै अठै जाय पूगै । जा'र घंटी बजावै । घंटी सुण'र प्रकाशकजी बारै आया । प्रकाशकजी नै देख'र बो नमस्ते करै और उणां रै लारै ही माय बड़ जावै । उण नै कुरसी माथै बैठण रो इसारो करनै वै पूछै—फरमावो, कियां पधारणो हुयो ? बो कैवै—हूं आप रो विज्ञापन पढ'र आयो █ । नौकरी री जरूरत है । इण साल ही बी० अे० पास करी है । बी० अे० पास सुणतां ही अेकर तो वै बिदकग्या । पण पाछो की सोच'र बोल्या—ठीक ! तो थे काम सीखणो चावो हो ? इत्ता पढ्या-लिख्या हुय'र भी इत्तो छोटो काम कर लेसो ? बो उथळो देवै—मजबूरी है साब ! करणो ही पड़सी । प्रकाशकजी सोचै कै मुरगो ठीक हाथ आय रैयो है, फांसो । मजबूरी रो फायदो उठावणो चायीजै ।

तो काल सू ही आ जाओ आप। दिनुगै-दिनुगै तो आप नै शहर मे अखबार बाटणा पड़ेला। साइकल तो हुवैला ही आप कनै ? क्यो ? और दिन में आप नै हूं मशीन रो काम सिखा देसूं। कंई दिन कपोज करणो सीख लो और मशीन री सफाई किया करीजै, किसा-किसा पार्ट हुवै इण बाता री जाणकारी कर लो। साल-छव महीनां मे हूं आप नै ट्रेंड कर देसूं। थे तो पढ्या लिख्या हो वेगा हीज सीख जासो। काम रो काई छोटो और काई मोटो ? मोत-सा बडा आदमी हुया जिकां बूंट-पालस करी और अखबार वेच्या हा। आप तो धीरै-धीरै पत्रकारिता करणी सीख जाया। तो काल सू पक्की रैयी, क्यो ? हूं काल थांनै उडीकू हु, भलो !

बो मन मे राजी हुयो कै आज कुण ही आ तो कैयो कै काम है। पण खास बात तो रैय ही गी। उण सिमकतै-सिसकतै पूछ्यो—पईसा और कित्ता कांई देसो ? प्रकाशकजी, जिका पत्रकार भी हा, उण रै सामनै देखण लागग्या। बोल्या—पईसा री कांई फिकर है थानै ? कंई दिन काम सीखो ; आपै ही दे देसां। वाजबी हुसी जित्ता दे देसा। रावां को नी।

फेरू हिम्मत करनै बो पूछै—तो ई कित्ता देसो ? बतावो तो सरी।

—अबार तो आप नै तीस रुपिया महीनैं रा दे देसा और काम आप नै मुफत मे सिखासां।

—तीस हीज ? औ तो भोत कमती है।

—कमती किया है ? अखबार तो मुसकल सू पचास घरां मे बाट'र आवणो है। दूजो काम जिको थानै आवै कोनी। बो तो सीखणो जणै पार पड़सी। औ तो थे पढ्या-लिख्या हो जणै हू मशीनां रै हाथ लगावण दू हू और काम सिखाऊ हू। अणपढ़ नै तो हू कांई ही देखाळ कोनी। उण बनै सू अखबार मुफत बटवावतो जणै मशीन रै हाथ लगावण देवतो। थे फिकर मत करो, कंई दिन काम सीख लो, आपै ही थांरा पईसा बधा देसूं।

दोनां मे थोड़ी-भोत खैचा-ताणी हुवै और छेकड़ पचास रुपिया महीनै रै हिसाब सू बात तै हुय जावै। और बो आ बं'र घर्ड सू टुर जावै कै हू काल म्हारै जीं-सा नै पूछ'र आ जासू।

(२)

घर्ड सू निकळतां ही उण रा पग सदा री आदत रै मुताबिक सीधा गोयन्का-दफ्तर वानी मुड़ जावै। रस्तै मे पैना तो पत्रकारजी नै [illegible] कांई [illegible] मोर्चे कै मही मा सू तो पचास ही चोखा। [illegible] तो [illegible] सू ही। [illegible] रै [illegible] मै भी तो इत्ता हीज मिलै है और दलाल दुरै तो की रुपिया कांई [illegible] है। कंई [illegible] सू सोचै और आप मै ठीक ही लागै। बड़ै-बड़ै [illegible] बर्णै है [illegible] काढ़ो बोल है। [illegible]

सकूं हूं । पण उण सारू तो ट्रेनिंग करयोड़ो हुवणो जरूरी है । और प्राइवेट स्कूल मे तो हालत खस्ता हुय जावै । काम ही डोढो और पईसा थोड़ा । ठीक है, काल सूं ओ हीज काम करसू ।

विचारां-ही-विचारा में वो कणै रोजगार-दफ्तर पूग जावै और कणै नोटिस-बोर्ड रै आगै ऊभ जावै, उण नै ठा ही नी पड़ै । नोटिस-बोर्ड रै माथै कँई आर्डर पढै । सदा ही वो आ सोच'र अठै आ जावै कै हुय सकै कोई नवी नौकरी री जागा निकळी हुवै और वो विना अनुभव और विना सिफारस ही ले लियो जावै । और वो सोच ही काई सकै है ?

सहसा उण रो ध्यान आप री डायरी रै उण पानै माथै जावै जिकै में आज रै कामा री लिस्ट है । हा ! काल तो अेक इंटरव्यू है नी । इण वास्तै डिगरी और प्रमाणपत्रा री सही प्रतिलिपिया करावणी भी तो जरूरी है । टाइप कुण रै कनै कराऊं, मोल 'स करा को सकूनी—आ सोच-सोचा'र वो पाछो पुस्तकालय कानी टुर जावै । रस्ते मे वो अेक थियेटर मे बड जावै । किसो खेल लाग्यो है, खेल नही देख सकू तो पोस्टर तो देख ही लू । 'उपकार' फिल्म लाग्योड़ी दीसै है । जे कोई भायलो घेलै तो देखीज जावै नहीं तो मुसकल ही है । पैला पढतो जित्तै तो भळै ही कणैई देखीज जावती । अबै तो खाली पोस्टर देख'र ही जी धपावणो पड़ै । पोस्टर देख'र वो पुस्तकालय आय'र शाति सू बैठ'र हाथ सू टू कापी वणावै । वो सीधो पी० डब्ल्यू० डी० पूगै और आप रै भायलै नै ले जा'र देवै कै अे० ई० अेन० रा दसकत तो करा'र ला दै । और वो फट-सू दसकत करा'र ला देवै । आज तो उण रो ओ काम सोरै-सास वणग्यो । नही तो टू कापी खातर ही कित्तै दफतरा रा चक्कर काटणा पड़ै है । उण रो जी जाणै है ।

(६)

अबै वो कोजी तरै थकग्यो । पीडमा दूखण लागगी । पाळो हीज है नी । अबै सिझ्या पड़गी जाण'र वो थोड़ी ताळ बाग मे जाय'र बैठ जावै । फाटोड़ा गेटर छेड़ै नाख'र दूब माथै आडो हुयग्यो । अेकर तो आंख्यां आडो अंधारो हुग्यो । पछै भोत ही आराम मैसूस हुवै । कँई गोरी-गोरी छोरां लेय'र वो ईनै-बीनै निजर नाखै तो इक्का-दुक्का लोग-लुगाई बाग में घूमता दीखै । वो आं लोगा नै देख'र मूंढो मचकोड़ै और घृणा सूं थूक देवै । अै ही कोई इनसान है ? इणा हीज भ्रष्टाचार फैला राख्यो है । सगळा रिसवतखोर है साळा ! हराम री कमाईवाळां नै ही इसी फैसन सूझै है । अै चावै तो मनै काई म्हारै जिसै कित्तै ही लोगां नै नौकरी लगवा सकै है । पण अै तो आप रै भाई-भतीजा नै ही लगावै है । नौकरी तो अळघी रैयी, आपां नै तो टूमन ही को मिलै नी । इणा मांय सूं हरेक आदमी चावै तो कँय सकै है कै म्हारै छोरी-छोरां नै भणावणो है ।

विचार मुंडाळी लावै । अबै तो समाजवाद आयां बिना देश रो भलो को हुय सकै नी । समाजवाद आसी, अेक दिन पकायत आसी । जणै इणा री हालत खस्ता हुय जासी । जो चावै कै आं सगळां री सपत्ति खोस लूं और इणां नै पीड़ित करूं । पछै अै ही नौकरी सारु दर-दर भटकै जणै इणां नै ठा पड़ै कै म्हे लोग भी इनसान हां । जठै जावै जठै ही पईसो और सिफारस दो ही चीजां चालै है । और आ डिगरी ? साळी की कार री कोनी । इण नै प्राप्त करण सारू चवदै बरसा ताई खप मारी । पण हाथ काई आयो ? आ पढ़ाई काई काम री जिकी रोजी-रोटी रो प्रबंध नी कर सकै ? हूं तो कैवू ▮ अै सै विश्वविद्यालय बंद करनै ताळा ठोक देवणा चायीजै । अथवा इणा मे कारखाना खुल जावणा चायीजै जठै काम-धंधो मिलायो जावै । सोचता-सोचता उण नै रीस आ जावै और रीसा बळतो बो डिगरी नै मसळ नाखै । पण तुरत चेतो हुय जावै कै बवार फाड़ देतो, चवदै बरसा री मैनत सू कमायोडी उण डिगरी नै ।

कालेज रै दिना री याद आ जावै । कित्ती मौज ही कालेज मे ! कैई भायला हा । मोहनसिंघ तो अेयरफोर्स मे सलेक्ट हुयग्यो । बाबूलाल कलेक्टरेट मे बाबू बणग्यो । सै धंधैसर लागग्या । लका मे दाळदी बो ही ज रैयो है । केई आगै पढ रैया है और बी० अेड० री ट्रेनिंग कर रैया है । काई करूं ? जी-सा जे हा भर लेता तो हू ही ट्रेनिंग कर लेवतो । नौकरी री तो गारंटी है , मिलो चायै थर्ड ग्रेड मे ही । काई खराब हो । पण अबार तो हू बक मे चपरासी तक लाग जावणो चावू हू । पण ओ भी किसो सोरो काम है ? इण रै लायक ही को रैयो नी । अठै ही आठवी पास नै लेवै । हू तो बी० अे० पास हू नी । म्हारी योग्यता ही अयोग्यता साबित हुय जावै । आ अबै ठा लागी है । आ सोचता ही बो देश री शासन-प्रणाली और शिक्षा-प्रणाली माथै गभीरता सू सोचण लाग जावै । इण शिक्षा-प्रणाली मे तो परिवर्तन हुवणो निहात जरुरी है । इण रो परिणाम है नक्सलवाद ! जद आदमी नै काम-धंधो ही नही मिलै तो बो और काई करै ? सहसा विचारा नै झटको लागै । अरे हा ! काल अेक इंटरव्यू मे भी तो जावणो है ।

इंटरव्यू ······ । हा ! काई ठा किता ही इंटरव्यू दे दिया हुसी और कित्ता भळै देवणा पड़सी ? वै ही ज लाम्बी कामा पूछोजसी । नाम ···· पिता रो नाम ······· धंधो ? हीयो पूछ्यां है साळा रो । अबै काई बताऊ ? जे धंधो ही करतो हुवतो तो अठै काई धूड़ फाकण नै आवतो ? आगै पूछसी अनुभव ···· ? अनुभव पछै कद करतो ? अनुभव करण रो कोई मौको देवै जणै ! का मा रै पेट मे ही कर लेवतो ? फेर पूछसी ······· हाईस्कूल मे डिवीजन ? ··· अबर किसा परसेंट आया ? ······· पढ़तां थको खेलतो ··· ? अरे ! अे ही कोई सवाल है ? [illegible] डिग्री दइ दिनी । [illegible] पढ़ाई छोड़ दी । ······ आजकाल काम काई करो हो ? हू हू ! फेर काई काम हू ? अै ही देवै कोई इंटरव्यू देऊ और [illegible] हुय-हुय'र कठै बारै करो । इण सगळी बातां रा उत्तर देवतो देवतो थक ग्यो ।

सकूं हूं। पण उण सारू तो ट्रेनिंग करयोड़ी हुवणी जरूरी है। और प्राइवेट स्कूल में तो हालत खस्ता हुय जावै। काम ही ढेरो और पईसा थोड़ा। ठीक है, काल सूं ओ हीज काम करसूं।

विचारां-ही-विचारां में वो कणै रोजगार-दफ्तर पूग जावै और कणै नोटिस-बोर्ड रै आगै ऊभ जावै, उण नै ठा ही नीं पड़ै। नोटिस-बोर्ड रै माथै कंई आर्डर पडै। सदा ही वो आ सोच'र अठै आ जावै कै हुय सकै कोई नवी नौकरी री जागा निकळी हुवै और वो बिना अनुभव और बिना सिफारस ही ले लियो जावै। और वो सोच ही काई सकै है?

सहसा उण रो ध्यान आप री डायरी रै उण पानै माथै जावै जिकै में आज रै कामां री लिस्ट है। हा! काल तो अेक इंटरव्यू है नी। इण वास्तै डिगरी और प्रमाणपत्रां री सही प्रतिलिपियां करावणी भी तो जरूरी है। टाइप कुण रै कनै कराऊ, मोल 'स करा को सकूनी—आ सोच-सोचा'र वो पाछो पुस्तकालय कानी टुर जावै। रस्तै मे वो अेक थियेटर मे बड़ जावै। किसो खेल लाग्यो है, खेल नहीं देख सकू तो पोस्टर तो देख ही लू। 'उपकार' फिल्म लाग्योड़ी दीसै है। जे कोई भायलो चेतै तो देखीज जावै नही तो मुमकल ही है। पैसां पढतो जित्तै तो भळै ही कणैई देखीज जावती। अबै तो खाली पोस्टर देख'र ही औ धपावणो पड़ै। पोस्टर देख'र वो पुस्तकालय आय'र शांति सू बैठ'र हाथ सू टू कापी बणावै। वो सीधो पी० डब्ल्यू० डी० पूगै और आप रै भायलै नै ले जा'र देवै कै अे० ई० अेन० रा दसकत तो करा'र ला दै। और वो फट-सूं दसकत करा'र ला देवै। आज तो उण रो ओ काम सोरै-सास बणग्यो। नही तो टू कापी खातर ही कित्तै दफतरां रा चक्कर काटणा पडै है। उण रो जी जाणै है।

(६)

अबै वो कोझी तरै थकग्यो। पीढ्यां दूखण लागगी। पाळो हीज है नी। अबै सिझ्या पड़गी जाण'र वो थोड़ी ताळ बाग मे जाय'र बैठ जावै। फाटोड़ा स्वेटर खेडूं नाख'र दूब माथै आडो हुयग्यो। अेकर तो आल्या आडो अपारो हुग्यो। पछै भोत ही आराम मैंसूस हुवै। कंई गैरी-गैरी सासां लेय'र वो ईनै-बीनै निजर नाखै तो इक्का-दुक्का लोग-लुगाई बाग मे घूमता दीसै। वो आ लोगां नै देख'र मूंढो मचकोड़ै और घृणा सूं थूक देवै। अै ही कोई इनसान है? इणां हीज भ्रष्टाचार फैला राख्यो है। सगळा रिसवतखोर है साळा! हराम री कमाईआळा नैं हो इत्ती फैसन सूझै है। अै चावै तो मनै काई म्हारै जिसै कित्तै ही लोगां नै नौकरी लगवा सकै है। पण अै तो आप रै भाई-भतीजां नैं ही रखावै है। नौकरी तो अळघी रैयी, आपां नै तो टूशन ही को मिलै नी। इणां मांय सूं हरेक आदमी चावै तो कैय सकै है कै म्हारै छोरी-छोरा नैं भणावणो है।

विचार मुंढाळी सावें। सवें तो समाजवाद आसी बिना देन री मनी कोनी हुय सकै नी। समाजवाद आसी, अेक दिन पक्कायत आसी। अर इणां री हालत सुधरनी पुय जासी। जी चावै कै आं सगळां री संपत्ति खोस लूं और इणां नै बांट दूं। पढ्यै-लिख्यां री आ दुरदसा! पढ्यां पछै ई नौकरी खातर दर-दर भटकै अर इणां नै ठा पड़ै कै म्हे लोग भी इनसान हां। अठै जावै जठै ही पईसो और सिफारस दो ही चीजां चालै है। और आ डिगरी? आ बाळी भी कांम री कोनी। इण नै प्राप्त करण सारू चवदै बरसां ताईं दम मारी। पण हाथ काईं आयो? आ पढाई काईं काम री जिकी रोजी-रोटी रो प्रबंध नीं कर सकै? हूं तो कैवूं हूं अै सै विस्वविद्यालय बंद करनै ताळा ठोक देवणा चाईजै। अथवा इणां में कारखाना खुल जावणा चाईजै जठै काम-धंधो सिखायो जावै। सोचतां-सोचतां इण नै रीस आ जावै और रीसां बळतो वो डिगरी नै संभाळ लावै। पण तुरत चेतो हुय जावै कै अबार फाड देतो, चवदै बरसां री मैनत सूं कमायोड़ी इण डिगरी नै।

कालेज रै दिनां री याद आ जावै। कित्ती मौज ही कालेज में! कई भायला [illegible]। मोहनसिंघ तो अेयरफोर्स में सलेक्ट हुयग्यो। बाबूलाल कलेक्टरेट में बाबू बणग्यो। सै धंधैसर लागग्या। लका में दाळदरी वो हीज रैयो है। कई आगै पढ रैया है और बी० अेड० री ट्रेनिंग कर रैया है। काईं करूं? जी-सा जे हां भर लेता तो हूं ही ट्रेनिंग कर लेवतो। नौकरी री तो गारंटी है; मिलो चाये थर्ड ग्रेड में ही। काईं खराब हो। पण अबार तो हूं बैंक में चपड़ासी तक लाग जावणो चावूं हूं। पण ओ भी किसो मोटो काम है? इण रै लायक ही को रैयो नी। अठै ही आठवीं पास नै लेवै। हूं तो बी० अे० पास हूं नी। घणी योग्यता भी अयोग्यता साबित हुय जावै। आ अबै ठा लागी है। आ सोचतां ही वो देस री सासन-प्रणाली और सिक्षा-प्रणाली माथै गंभीरता सूं सोचण लाग जावै। इण सिक्षा-प्रणाली में तो परिवर्तन हुवणो नितांत जरूरी है। इण रो परिणाम है नक्सलवाद! जद आदमी नै काम-धंधो ही नहीं मिलै तो वो और काईं करै? सहसा विचारां में झटको लागै। अरे हां! काल अेक इंटरव्यू में भी तो जावणो है।

इंटरव्यू ······। हां! काईं ठा किता ही इंटरव्यू दे दिया हुसी और किता भळै देवणा पड़सी? वै ही सागी बातां पूछीजसी। नाम ···· पिता रो नांव ········ धंधो? हीयो धूज्यो है सारा रो। अबै काईं बताऊं? जे धंधो ही करतो हुवतो तो अठै काईं धूड़ खावण नै आवतो? आगै पूछसी अनुभव ··· ? अनुभव पछै कद करतो? अनुभव करण नै कोई मौको देवै जणै! का मा रै पेट में ही कर लेवतो? फेर पूछसी ······ हाईस्कूल में डिवीजन? ···· नंबर कित्ता परसेंट आया? ········ पढणो क्यों छोड़्यो ···· ? अरे! अै ही कोई सवाल है? पोमायो कित्तो पढ लियो। पोसावै जोरो जणै पढाई छोड दी। ········ आजकाल काम काईं करो हो? हूं हूं! कठै काईं करम है? अै ही दैनै-दैनै इंटरव्यू देऊं और निरास हुय-हुया'र घरै जाऊं परो। इण कागदां काळा रा टुकड़ा देखतै-देखतै थकग्यो।

कालवाळै इंटरव्यू मांय कांई नै कंई कहूं ? किण नै कंवू ? कदीगो मैं कंवू ? मन में कांई कर लेसी ? वैं तो उण अफसरां माथ म्हूं ? जिका टैम निकाळणा र कंई री पैसा तो देवणो हो ! पगारदो तो म्हारी आत्मनिर्भरता री ही हो । देणवं कंई देवणो हो नी । तो तो कंव दियो कै म्हारी सिफारस कर दो और कई दियो मैं म्हू पण गड्योड़ा हूं। जिनरासी आदमी बुणीजणा । इणी ही कारण दो मर्द भाग भगोतै हो । मठीलै गोरधन महाराज रै सारै जिगो कम पूछगो हो । उणा रै सार्थ अेम० अेल० सी० साथ मूं ही कंई इणी मिल्यो हो पण नौकरी किणी हाथ आ आवं ? अेस है नेता ! वै जिका हरेक री सिफारस करै है । मायं कै दै हूं कै देणूं और सारं सूं जाणै कै आवो ही को हो नी ।

(७)

इणी तरै सू विचारां रो मकड़िजो चालतो रैयो । इतै में दो टाबर उण रै घर्न हंसता-हसता दौड़ता निकळ जावै । अेक दूजै रै लारै भागतो हुवै । उणा नै वो देखण लाग जातै । विचार थम जावै । इतै मे उण नै गड़ री घड़ी रा टणका सुणीजै । वो गिणण लाग जावै ····अेक·······दो·······तीन ······ च्यार······ पांच······छव····सात और आठ । अरे ! आठ बजगी ? उण नै मा री ओळावण याद आ जावै और वो भचकै सू ऊभो हुय जावै । टुरतो टैम ओ निरणै कर लेवै कै जे कालआळै इंटरव्यू मे सलेक्ट हुयग्यो तो ठीक, नही तो परसू सू उण प्रकाशक रै अठै ही सरू कर देवणो है काम ! शरम किण बात री ? हुसी जिसी देखी जासी । फेर वो सोच लेवै कै पैसा जी-सा नै पूछ लेवणो ही ठीक है । उणा रै जची री बात है । काल तो वो उपन्यास ही जमा करावणो है लाइब्रेरी मे ।

इतै मे अेक साइकलआळो उण रै माथ आ पड़ै अर उण नै ठा पड़ै कै वो के० ई० अेम० रोड मार्थ चाल रैयो है ।

और वो च्यारांकानी देखतो सायो-सायो पग उठावणा सरू कर देवै जिण सूं टैमसर घरै तो पूग जावै ।

अंतरात्मा री अवाज

—मोहन आलोक—

(१)

उरमदीजी कनै सरकार री दियोड़ी कार, कोठी, आदर-मान सो कीं हो पण भगवान उणा नै बल री बेल बधावण वेगो कोई भलै सिरखो नहीं दियो हो। मंत्री ई इण बात री डाढी उचाट रैवती। अेक दिन किणी उण नै आ'र बतायो के शहर मे अेक भोत मोटा महात्माजी आयोड़ा है, थे हुवै-नी-हुवै उणा कनै जा'र आप री रोवणो रोवो तो जरूर की हुय सकै, उणा री अंतरात्मा जिकी बात कै देवै बा जरूर पूरी ऊतरै है, महात्मा बडा पूग्योड़ा है। मंत्री आ मसा मानी और महात्माजी कनै जा'र आप रा दुखड़ा सुणाया।

महात्माजी बोल्या—बेटा! तनै सन्तान री प्राप्ती तो हुय सकै है पण इण री खातर तनै अेक मोटो त्याग करणो पड़सी। उरमजी बापड़ो तो पैला सूं ही घणो ही त्यागी धाप धाप [illegible] हो। बोल्यो—महाराज! थे हुकम करो, हूं मोटै-सूं-मोटो त्याग करण खेई त्यार हूं, थे को तो हूं इण उरमजीआळी कुरसड़ी रै ठोकर मार दूं।

महात्माजी बोल्या—नहीं! इसै त्याग सूं काम चालण रो नहीं है, तनै तो इण सूं ही [illegible] त्याग करणो पड़सी, तनै पाळटी बदळणी पड़सी। म्हारी अंतरात्मा कैवै है कै इण पाळटी रै रह्या सूं थारा सन्तान-सुख रा दह मेट को सकै नी।

मंत्री हस'र बोल्यो—बस महाराज! थे तो मनै डरा ही दियो हो, [illegible] रा काम है, [illegible], थे तो काई त्याग करणो पड़सी? ओ तो ठाडो म्हारै और [illegible] रा काम हुसी। अबै जिका [illegible] है उणा री कुरसी रै नीचै [illegible] [illegible] है, और हूं थे का दास आज काल सूं तो रवम पाळटी [illegible] [illegible] है। आज ही सो [illegible]।

[illegible] और [illegible]—काई नाम उण [illegible] हुयो। उरमजी [illegible] हुयो।

कालआळे इंटरव्यू मातर कंईं नै कंवू काई ? किण नै कंवू ? वरीजी नै कंवू ? पण बै काई कर लेसी ? बै तो उण आदम्यां मांय सूं है जिका टैंम निकळ्यां पछै कंवै कै पैलां तो कैंवणो हो ! फलाणो तो म्हारो जाण-पैंचाण रो ही हो। पैलकै कंव'र देख्यो हो नी। मनै तो कंय दियो कै मैं थारी सिफारस कर दी और वठै जिको मैं सूं कम पढ़पोढ़ा दूजा सिफारसी आदमी चुणीजग्या। इयां ही पासण रो अर्थ भाग भरोसै ही। वठीनै गोरधन महाराज रै लारै किसो कम घूम्यो हो। उणा रै सागै अेम० अेल० अे० साव सूं ही कंईं दफै मिल्यो हो पण नौकरी किसी हाथ आ जावै ? नेता है नेता ! बै किसा हरेक री सिफारस करै है। सामै कै दै हू कै देसूं और लारै सूं जाणै कै आयो ही को हो नी।

(७)

इणी तरै सू विचारां रो भतूळियो चालतो रैयो। इत्तै मे दो टाबर उण रै कनै हंसता-हसता दौडता निकळ जावै। अेक दूजै रै लारै भागतो हुवै। उणा नै वो देखण लाग जावै। विचार थम जावै। इत्तै मे उण नै गढ री घड़ी रा टणका सुणीजै। बो गिणण लाग जावै ····अेक ·······दो·······तीन ··· · च्यार·······पांच·······छव····सात और आठ। अरे ! आठ वजगी ? उण नै मा री ओळाबण याद आ जावै और वो भचकै सू ऊभो हुय जावै। टुरतो टैंम ओ निसचै कर लेवै कै जे कालआळे इंटरव्यू मे सलेक्ट हुयग्यो तो ठीक, नही तो परसू सू उण प्रकाशक रै अठै ही सरू कर देवणो है काम ! सरम किण बात री ? हुसी जिसी देखी जासी। फेर वो सोच लेवै कै पैलां जी-सा नै पूछ लेवणो ही ठीक है। उणा रै जची री बात है। काल तो वो उपन्यास ही जमा करावणो है लाइब्रेरी मे।

इत्तै में अेक साइकलआळो उण रै माथ आ पड़ै जणै उण नै ठा पड़ै कै बो के० ई० अेम० रोड मार्थ चाल रैयो है।

और बो च्यारांतानी देखतो सायो-सायो पग उठावणा सरू कर देवै जिण सूं टैंमसर घरै तो पूग जावै।

अंतरात्मा री अवाज

—मोहन आलोक—

(१)

उपमत्रीजी कनै सरकार री दियोडी कार, कोठी, आदर-मान सो की हो पण [illegible]पान उणा नै बस री बेल बधावण वेगो कोई भलो सिरखो नहीं दियो हो। मंत्री [illegible] इण वात री डाढी उचाट रैवतो। अेक दिन किणी उण नै आ'र बतायो कै शहर [illegible] अेक भोत मोटा महात्माजी आयोडा है, थे हुवै-नी-हुवै उणा कनै जा'र आप रो [illegible]पणो रोवो तो जरूर की हुय सकै, उणा री अंतरात्मा जिकी बात कै देवै [illegible] जरूर पूरी उतरै है; महात्मा बडा पूग्योडा है। मत्री आ सला मानी और महात्माजी [illegible]नै जा'र आप रा सूपणा सुणया।

महात्माजी बोल्या—बेटा! तनै प्रधान री प्रापती तो हुय सकै है पण इण री [illegible]तर तनै अेक मोटो त्याग करणो पडसी। उपमत्री बापडो तो पैलां सू ही घणो ही [illegible]गी धारू धार रैयोडो हो। बोल्यो—महाराज! थे हुकम करो, [illegible] मोटै-सू-मोटो [illegible]ग करण वेई त्यार हू, थे कै तो हू इण उपमत्रीआळी कुरसडी रै ठोकर मार दू।

महात्माजी बोल्या—नहीं! इणरै त्याग सू काम चालण रो नहीं है, तनै लाडी! इण सू ही मोटो त्याग करणो पडसी, तनै पाळटी बदळणी पडसी। म्हारी अंतरात्मा [illegible]वै है कै इण पाळटी रै म्हा सू थारा सनान-सुख रा [illegible] मेट को लागै नी।

मंत्री हस'र बोल्यो—बस महाराज! थे तो मनै डरा ही दियो हो, जिको-नीक तो बात है. मै तो जाण्यो, थे टा कांई त्याग करणो पडसी? आ तो उटको म्हारै और फायदै रो काम हुसी। अठै जिका परधानजी मुख्यमत्री है उणा री कुरसी रै नीचै अेक टांग म्हारी लगायोडी है, और हू जे का टांग काढ [illegible] सू [illegible] नवम पाळटी आळा तो मनै उपमत्री सू पूरो मत्री बणावण [illegible] त्यार बैठा है। काल ही मो कुरसीआळा नै त्यागपत्र लिख'र दू हू।

महात्माजी इण बात सू डाढा राजी हुया। और उणा इण नै—कांई [illegible] [illegible]—'आश्वासन' दियो कै [illegible] [illegible] [illegible] कल्याण-[illegible] हुसी। [illegible] महात्माजी नै [illegible] दिन [illegible] आदर दे'र बहीर हुया।

घालमाळै इंटरव्यू लारै बैई नै बंद कांई ? किण नै बंद ? कठांई नै बंद ? पण थे कांई कर लेसो ? थे तो उण आदम्यां मांय सूं ? जिका टैम [illegible] पछै बैई नै पैसा नो फैंकतो हो ! [illegible] नी ह्वती आत्मनिवास री ही हो । पैसा बंद र देतो ही गी । मने तो फैंक दियो कै थे थारी सिफारस कर दो और कई जिको थे सूं कम पड़पोड़ा हुवा मिनखाणो आदमी कुर्सीयां । इयां ही पागल दो अठै भाग भरोसै हीं । वदीनी गोरधन महाराज रै लारै किणो काम पूग्यो हो । उणा रै मायं अेम० अेम० साथ सूं ही कांई दर्छ मिल्यो हो पण नौकरी किणी हाथ आ जावै ? नेता है नेता ! बै किणा हरेक री सिफारस करै है । माथै कै दं हूं कै देखूं और सारै सूं जाणै कै मायो ही फो हो नी ।

(७)

इणी तरै सूं विचारां री मकड़ियो चालतो रैयो । इतै में दो टायर उण रै कनै हंसता-हंसता दौड़ता निकळ जावै । अेक दूजै रै लारै भागतो हुवै । उणां नैं यो देखण लाग जावै । विचार थम जावै । इतै मे उण नै गड़ री घड़ी रा टणका सुणीजै । बो गिणण लाग जावै ····अेक········दो·······तीन ··· ·· च्यार·······पांच·······छव···सात और आठ । अरे ! आठ बजगी ? उण नैं मा री ओळायण याद आ जावै और वो भचकै सूं ऊभो हुय जावै । दूसरी टैम औ निसचै कर लेवै कै जे कालआळै इंटरव्यू में सलेक्ट हुयग्यो तो ठीक, नही तो परसू सू उण प्रकाशक रै अठै ही सरू कर देवणो है काम ! सरम किण बात री ? हुसी किसी देरी आसी । फेर वो सोच लेवै कै पैला जी-सा नैं पूछ लेवणो ही ठीक है । उणां रै जची री बात है । काल तो वो उपन्यास ही जमा करावणो है लाइब्रेरी में ।

इतै में अेक साइकलआळो उण रै साथ आ पड़ै जणै उण नैं ठा पड़ै कै बो के० ई० अेम० रोड़ मायं चाल्न रैयो है ।

और वो च्यारांसानी देखतो सायो-सायो पग उठावणा सरू कर देवै जिण सूं टैमसर घरैं तो पूग जावै ।

हूं साहित्यकार हूं

—दीनानाथ खत्री—

हूं साहित्यकार हूं। वडो नामी साहित्यकार। म्हारी घणी पूछ है। पण आ पूछणा के साहित्य मे म्हारी कितीक पूछ है। आज तो हूं साहित्यकार हूं। न साहित्यकार।

छोटै-थका घर रा लोग बुद्धू समझता। स्कूल मे मास्टर भणण में माठो बताव्ता। घर सूं बारै भायेला-भायेला दब्बू समझता। पण आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

जियां-तियां दसवी पास करी। घरवाळा जाण्यो बेटै हमैं रुपियां सूं जेबां भरी। काम-धंधै वास्तै फिरग्यो गळी-गळी। पण किस्मत रासळी। नौकरी कठैई नही मिळी। पण आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

हूं हुयो बडो निरास। रहण लाग्यो घणो उदास। माईना छोडी कमाई री आस। जीवण मे अधारो ही अधारो, कठैई नही दीस्यो उजास। पण आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

अेक भिडाई गिटपिट। दफ्तर मे बाबू बणग्यो सटपट। कंटग्यो सारो दिन कलम रगड़। रोज अफसरण नै चपरासी सूं लगड़। तणखा मे पड़ै कोनी पार। घर में दरिद्रनारायण रो प्रसार। करण लाग्यो सोच-विचार। जिंदगी री किया चालै गार। बीवर कमाऊ नाम। अर घर मे भी आवै दाम। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

अेक दिन घरैसा साफ घर मे हुयगी राड़। सोचण लाग्यो कांई कर जुगाड़। अेक भायेलै आगै जिकर चलायो। उण झट अेक उपाव बतायो। तनै दुखी बातां सूं कांई सरोकार। तूं तो बण जा साहित्यकार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

मैं कैयो आ किया हुय सकै सरासर। म्हारै आखर साहित्य रो काळो आखर भैंस बराबर। उण मनै गुर-मतर दीनो। मैं उण रो पालण कर लीनो। बात रो सायब्ड़ो सार। मैं बणग्यो झट साहित्यकार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

(२)

जद उपमंत्री जा'र आप रै मुख्यमंत्री नै आप री पाळटी पळटण रो समंचार दियो तो मुख्यमंत्री देख्यो जरूर उपमंत्री सूं पूरो मंत्री बणण नै सुद्धावतो हुवैला। सो उणा उण नै पूरो मंत्री बणा देवण रो वायदो करयो। उपमंत्री नै इण वात सूं झाळी झूंमळ आयी। बोल्यो—थे कांई जाणो हो कै हूं उपमंत्री सूं मंत्री बणण रै लालच में पाळटी बदळू हूं ? हूं तो बस, कांई बात है, फकत पाळटी ही बदळणी है। ओ लो म्हारो अस्तीफो।

अस्तीफो दे'र उपमंत्री चालतो हुयो।

मुख्यमंत्री देख्यो—आ तो आछी हुयी ! जाणूंजाण हो, सोच्यो—जरूर खिलाफ पाळटीआळां रो भरचोड़ो है।

आखर उण राज री सी० आई० डी० आळां नै बुला'र हुकम दियो कै से काम छोड़'र पैली इण वात री ठा पाड़ो कै फलाणो उपमंत्री पाळटी बदळणी क्यों चावै है। हुकम लै'र सी० आई० डी० आळां उपमंत्री रो लारो लियो और करतां-करावतां असल वात रो बेरो पाड लियो। सी० आई० डी० आळा इण वात रो वैम भी मुख्यमंत्री रै बैठायो कै ओ आदमी जरूर खिलाफ पाळटीआळा सूं मिल्योड़ो है।

अबै सा ! गोली कै री और महुवा कै रा ! मुख्यमंत्री उणी रात महात्माजी सूं क्यों जा'र मिलै नी।

उपमंत्री ■ बापड़ो बाबा रो बध्योड़ो हो। दूजै दिन जा'र महाराज सूं नमो नारायण करी कै मैं अस्तीफो दे दियो है और खिलाफ पाळटीआळा सूं वातचीत भी कर ली है। महात्माजी था सुण'र थोड़ी ताळ तो समाधि में बैठ्या हा ज्यों-रा-ज्यों बैठ्या रैया। फेर होळै-सी बोल्या—उपमंत्रीजी ! इणी पगा जा'र अस्तीफो पाछो ले लो। अबै थानै पाळटी बदळण री जरूरत कोनी रैयी। म्हारी अंतरात्मा री अवाज है कै थानै इणी पाळटी में रैवण सूं 'तावळी ही पुत्र-रतन री प्रापती हुवणआळी है। ■ करै नारायण पाळटी बदळण सूं थे निपूता रै जावो।

पण महाराज ! परसूं ही तो थे मनै संतान री प्रापती वेई पाळटी बदळण रो कैयो हो—उपमंत्री हाकै-हाकै हुयर बूझ्यो।

आ म्हारी अंतरात्मा री अवाज है—महात्माजी गंभीर हुयर बोल्या।

'पण महाराज ! आप री अंतरात्मा में आ चाणचक बदळावट क्यों ?'

म्हारी अंतरात्मा पाळटी बदळ ली है—महाराज बियांई गंभीरता सूं उथळो दियो।

अणोर् अणीयान्, महतो महीयान्

—नरोत्तमदास स्वामी—

(१)

उपनिषद मे परमात्मा नैं अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् कह्यो है— सू भी छोटो और बडै सू भी बडो । पण परमात्मा ही नहीं, जिण जगत मे परम[illegible] व्याप्त है वो जगत भी, परमात्माआळो दाई ही अणु सू भी अणु और महान सू महान है ।

(२)

पैनी आपां अणु सू भी अणु नैं देखां—

जगत रा सगळा पदार्थ तत्वां सू बणियोड़ा है । इण तत्वां री गिणती [illegible] तत्व रै सब सू छोटै भाग नैं परमाणु कैवै । परमाणु अणु बणावै और अणुवां सू [illegible] रा सगळा पदार्थ बणै । अणु कई भांत रा हुवै—कई अणु अेक ही तत्व रै अेक परमाणु सू बणै, कई अेक ही तत्व रै अनेक परमाणुवां सू बणै, और कई अनेक तत्वां रा परमाणुवां सू बणै । [illegible] [illegible] परमाणुवां रै मेळ सू बणै ।

[illegible]

[illegible] आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

म्हारो साहित्यिक [illegible] कविता और [illegible] सू [illegible]। [illegible] आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

बड़ा नेता और मंत्री री बातें। म्हारै भाऊ सू ही मनैं सिखावै। हूं उणा रै बणैं आऊं। बरोबर री कुरसी पाऊं। उणा री बडाई में कविता सुणाऊं। म्हारो उल्लू सीधो कर आऊं। वै मानै म्हारो अहसान। हूं मानूं अै मूर्ख महान। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

पै बधू टक्कारो गाऊं? पै भी बन आवो साहित्यकार। ओ काम ओखो कोनी। मर्म पईसा री भी मोड कोनी। कुणको हूं बताऊं थानैं। पे रागजो इण नै ध्यानैं। थोड़ी-सी तिकड़म री दरकार। पोलो पालै ओ पांगार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

मौलिकता जरूरी कोनी। छंदां रो भी बंधन कोनी। प्रयोगवाद रो सहारो लेवू। जिया चावूं वयू लिख देवूं। व्याकरण सू मनैं कांई सरोकार? आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

लेख-कवितावां री झड़ी लगा दू। कहाण्यां और उपन्यास भी छपा दू। रेखा-चित्रां री कमी न राखू। पण थासू तो कूड़ नहीं भाखू। आ सगळी पोलै री टट्टी। मांय सू है पोल-पट्टी। इसी बातां रो कांई विचार। राम लगासी बेड़ो पार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

अेक लैण अठै सू लेणी। अेक लैण बठै सू लेणी। अेक भाव कठै सूं लेणो। दूजो जचै जठै सू लेणो। अनुवाद री तो कांई कैणी। नहीं वर्णं तो नकल कर लेणी। इण विध करणी रचना त्यार। जद बाजोला साहित्यकार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

अजूं अधूरो है साहित्यकार। दूजै गुणां रो भी हुवणो भंडार। पुराणै साहित्यकारां रो प्रतिशत थोड़ो। उणा रो आज चालै नहीं घोड़ो। उणा सू मेळ राखणो थोड़ो। घणो-घणो अटकाणो रोड़ो। उणां सू सदा रैणो हुशियार। नहीं तो डूबोला मझधार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

संस्थावां रो सिरजण करणो। गुटबाजी रो गैणो पैरणो। मूढै पर प्रशंसा करणी। चमचागिरी जोर री करणी। अै हथकंडा जे अपणावो। पूरा साहित्यकार बण जावो। थांरी हुवै जय-जयकार। आज हूं साहित्यकार हूं। नामी साहित्यकार।

अणोर् अणीयान्, महतो महीयान्

—नरोत्तमदास स्वामी—

(१)

उपनिषद मे परमात्मा नै अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् कैयो है—अणु मू भी छोटो और बडै मू भी बडो। पण परमात्मा ही नहीं, जिण जगत में परमात्मा व्याप्त है वो जगत भी, परमात्माअळो दाईं ही अणु मू भी अणु और महान मू भी महान है।

(२)

पैली आपां अणु मू भी अणु नै लेवां—

जगत रा सगळा पदार्थ तत्त्वां मू बणियोड़ा है। इण तत्त्वां री संख्या ९२ है। तत्त्व रै सब मू छोटै भाग नै परमाणु कैवै। परमाणु अणु बणावै और अणुवां मू [illegible] रा सगळा पदार्थ बणै। अणु कई भांत रा हुवै—कई अणु अेक ही तत्त्व रै अेक परमाणु मू बणै, कई अेक ही तत्त्व रै अनेक परमाणुवां मू बणै, और कई अनेक तत्त्वां रै परमाणुवां मू बणै। आॅक्सीजन रो अणु अेक मू अधिक है [illegible] कैवी। पाणी रो अणु अेक परमाणु मू बणियोड़ो हुवै, आॅक्सीजन रो अणु आॅक्सीजन रै दो परमाणुवां मू बणै और पाणी रो अणु आॅक्सीजन रै अेक तथा हाइड्रोजन रै दो परमाणुवां रै मेळ मू बणै।

पैली विज्ञान रै विद्वानां री मान्यता ही कै परमाणु रा और भाग नहीं हुय सकै वो अवरणनीय और अविभाज्य है। [illegible] परमाणु रै [illegible] [illegible] नहीं रैयो है। [illegible] परमाणु [illegible] [illegible] इलेक्ट्रान, प्रोटोन और न्यूट्रोन। परमाणु रै [illegible] [illegible] हुवै [illegible]

प्रोटोन और न्यूट्रोन रैवै। परमाणु [illegible] जिसो हुवै। [illegible] रै चारूं कांनी इलैक्ट्रोन न्यारी-न्यारी कक्षावां में सूरज रा ग्रहां री जियां चक्कर काटै [illegible]। न्यारा-न्यारा इलैक्ट्रोन न्यारी-न्यारी कक्षावां रा [illegible] रो [illegible] करै। [illegible] रै [illegible] री तुलना में [illegible] है जिसो परमाणु में भी [illegible] आसरै खाली हुवै।

परमाणु रै [illegible] और मूळ कणां रै अलावा और घणा मूळ कण हुवै। इणां री गिणती १०० रै भी ऊपर पूग चुकी है। इणां रै न्यूट्रोन बाबत में कुछ कम नहीं है क्योंकै नाभिक सूं न्यारो हुयां ही ओ प्रोटोन और इलैक्ट्रोन में विभक्त हु जावै।

सब सूं हळको परमाणु हाइड्रोजन तत्व रो हुवै। उण में अेक प्रोटोन और अेक इलैक्ट्रोन हुवै। उण रो परमाणविक भार लगभग १ हुवै। हेलियम तत्व रै परमाणु में नाभिक में दो प्रोटोन और दो न्यूट्रोन हुवै तथा दो इलैक्ट्रोन उण री परकमा करै। हेलियम रो परमाणु-भार ४ हुवै अर्थात् हाइड्रोजन सूं चोईं चोगणो। सोनैं तत्व में नाभिक में ७९ प्रोटोन और ११८ न्यूट्रोन हुवै जिण रै बार बार ७९ इलैक्ट्रोन ६ कक्षावां में परकमा करै। सब सूं भारी तत्व यूरेनियम है जिण रै परमाणु में ९२ प्रोटोन और १४६ न्यूट्रोन हुवै और ९२ इलैक्ट्रोन ७ कक्षावां में परकमा करै। उण रो भार २३८ हुवै। परमाणु रो लगभग सगळो भार नाभिक में रैवै क्योंकै इलैक्ट्रोन री तो भार नांव-मात्र रो ही हुवै। प्रोटोन इलैक्ट्रोन सूं १८३६ गुणो भारी हुवै।

न्यारा-न्यारा तत्वां में अै ही मूळ कण हुवै पण हरेक तत्व में प्रोटोन, न्यूट्रोन और इलैक्ट्रोन री सख्या में फरक हुवै। परमाणु में जित्ता प्रोटोन हुवै उत्ता ही इलैक्ट्रोन हुवै। इलैक्ट्रोनां में ऋण बीजळी रो आवेश हुवै, प्रोटोनां में धन बीजळी रो और न्यूट्रोन आवेश-रहित हुवै।

अणु, परमाणु अर मूळ-कण कित्ता छोटा हुवै? पाणी रै अेक अणु रो अर्धव्यास 10^{-7} अर्थात् १/१०००००० सेंटीमीटर अर्थात् अेक सेंटीमीटर रो दस लाखवों भाग हुवै। दस लाख अणुवां नै कनै-कनै अेक कतार में राखीजै तो इण कतार री लंबाई मामूली कागद री जाडाई रै बराबर हुवै। पृथ्वी रा सगळा समदरां, नदियां और सरोवरां में जित्ता गिलास पाणी है उणां सूं दो हजार गुणा अणु अेक गिलास भर पाणी में हुवै। पाणी री अेक बूंद नैं पृथ्वी जित्ती वडी कर देवो तो पाणी रै अेक अणु रो आकार अेक छोटी गेंद रै बराबर हुसी।

अेक परमाणु रो अर्धव्यास मोटै तौर सूं 10^{-8} अर्थात् १/१०,००,००,००० सेंटीमीटर अर्थात् अेक सेंटीमीटर रै कोई दस करोड़वें भाग रै बराबर हुवै[1] (अेक इंच रै

---

१ उवारोफ् और चैपमैन : डिक्शनरी आफ सायन्स, पृष्ठ २५

कोई २५ करोड़में भाग रै बराबर)। इण रो मतलब ओ हुयो कै पचीस करोड़ परमाणुआं नै बराबर-बराबर अेक कतार मे जमायनै राखा तो कतार री लबाई कोई दो इंच हुसी। 'पेनी' नामक अंगरेजी सिक्कै री जाडाई कोई दस करोड परमाणुआं री कतार रै बराबर हुवै। पाणी हाइड्रोजन अर आक्सीजन रै मेळ सूं वणै। आधी छटाक पाणी मे आक्सीजन रा कोई $१०^{२४}$ अर्थात् अेक करोड शंख परमाणु हुवै।

प्रोटोन रो अर्धव्यास $१०^{-१३}$ अर्थात् १/१०,००,००,००,००,००० सेंटीमीटर हुवै अर्थात् अेक सेंटीमीटर रो दस नखवों भाग[१]। इलेक्ट्रोन तो और-ही छोटो हुवै। उण रो अर्धव्यास कोई $१०^{-१३}$ अर्थात् १,००,००,००,००,००,००० सेंटीमीटर हुवै अर्थात् अेक सेंटीमीटर रो अेक नीलवों भाग[२]। बराबर-बराबर जमाया सूं अेक इंच मे कोई सवा नील इलेक्ट्रान हुवै।

(२) महतो महीयान्

पृथ्वी नै मही, भूमि और अनन्ता कैवै कारण आ बडी है, लाबी-चौडी है, घणी विशाळ है और उण रो अंत निजर मे नही आवै। पण पृथ्वी, मही, भूमि और अनन्ता कंयीजणवाळी इण पृथ्वी री आकाश में दीखणवाळा ज्योतिपिण्डां मे कोई गिणती नहीं है।

रात रै बगत आकाश मे अणगिणती ज्योतिपिण्ड चमकता दीसै। अै ज्योतिपिण्ड दो भांत रा है—(१) नक्षत्र और (२) ग्रह और उपग्रह। नक्षत्र घणा बडा हुवै और आप री चमक सूं चमकै। ग्रह और उपग्रह छोटा हुवै और अै नक्षत्र री चमक सूं चमकै। सूरज, ध्रुव, रोहिणी, व्याध, अगस्त्य और ज्येष्ठा नक्षत्र है और बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगळ, बृहस्पति, शनि, अरुण (युरेनस), वरुण और यम (प्लूटो) अै नव ग्रह है जिका सूरज रै चारूंकर परकमा करता रैवै। चन्द्रमा उपग्रह है। ओ पृथ्वी रै चारूंकर परकमा करै। ग्रहा मे बुध सगळा सूं छोटो और बृहस्पत सगळा सूं बडो है। बुध रो व्यास कोई तीन हजार मील है और बृहस्पत रो कोई छयासी हजार मील। सूरज पृथ्वी सूं १३ लाख गुणो बडो है; पृथ्वी जिसा-जिसा १३ लाख पिंड हुवै जद कठैई जायनै सूरज रै बराबर हुवै।

सूरज ग्रहां सूं घणो बडो है पण घणा सारा नक्षत्र सूरज सूं भी बडा है। सूरज अेक औसत बडाई रो नक्षत्र है, बडा नक्षत्रा मे उण री कोई गिणती कोनी। सूरज सूं बडा नक्षत्रां मे कई-अेक इण भांत है—

---

२ उहारोफ् और पौपर्मन : फिजिक्स आफ् लायफ पृष्ठ २५
१ —सागी—

प्रोटोन और न्यूट्रोन हुवै । परमाणु [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है [illegible] परमाणु ।

परमाणु के ऊपर [illegible] और मूळ [illegible]
[illegible] री संख्या १०० सूं भी ऊपर [illegible]
नहीं है क्योंकै [illegible] हुवै है ।
[illegible] ।

सब सूं हळको परमाणु हाइड्रोजन [illegible]
हाइड्रोजन हुवै । उण रो परमाणविक भार
नाभिक में दो प्रोटोन और दो न्यूट्रोन हुवै
हेलियम रो परमाणु-भार ४ हुवै अर्थात् [illegible]
नाभिक में ७९ प्रोटोन और ११८ न्यूट्रोन
[illegible] रो परमाणु करै । सब सूं भारी [illegible]
प्रोटोन और १४६ न्यूट्रोन हुवै और ९२ [illegible]
रो भार २३८ हुवै । परमाणु रो लगभग [illegible]
में रो भार नाभ-नाभ रो ही हुवै । प्रोटोन

न्यारा-न्यारा तत्वां में यै ही मूळ कण
इलेक्ट्रोन री संख्या में फरक हुवै । परमाणु
हुवै । इलेक्ट्रोना में ऋण बीजळी रो आवे-
न्यूट्रोन आवेश-रहित हुवै ।

अणु, परमाणु अर मूळ-कण कित्ता
$१०^{-८}$ अर्थात् १/१००००००० सेंटीमीटर
भाग हुवै । दस लाख अणुवा नै कनै-कनै
लबाई मामूली कागद री जाडाई रै बरा-
और सरोवरां में जित्ता गिलास पाणी है
पाणी में हुवै । पाणी री अेक बूंद नै पृथ्वी
रो आकार अेक छोटी गेंद रै बरावर हुवै

अेक परमाणु रो अर्धव्यास मोटै तौर
मीटर अर्थात् अेक सेंटीमीटर रै कोई द

१ उवारोफ् और चैंपमैन : डिक्शनरी

देवयानी (अॅंड्रोमीडा) री नीहारिका आकाशगंगा रै निकट री नीहारिका है। उठै सूं अठै ताई आवतां रोसणी नै कोई १५ लाख बरस लागै।[७] उण सूं आगै दूरी ताई करोड़ूं नीहारिकावां आकाश में विखरियोड़ी है।

संसार री सब सूं बडी दूरबीण अमरीका में पलोमार पहाडी पर है। लागियोड़ै कांच रो व्यास दो सौ इंच है। आ मिनख री आंख री तुलना में तीन लाख गुणी रोसणी बटोरै। उण सूं दो अरब प्रकाश-वर्ष ताई री दूरी पर री नीहारिकावां देखी जा सकै है। इण नीहारिकावां रै आगै काई है इण बात जाणण रो मौजूदा हालत में कोई साधन नहीं है।

कित्तो विशाल है आपणो ओ ब्रह्माण्ड! और कुण जाणै इसा-इसा विशाल कित्त ब्रह्माण्ड है इण जगत् में, इण संसार में, परमात्मा री इण सृष्टि में!

इण भांत आपां देखियो कै ओ जगत् भी, आप रै नियामक परमात्मावाळी दाई ही, अेक ही साथै अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् दोनूं है।

---

७ साखी, पृष्ठ ७७

नक्षत्र—	सूरज सूं कित्तो बडो	नक्षत्र	सूरज सूं कित्तो बडो
प्याग—	६ गुणो	भरन	६ हजार गुणो
अभिजित्—	१२ गुणो	स्वाति	२७ हजार गुणो
मघा—	१२५ गुणो	रोहिणी	५८ हजार गुणो
ब्रह्महृदय—	१७२८ गुणो	आर्द्रा	२ करोड गुणो
		ज्येष्ठा	११ करोड़ गुणो[4]

नक्षत्रां मे ज्येष्ठा, आप रै नांव रै मुजब, सब सूं बडो है। यो अेकलो ही ११ करोड़ सूरजां रै बरोबर है। यो इत्तो बडो है कै मंगळ ग्रह री भ्रमण-कक्षा समेत सगळो सौर-परिवार उण मे सोरो-सोरो समाय जावै।

सूरज पृथ्वी सूं कोई ९३० लाख मील दूर है। रोसणी अेक सेकंड मे १,८६,००० अेक लाख छयासी हजार मील (कोई तीन लाख किलोमीटर) चालै। सूरज री रोसणी नै पृथ्वी ताई आवता कोई ९ मिनट लागै। पण पृथ्वी और सूरज रै जिको नेड़लो-ई-नेड़लो नक्षत्र है (प्रोक्जीमा सेंटारी) उण री रोसणी नै अठै आवतां च्यार बरसां सू ऊपर वखत लागै। इण रो मतलब ओ हुयो कै ओ नक्षत्र अठै सू कोई अढाई नील मील दूर है। सूरज और इण नक्षत्र रै बीच मे दूजो कोई नक्षत्र कोनी। बीच री सगळी जागा खाली जागा (अवकाश अथवा पोल मात्र) है। सगळा नक्षत्र इणी भांत अेक दूजै सू घणा-घणा आघा है।

अेक-दूजै सूं अड़बा-खड़बा मीलां री दूरी माथै बिखरियोड़ा अै सगळा नक्षत्र आकाशगंगा नामक विश्व रै मांयनै है। आकाशगंगा में कोई अेक खरब नक्षत्र है।[5] आकाशगंगा रो विस्तार घणो मोटो है। उण रै अेक सिरै सूं दूजै सिरै ताई पूगण मे रोसणी नै कोई अेक लाख प्रकाश-वर्ष लागै[6] (अेक प्रकाश-वर्ष कोई ५८ खड़ब मीलां रै बराबर हुवै)।

इण ब्रह्माण्ड में आकाश-गंगा जिसा-जिसा लाखांलाख विश्व है। अै विश्व नीहारिकावां रै रूप मे दीसै। इण विश्वां रै बीच मे अपार खाली जागा अर्थात् अवकाश या आकाश है। अवकाश जाणै अेक विशाल समदर है। समदर मे जियां अनेक टापू तैरता रैवै जियांई अवकाश मे अै विश्व जाणै तैरता रैवै।

---

४ गोलीकेरे : जर्नी थ्रू दि युनीवर्स

५ गोल्डन बुक आफ् अॅस्ट्रानामी, पृष्ठ ७४

६ सागी, पृष्ठ ७४

देवयानी (अॅड्रोमेडा) री नीहारिका आकाशगंगा रै निकट री है, उणे सूं अठै तांई आवतां रोसनी नै कोई १५ लाख वरस लागै [illegible] दूरी तांई करोड़ नीहारिकावां आकास में बिखरियोड़ी है।

संसार री सब सूं बडी दूरबीन अमरीका में पलोमार पहाड़ी [illegible] लागियोड़ी काच रो व्यास दो सौ इंच है। वा मिनख री आंख री [illegible] तीन लाख गुणी रोसणी बटोरै। उण सूं दो अरब प्रकाश-वर्ष तांई री दूरी नीहारिकावां देखी जा सकै है। इन नीहारिकावां रै आगै कांई है इण जाणण रो मौजूदा हालत में कोई साधन नहीं है।

कित्तो विसाल है आपणो ओ ब्रह्माण्ड! और कुण जाणै इसा-इसा [illegible] ब्रह्माण्ड है इण जगत् में, इण संसार में, परमात्मा री इण सृष्टि में!

इण भांत आपां देखियो कै ओ जगत् भी, आप रै नियामक परमात्मावाळी नाई ही, अेक ही साथै अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् दोनूं है।



७ साखी, पृष्ठ ७३

संपादकीय

जागती जोत रो दूजो अंक आप रै हाथां में सूंपतां म्हांनै घणो हरख है। राजस्थानी साहित्यकारां अर विद्वानां पत्रिका रै पैलं अंक री सामग्री अर साज-सज्जा नै पसंद करी, जिण सूं संपादकां रो उत्साह बध्यो। इसो अनुभव हुवै कै राजस्थानी भाषा रा कवि-कोविद जागती जोत नै आप री निजी पत्रिका मानी और आप रो स्वाभाविक स्नेह परगट करयो।

इण बात पर जागती जोत रा संपादक अर प्रकाशक हर्ष अर कृतज्ञता परगट करै है कै अेक अंक में ही पत्रिका इत्ती लोकप्रियता पावण में समर्थ हुयी अर कवि-लेखकां भी इण नै भरपूर सहयोग देवणो सरू कर दियो। फेर भी निवेदन करणो जरूरी लखावै है कै आप सगळा इण बात सूं तो सहमत हुसो कै आपणी आ पत्रिका भारत री किणी दूजी भाषा री पत्रिका सूं हळकी नी उतरै, इण वास्तै पत्रिका रो स्तर और भी ऊंचो बणावणो पड़सी। पत्रिका रै स्तर रा निर्माता आप सगळा साहित्यकार ही हो।

जिण भांत कोई चितेरो चित्राम मांडै, मिटावै अर फेर मांडै; वो मिटावतो अर मांडतो ही जावै जद ताईं उण नै पूरो संतोष नी हुवै; उणी भांत लेखक रो धरम भी किणी कळाकार सूं न्यारो कोनी। कळाकार ज्यूं लेखक भी चित्राम मांडै पण समाज रै सामै उण नै जदेई मेलै कै जद खुद लेखक री निजर में उण री कृति में कठैई कोई कसर, कोई भूल-चूक, नी रैवै। जे लेखक रै इण धरम नै सगळा साहित्यकार आप रै आगै राखै तो लेखक अर उण री कृति नै ऊंची उठण में मोकळी मदद मिलै।

जागती जोत रै सामनै दो मारग है—अेक तो ओ कै आवै जिसी ही रचनावां छाप दी जावै अर दूजो ओ कै प्राप्त रचनावां नै सावळ परखनै छापै। लेखक तो जदेई राजी रैवै जद बां री अेजयोड़ी हरेक रचना ज्यूं-री-ज्यूं ही छपै, अणछपी नी पड़ी रैवै अथवा पाछी नी आवै। पण पत्रिका रै स्तर नै ऊंचो उठावण सारू लेखकां री धीरज अर उदारता री संपादकां नै घणी जरूरत रैवै।

अब राजस्थानी लेखकां रै सामै अनेक पुरस्कार-प्रतियोगितावां भी है। अै पुरस्कार राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, केन्द्रीय साहित्य अकादमी अर कई राजस्थानी-प्रेमी धनी-मानी सज्जनां री तरफ सूं हर साल दिया जावै। इसी स्थिति में राजस्थानी

संगम-समाचार

मिगसर वदी १, सं० २०२९ वि०, दिनांक २१ नवंबर, १९७२ नै संस्था री सूं राजस्थानी महाकवि राठौड़ पृथ्वीराजजी री बरस-गांठ ज्ञानोदय पारीक सार्वज समिति भवन, बीकानेर, मे राजस्थानी-साहित्य-वाचस्पति श्री मुरळीधरजी व्यास अध्यक्षता मे मनायीजी जिण रो संयोजन श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी करयो।

इण अवसर माथै प्रमुख वक्तावां मे सर्वश्री सत्यनारायणजी पारीक, डा मनोहरजी शर्मा, अक्षयलालजी माथुर, मोहनलालजी पुरोहित, प्रह्लादजी व्यास, दीनानाथजी खत्री अर दीनदयालजी ओझा हा।

संस्था री तरफ सूं श्री सूर्यमल्ल-पुरस्कार, राजस्थानी-गद्य-पुरस्कार, राजस्थानी-पद्य-पुरस्कार अर राजस्थानी-अेकांकी-पुरस्कार, इण च्यार पुरस्कारां सारू पोथ्यां आमंत्रित करीजी जिण मे पैलै तीन पुरस्कारां सारू लेखकां अर री पोथ्यां भेजी है। संस्था री तरफ सूं छपण सारू भी मोकळी पोथ्यां आयी है। प्रकाशन-योजना सारू भी घणी सारी किताबां पूगी है। इण बाबत विचार निर्णय संगीजणी उणां री जाणकारी आगलै अंक मे दिरीजसी।

संगम री कार्यकारिणी सभा री दूजी बैठक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै सभापतित्व मे दिनांक २४-१२-७२ नै हुयी। इण सभा मे डा० मनोहरजी शर्मा अस्वस्थता रै कारण मानद सचिव रै पद सूं त्याग-पत्र उपस्थित करयो, जिको स्वीकार करीजी और निर्णय लियो गयो कै संगम रा सभापति तीन नांवां रो पैनल अकादमी रै अध्यक्ष नै भेजै और अध्यक्ष तीनां नांवां मांय सूं अेक मानद मंत्री रो निर्वाचन करै। सभापति द्वारा पैनल भेजणै कारण सूं पैलां ही अध्यक्ष मानद मंत्री नै नियुक्त कर दी जिण सूं संगम-सभापति श्री नरोत्तमदासजी स्वामी भी आप रो त्याग-पत्र अकादमी-अध्यक्ष नै उदयपुर भेज दियो। अकादमी-अध्यक्ष स्वामीजी रो त्याग-पत्र मंजूर स्वीकार करनै अस्थायी तौर पर श्री सुमन मंत्री कार्यकारिणी रो संयोजक बणी है।

[illegible] रै [illegible] सूं [illegible] अर [illegible] रै [illegible] राजस्थानी [illegible] हुई [illegible] अनुसार [illegible] हुवै।

इण काम रा कोई [illegible] राजस्थानी लेखक [illegible] जीवन-धारा सूं [illegible] परिचित है अर [illegible] रै अनुभव नै [illegible] रै कारण [illegible] राजस्थानी [illegible] भारी जिम्मेदारी है, जिण सूं [illegible] पूरी [illegible] है। आ जिम्मेदारी है राजस्थानी भाषा नै संवैधानिक मान्यता दिरावण री। [illegible] राजस्थानी [illegible] लायक बराबर [illegible] सूं [illegible] में [illegible] तो [illegible] आधुनिक राजस्थानी साहित्य [illegible] जासी—राजस्थानी भाषा नै ऐसी ही संवैधानिक मान्यता मिल जासी। फेर इणा [illegible] तैयार है, किण इण काम में [illegible] री [illegible] कर सकै ?

इण कारण आपणो [illegible] सूं आ [illegible] है कै [illegible] सूं [illegible] रचनावां त्यार करणी—आपणो [illegible] रै लारै, [illegible] रै [illegible] रै लारै अर राजस्थान-भारती रै लारै ! बस, इती ही बात।

[illegible]

संगम-समाचार

मिगसर वदी १, सं० २०२६ वि०, दिनाक २१ नवबर, १९७२ नै संस्था री तरफ सू राजस्थानी महाकवि राठोड पृथ्वीराजजी री बरस-गाठ ज्ञानोदय पारीक सार्वजनिक समिति भवन, बीकानेर, मे राजस्थानी-साहित्य-वाचस्पति श्री मुरळीधरजी व्यास री अध्यक्षता मे मनायीजी जिण रो सयोजन श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी करयो।

इण अवसर माथै प्रमुख वक्तावां मे सर्वश्री सत्यनारायणजी पारीक, डा० मनोहरजी शर्मा, अबालालजी माथुर, मोहनलालजी पुरोहित, प्रह्लादजी व्यास, दीनानाथजी खत्री अर दीनदयालजी ओझा हा।

सस्था री तरफ सू श्री सूर्यमल्ल-पुरस्कार, राजस्थानी-गद्य-पुरस्कार, राजस्थानी-पद्य-पुरस्कार अर राजस्थानी-अेकरूपता-पुरस्कार, कुल च्यार पुरस्कारां सारू पोथ्या आमन्त्रित करीजी जिण में पैलै तीन पुरस्कारां सारू लेखकां आप री पोथ्यां भेजी है। सस्था री तरफ सू छपण लागर भी मोकळी पोथ्यां आयी है। प्रकाशन-सायता खातर भी घणी सारी किताबां पूगी है। इण बाबत विगत निर्णय लेयीजसी उणा री जाणकारी आगलै अक मे दिरीजसी।

संगम री कार्यकारिणी सभा री दूजी बैठक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै सभापतित्व मे दिनाक २४-१२-७२ नै हुयी। इण सभा मे डा० मनोहरजी शर्मा अस्वस्थता रै कारण मानद सचिव रै पद सू त्याग-पत्र उपस्थित करयो, जिको स्वीकार करीज्यो और निर्णय लियो गयो कै संगम रा सभापति तीन नांवां रो पैनल अकादमी रै अध्यक्ष नै भेजै और अध्यक्ष तीनां नांवां मांय सू एक नै मानद मंत्री रो निर्वाचन करै। सभापति द्वारा पैनल भेज्यै आदेश सू दैणी हो अध्यक्ष मानद मंत्री री नियुक्ति कर दी जिण सू संगम-सभापति श्री नरोत्तमदासजी स्वामी भी आप रो त्याग-पत्र अकादमी-अध्यक्ष नै उदयपुर भेज दियो। अकादमी-अध्यक्ष स्वामीजी रो त्याग-पत्र मंजूर स्वीकार करनै अस्थायी तौर पर नीचै मुजब नवी कार्यकारिणी री घोषणा करी है -

लेखकां नै स्वयं री [illegible] सूं [illegible] अर [illegible] रचनावां [illegible] [illegible] आधुनिक [illegible] राजस्थानी [illegible] [illegible] अनुसार [illegible] [illegible] हुवै ।

इण बात में कोई संदेह कोनी कै राजस्थानी लेखक आज री [illegible] भारत सूं [illegible] परिचित है अर [illegible] रै अनुभव नै वो राजस्थान [illegible] भाषा [illegible] राजस्थानी लेखकां माथै [illegible] भारी जिम्मेदारी है, जिण सूं [illegible] दूजी भाषावां [illegible] जिम्मेदारी है राजस्थानी भाषा नै सर्वांगीण [illegible] । वे राजस्थानी [illegible] बराबर [illegible] दूजी भाषावां नै [illegible] आधुनिक राजस्थानी साहित्य [illegible]—राजस्थानी भाषा नै वैसी ही सर्वांगीण मान्यता मिल जासी । [illegible] जिम्मेदार है, जिका इण काम में [illegible] कर सकै ?

इण कारण आपणो जोश [illegible] री [illegible] करै है कै आपी सूं आपरी रचनावां त्यार करणी—आपणो जोश रै खातर, मा रै [illegible] रै खातर अर राजस्थान-भारती रै खातर ! बस, इती हीज बात ।

म० रा०

संगम-समाचार

मिगसर बदी १, सं० २०२९ वि०, दिनांक २१ नवंबर, १९७२ में संस्था री तरफ सूं राजस्थानी महाकवि राठोड़ पृथ्वीराजजी री बरस-गांठ श्रमोदय पारीक सार्वजनिक समिति भवन, बीकानेर, में राजस्थानी-साहित्य-वाचस्पति श्री मुरळीधरजी व्यास री अध्यक्षता में मनायीजी जिण रो संयोजन श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी कर्‌यो।

इण अवसर माथै प्रमुख वक्तावां में सर्वश्री सत्यनारायणजी पारीक, डा० मनोहरजी शर्मा, अन्नालालजी माथुर, मोहनलालजी पुरोहित, प्रह्लादजी व्यास, दीनानाथजी खत्री अर दीनदयालजी ओझा हा।

संस्था री तरफ सूं श्री सूर्यमल्ल-पुरस्कार, राजस्थानी-गद्य-पुरस्कार, राजस्थानी-पद्य-पुरस्कार अर राजस्थानी-अेकरूपता-पुरस्कार, कुल च्यार पुरस्कारां सारू पोथ्यां आमंत्रित करीजी जिण में पैलै तीन पुरस्कारां सारू लेखकां आप री पोथ्यां भेजी है। संस्था री तरफ सूं इण सारू भी मोकळी पोथ्यां आयी है। प्रकाशन-सामग्री सारू भी घणी सारी पिनाकां पूगी है। इण बाबत लियो निर्णय सैंधीजसी उणां री जाणकारी आगलै अंक में दिरीजसी।

संगम री कार्यकारिणी सभा री दूजी बैठक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै सभापतित्व में दिनांक २४-१२-७२ नै हुयी। इण सभा में डा० मनोहरजी शर्मा अस्वस्थता रै कारण मानद सचिव रै पद सूं त्याग-पत्र उपस्थित कर्‌यो, जिको स्वीकार करीज्यो और निर्णय लियो गयो कै संगम रा सभापति तीन नांवां रो पैनल अकादमी रै अध्यक्ष नै भेजै और अध्यक्ष तीनां नांवां माय सूं अेक मानद मंत्री रो निर्वाचन करै। सभापति द्वारा पैनल भेजणै कारण सूं पैली ही अध्यक्ष मानद मंत्री री नियुक्ति कर दी जिण सूं संगम-सभापति श्री नरोत्तमदासजी स्वामी भी आप रो त्याग-पत्र अकादमी-अध्यक्ष नै उदयपुर भेज दियो। अकादमी-अध्यक्ष स्वामीजी रो त्याग-पत्र स्वीकार कर अस्थायी तौर पर नीचै मुजब नवी कार्यकारिणी रो गठन कर्‌यो है.

१. श्री मुरलीधरजी व्यास, सभापति
२. डा० मनोहरजी शर्मा, सदस्य
३. डा० नारायणसिंहजी भाटी, सदस्य
४. श्री रावतजी सारस्वत, सदस्य
५. श्री वेदव्यासजी, सदस्य
६. श्री विजयदानजी देथा, सदस्य
७. श्री सीतारामजी महर्षि, सदस्य
८. श्री रामनाथजी व्यास 'परिकर', सदस्य
९. श्री नृसिंहजी राजपुरोहित, सदस्य
१०. श्री मूलचंदजी प्राणेश, सदस्य
११. श्रीमती लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत, सदस्य
१२. श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी, मानद सचिव
१३. अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन सदस्य)
१४. निदेशक, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन सदस्य)

संगम सू प्रकाशित सहयोग रो नूंतो—प्रकाशन संख्या २ रै जवाब में संगम-कार्यालय में इसा मोकळा कागद आया, अर आवै है, जिणां में संगम रै कामां में पूरो सहयोग देवण रा वचन है । ओ अेक घणो शुभ लक्षण है, अर राजस्थानी साहित्यकारां रो इणी तरै जे संगम नै सहयोग मिलतो रैयो तो संगम निश्चित रूप सू अेक घणी उपयोगी संस्था बणनै साहित्यकारां अर साहित्य री स्थायी सेवा कर सकसी ।

'जागती जोत' रै लेखकां सू निवेदन

१ 'जागती जोत' मे छापण-सारू अप्रकाशित, मौलिक अर स्तरीय रचना ही भेजी जावै।

२. रचना कागद रै अेक कानी हासियो छोड'र साफ-साफ आखरां मे लिखियोडी, अथवा साफ टंकित, हुणी चायीजै।

३. छापण-सारू स्वीकृत रचना री सूचना लेखक नै रचना-प्राप्ति सू अेक महीनै रै भीतर दे दी जासी।

४. अस्वीकृत रचना पाछी मंगावणी हुवै तो उचित डाक-टिकट लगायोड़ो लिफाफो रचना रै साथै आवणो चायीजै।

५. स्वीकृत रचना कद और किसै अंक मे छपसी ओ बतावणो संभव नहीं हुसी। इण विषय मे आयोड़ा पत्रां रो उत्तर नहीं दियो जासी। स्वीकृत रचना रै प्रकाशन खातर ताकीद न करी जावै।

६. पत्रिका मे छपियोडी हरेक रचना सार्थ पारिश्रमिक देवण री व्यवस्था है। रचना रै प्रकाशित हुयां पाछै अेक महीनै रै भीतर पारिश्रमिक री राशि लेखक नै भेज दी जासी।

७. छपण नै दी जावणवाळी रचना मे संशोधन करण रो अधिकार संपादक-मंडळ नै हुसी।

८. पत्रिका री संपादन-संबधी सगळो पत्र-व्यवहार संपादक, जागती जोत, रै ठिकाणै सू और व्यवस्था-सम्बन्धी सगळो पत्र-व्यवहार मानद मंत्री रै ठिकाणै सू, करयो जावै।

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर (राजस्थान)

१. श्री मुरलीधरजी व्यास, सभापति
२. डा० मनोहरजी शर्मा, सदस्य
३. डा० नारायणसिंहजी भाटी, सदस्य
४. श्री रावतजी सारस्वत, सदस्य
५. श्री वेदव्यासजी, सदस्य
६. श्री विजयदानजी देथा, सदस्य
७. श्री सीतारामजी महर्षि, सदस्य
८. श्री रामनाथजी व्यास 'परिकर', सदस्य
९. श्री नृसिंहजी राजपुरोहित, सदस्य
१०. श्री मूलचन्दजी प्राणेश, सदस्य
११. श्रीमती लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत, सदस्य
१२. श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी, मानद सचिव
१३. अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन सदस्य)
१४. निदेशक, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन सदस्य)

संगम सूं प्रकाशित सहयोग री सूची—प्रकाशन संख्या २ रै जवाब में संगम-कार्यालय में घणा मोकळा कागद आया, अर आवै है, जिणां में संगम रै कामां में पूरो सहयोग देवण रा वचन है। औ अेक घणो शुभ लक्षण है, अर राजस्थानी साहित्यकारां री इणी तरै जे संगम नै सहयोग मिलतो रैयो तो संगम निश्चित रूप सूं अेक घणी उपयोगी संस्था बणनै साहित्यकारां अर साहित्य री स्थायी सेवा कर सकसी।

'जागती जोत' रै लेखकां सूं निवेदन

१. 'जागती जोत' मे छापण-सारू अप्रकाशित, मौलिक अर स्तरीय रचनावां भेजी जावै।

२. रचना कागद रै अेक कानी हासियो छोड'र साफ-साफ आखरां में लिख्योड़ी अथवा साफ टंकित, हुणी चायीजै।

३. छापण-सारू स्वीकृत रचना री सूचना लेखक नै रचना-प्राप्ति सूं अेक महीनै रै भीतर दे दी जासी।

४. अस्वीकृत रचना पाछी मंगावणी हुवै तो उचित डाक-टिकट लगायोड़ो लिफाफो रचना रै साथै आवणो चायीजै।

५. स्वीकृत रचना कद और किसै अंक मे छपसी ओ बतावणो सम्भव नहीं हुसी। इण विषय मे आयोड़ा पत्रां रो उत्तर नहीं दियो जासी। स्वीकृत रचना रै प्रकाशन खातर तागीद न करी जावै।

६. पत्रिका मे छपियोड़ी हरेक रचना माथै पारिश्रमिक देवण री व्यवस्था है। रचना रै प्रकाशित हुयां पाछै अेक महीनै रै भीतर पारिश्रमिक री राशि लेखक नै भेज दी जासी।

७. छपण नै दी जावणवाळी रचना मे संशोधन करण रो अधिकार संपादक-मंडळ नै हुसी।

८. पत्रिका रो संपादन-संबंधी सगळो पत्र-व्यवहार संपादक, जागती जोत, रै ठिकाणै सूं और व्यवस्था-सम्बन्धी सगळो पत्र-व्यवहार सचिव अकादमी रै ठिकाणै सूं, करणो चाहै।

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर (राजस्थान)

'जागती जोत' रै स्वामित्व रो विवरण अर दूजी सूचनावां

१. प्रकाशन रो स्थान	—बीकानेर
२. प्रकाशन री अवधि	—तिमाही
३. मुद्रक रो नांव	—रवि अग्रवाळ
राष्ट्रीयता	—भारतीय
पतो	—माडर्न प्रिन्टर्स ११५३, बाग मुजफ्फरखान आगरा-२
४. प्रकाशक रो नांव	—श्रीलाल न० जोशी
राष्ट्रीयता	—भारतीय
पतो	—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर
५. संपादक रो नांव	—नरोत्तमदास स्वामी
राष्ट्रीयता	—भारतीय
पतो	—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर
६. उण व्यक्तियां रा नांव अर पता जिका समाचार-पत्र रा अधिकारी है	—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

हूं, श्रीलाल न० जोशी, घोषित करूं हूं कै ऊपर लिखियोड़ो विवरण म्हारी जाणकारी अर विश्वास मुजब खरो है।

श्रीलाल न० जोशी

मानद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी),

बीकानेर

'जागती जोत' रै स्वामित्व रो विवरण अर दूजी सूचनावां

१. प्रकाशन रो ठिकाण —बीकानेर
२. प्रकाशन री अवधि —तिमाही
३. मुद्रक रो नांव —हरि अग्रवाल
   राष्ट्रीयता —भारतीय
   पतो —मार्डन प्रिंटर्स
   ११२१, बाग मुजफ्फरखान
   आगरा-२
४. प्रकाशक रो नांव —श्रीलाल न० जोशी
   राष्ट्रीयता —भारतीय
   पतो —राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर
५. संपादक रो नांव —नरोत्तमदास स्वामी
   राष्ट्रीयता —भारतीय
   पतो —राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर
६. उण व्यक्तियां रा नाव अर पता जिका समाचार-पत्र रा अधिकारी है —राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

हूं, श्रीलाल न० जोशी, घोषित करूं हूं कै ऊपर लिखियोड़ो विवरण म्हारी जाणकारी अर विश्वास मुजब खरो है।

श्रीलाल न० जोशी
मानद मंत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी),
बीकानेर